BNHN202DET

हिन्दी निबंध

एन ई पी - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

बी. ए. (हिन्दी)

(द्वितीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

ISBN	:	978-81-990167-8-1
Course	:	Hindi Nibandh
First Edition	:	September 2025
Copies	:	600
Price	:	125/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE MANUU

Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU

Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE MANUU

Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU

Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU

Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU
Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश		कुलपति	5
संदेश		निदेशक	6
भूमिका		पाठ्यक्रम–समन्वयक	7
क्रं. सं	**इकाई**	**लेखक**	**पृ. सं**
1	निबंध : एक परिचय	डॉ. वाजदा इशरत	9
2	हिन्दी निबंध का इतिहास	डॉ. एल. अनिल	23
3	बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' की विवेचना	डॉ. अनिता पाटिल	33
4	रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' की विवेचना	डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव	56
5	हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' की विवेचना	श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह	74
6	रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध 'भारत की सांस्कृतिक एकता' की विवेचना	डॉ. शेख़ अफ़रोज़ फ़ातेमा शेख़ हबीब	88
7	हरिशंकर परसाई के निबंध 'पगडंडियों का जमाना' की विवेचना	प्रो. गोपाल शर्मा	100
8	विद्यानिवास मिश्र के निबंध 'अस्ति की पुकार हिमालय' की विवेचना	डॉ. अबु होरैरा	110
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		123

लेखक विवरण

डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू, हैदराबाद	Dr. Wajada Ishrat Assistant Professor (Hindi) CDOE, MANUU
डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू, हैदराबाद	Dr. L. Anil Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.) CDOE, MANUU
डॉ. अनिता पाटिल, सहायक प्रोफेसर, गुरु नानक महाविद्यालय, वेलाचेरी, चेन्नै	Dr. Anita Patil, Asst. Professor, Guru Nanak Mahavidyalay, Velachery, Chennai
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव, सहायक आचार्य, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ	Dr. Baljeet Kumar Srivastav, Asst. Professor, Babasaheb Bhimrao central University, Lucknow
श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह, सहायक शिक्षक, यूएचएस भतखोरिया गर्ल्स, बनियाडीह, गोड्डा(झारखंड)	Sri. Dharmendra Kumar Singh, Asst. Teacher, UHS Bhatkhoriya Girls, Baniyadih, Godda (Jharkhand)
डॉ. शेख़ अफ़रोज़ फ़ातेमा शेख़ हबीब, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, औरंगाबाद	Dr. Shaikh Afaroz Fatima Shaikh Habib, Associate Professor and Head, Dept. Of Hindi, Maulana Azad College of Arts, Science and Commerce, Aurangabad
प्रो. गोपाल शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	Dr. Gopal Sharma, Former Professor and Head, Dept. of Linguistics, Araba Minch University Ethiopia
डॉ. अबु होरैरा, अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, मानू, हैदराबाद	Dr. Abu Horairah, Guest Faculty, Dept.of Hindi, MANUU

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) **:** श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

"हिन्दी निबंध" शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित चारवर्षीय बीए के द्वितीय सत्र (डीएसई) के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में बदली हुई सामाजिक और तकनीकी परिस्थितियों के कारण कविता से आगे बढ़कर गद्य का चहुँमुखी विकास हुआ। यहाँ तक कि आधुनिक काल को प्रायः 'गद्य काल' की संज्ञा भी दी जाती है। इस काल में गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ, जिनमें निबंध को प्रथम और प्रमुख विधा कहा जा सकता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम स्नातक स्तर के छात्रों को हिन्दी गद्य की इसी विधा का परिचय देने के लिए तैयार किया गया है। इस हेतु आरंभ की दो इकाइयों में निबंध के सैद्धांतिक और शास्त्रीय स्वरूप का परिचय देने के साथ-साथ हिन्दी साहित्य में निबंध के उद्भव और विकास पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके बाद की 6 इकाइयों में से प्रत्येक में एक-एक प्रमुख निबंधकार के एक-एक विशिष्ट निबंध का अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। इन निबंधकारों में बालकृष्ण भट्ट, रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिशंकर परसाई और विद्यानिवास मिश्र सम्मिलित हैं। इस पाठ सामग्री का अध्ययन करने से छात्रों को हिन्दी निबंध के विकास के साथ-साथ उसकी विविधता का भी बोध हो सकेगा। क्योंकि इसमें विचारात्मक, आलोचनात्मक, ललित, सांस्कृतिक, व्यंग्यात्मक और व्यक्तिव्यंजक सभी प्रकार के निबंधों को सम्मिलित किया गया है।

यह सारी सामग्री इस दृष्टि से प्रस्तुत की गई है कि छात्रों के बौद्धिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षितिज का तो विस्तार हो ही, उनकी सौंदर्य दृष्टि का भी विकास सुनिश्चित हो। इससे छात्रों के नैतिक और भाषिक स्तर का भी विकास हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करते समय सरलता, सहजता, बोधगम्यता, प्रामाणिकता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कार्य में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथकारों और संपादकों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

पाठ्यक्रम समन्वयक

हिन्दी निबंध

इकाई 1: निबंध : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ: निबंध: एक परिचय

1.3.1 निबंध: अर्थ और परिभाषा

1.3.2 हिन्दी निबंध का स्वरूप

1.3.3 हिन्दी निबंध का उदय

1.3.4 निबंध के तत्व

1.3.5 निबंध के प्रकार

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

आ जिस रचना में किसी विषय पर भावों या विचारों को व्यस्थित ढंग से क्रमबद्ध रूप से सुगठित गद्य में प्रस्तुत किया जाए उस रचना को निबंध कहते हैं। निबंध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। सफल निबंध की पहचान है कि वह विषय को पाठक के समक्ष स्पष्ट करने में समर्थ हो। निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है। यह गद्य की आधुनिक विद्या है। निबंध का आरंभ भी भारतेंदु युग से ही हुआ था। इस काल में भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास हो रहा था। पढ़े-लिखे लोग अपने विचारों को स्वच्छंदतापूर्वक व्यक्त करने लगे थे। इस समय तक हिन्दी की अनेक पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी थी। इनमें विविध विषयों पर जो विचार व्यक्त किए जाते थे। उन्हें हिन्दी निबंध का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है।

1.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- निबंध के अर्थ और परिभाषा से परिचित हो सकेंगे।
- हिन्दी निबंध के उदभव के बारे में जान सकेंगे।
- हिन्दी निबंध साहित्य के विकास क्रम से परिचित हो सकेंगे।
- हिन्दी निबंध के स्वरूप एवंत त्व को जान सकेंगे।

- निबंध के प्रकार से अवगत होंगे।

1.3 मूल पाठ: निबंध: परिभाषा, स्वरूप, तत्व और प्रकार

1.3.1 निबंध: अर्थ और परिभाषा

गद्य की सभी विधाओं में निबंध का अपना अलग महत्व है। इस विधा को आत्माभिव्यक्ति के साधन के रूप में देखा जाता है। अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए साहित्य में काफी विधाएँ हैं। परंतु निबंध इनसे अलग है। निबंध में अप्रत्यक्ष रूप से घुमा फिरा कर लेखक अपनी बात नहीं करता बल्कि सीधे-सीधे पाठकों से बात करता है। निबंध में लेखक की अपनी निजी भावनाएँ और विचार होते हैं।

'निबंध' शब्द संस्कृत साहित्य से हिन्दी में लिया गया है। इसका अर्थ है एकत्र करना, जोड़ना, बाँधना, संगठन करना, रोकना आदि। प्राचीन काल में प्रेस अथवा मुद्रणालय नहीं थे। उस समय ऋषि मुनि अपने विचार भोज पत्रों पर लिखते थे। इन भोज पत्रों को संग्रह कर बाँधने और कसने की क्रिया को निबंध कहा जाता था। बाद में अर्थ संकोच के कारण इसका प्रयोग साहित्यिक रचना के लिए होने लगा।

अंग्रेज़ी के 'एसे' के पर्यायवाची रूप में ही निबंध का प्रयोग होता है। निबंध रचना में पृष्ठों की सीमा नहीं होती। यह विषय पर आधारित होता है। यह भी आवश्यक नहीं है कि निबंध लेखक साहित्यकार हो।

हिन्दी में निबंध साहित्य का विकास पाश्चात्य साहित्य की प्रेरणा से हुआ है। भारतीय और पाश्चात्य आचार्यों और समीक्षकों ने निबंध की अनेक परिभाषाएँ दी हैं, जिनसे निबंध के स्वस्प के अध्ययन में सहायता मिलती है।

आधुनिक 'एसे' अर्थात निबंध के जन्मदाता फ्रांसीसी लेखक मानतेन के अनुसार 'निबंध विचारों, उद्देश्यों और कथाओं का मिश्रण है।'

अंग्रेज़ी निबंध साहित्य में बेकन का स्थान सबसे ऊपर है। उनके अधिकतर निबंध दार्शनिक विचारों और जीवन के यथार्थ अनुभवों से ओतप्रोत हैं। उनके अनुसार 'निबंध रचना कुछ इने-गिने पृष्ठों में होनी चाहिए तथा उसमें विचारों का अनावश्यक विस्तार न होकर, उसका सारगर्भित संक्षिप्त रूप होना चाहिए।'

पाश्चात्य विद्वान मरे ने लिखा है कि 'निबंध किसी विषय विशेष अथवा विषय की शाखा विशेष लिखी गई असाधारण लंबी रचना होती है, जिसमें मूलतः विरोध रहता है।' उनके अनुसार निबंध अनियमित, अपरिपक्क रचना होती है। अब इसे ऐसी रचना माना जाता है जो अपनी शैली में न्यूनाधिक व्यापक होती है, यद्यपि अपने विस्तार में सीमित रहती है।'

निबंध को लेकर भारतीय विद्वानों ने भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य दोनों के जानकार थे। इसलिए निबंध को लेकर विचार व्यक्त करते समय दोनों साहित्य दृष्टियों को सामने रखकर उन्होंने लिखा है "आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यंितव अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो। बात तो ठीक है यदि ठीक तरह से समझी जाए। व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब नहीं कि उसके प्रदर्शन के लिए विचार की श्रृंखला रखी ही न जाए या जान बूझकर जगह-जगह से तोड़ दी जाए, भावों की विवित्रता दिखाने के लिए ऐसी अर्थ-योजना की जाए जो उनकी अनुभूति के प्रकृत या लोकसामान्य स्वरूप से कोई संबंध ही न रखे अथवा भाषा से सरकस वालों की सी कसरतें या हठयोगियों के से आसन कराए जाएँ जिनका लक्ष्य तमाशा दिखाने के सिवाय और कुछ न हो। "शुक्ल जी ने निबंध को गंभीर विचार प्रकाशन का माध्यम माना। उनके अनुसार यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव है। इसलिए गद्य शैली के विवेचक उदाहरणों के लिए अधिकतर निबंध ही चुना करते हैं। शुक्ल जी स्वयं एक श्रेष्ठ निबंधकार थे। इसलिए यह परिभाषा काफी सारगर्भित है।

इन सभी परिभाषाओं के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि निबंध गद्य साहित्य की वह सीमित पृष्ठवाली रचना है जिसमें लेखक अपने व्यक्तिगत विचार कसी हुई भाषा में कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है।

बोध प्रश्न

- निबंध किसे कहा जाता है?

1.3.2 हिन्दी निबंध का स्वरूप

निबंध हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण गद्य विद्या है।
संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति "गद्य कविनां निकषं वदन्ति" के आधार पर हिन्दी के प्रमुख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबन्ध विद्या के बारे में कहा है कि "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही अधिक हुआ है।
निबंध एक ऐसी विद्या है जिसमें निबंधकार किसी विषय पर अपने विचारों एवं भावों की प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति करता है। इससे रचनाकार के व्यंितव का भी प्रकाशन होता है। इसीलिए निबंध को आत्मभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी माना गया है।
निबंधों के जन्मदाता एवं फ्रेंच साहित्यकार मान्तेन कहते हैं कि 'मैं अपने को ही निबंधों में चित्रित करता हूँ।'

निबंधों में साहित्य की सभी विद्याओं के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों का समावेश रहता है। कविता की भावुकता, नाटक की प्रभावशीलता, गतिशीलता रेखाचित्र की चित्रात्मकता संस्मरण की विवरगात्मता आदि तत्व निबंध विद्या को गद्य साहित्य की कसौटी के रूप प्रतिष्ठित करते हैं।

अतः निबंध गद्य साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली लेकिन अभिव्यंजना की दृष्टि से कठिन गद्य विद्या है।

1.3.3 हिन्दी निबंध का क्रम

हिन्दी में निबंध का जनम और विकास आधुनिक काल की देन है। राष्ट्रीय चेतना के जागरण ने गद्य को विकास की भूमि प्रदान की जिसमें अन्य विधाओं के साथ निबंध का भी विकास होने लगा। राष्ट्रीय जागरण का उत्साह उमंग देश प्रेम सामाजि सरोकार मुद्रणकला का प्रचार-प्रसार, समाचार पत्रों का प्रकाशन और उनके माध्यम से लेखक और पाठक में आत्मीय संबंध की स्थापना आदि अनेक कारणों से साहित्य के अनेक रूपों के साथ निबंध का भी आरंभ हुआ।

हिन्दी साहित्य में निबंधों का उदय आधुनिक काल में अर्थात भारतेंदु युग में हुआ। यही निबंध का जन्मकाल है। इस कारण काल विभाजन में हिन्दी निबंध का प्रारंभिक काल भारतेंदु युग माना जा सकता है। हिन्दी निबंध के विकास को चार कालों में बाँटा जा सकता है-

(क) भारतेंदु युग

(ख) द्विवेदी युग

(ग) शुक्ल युग

(घ) शुक्लोत्तर युग

(क) भारतेंदु युग - भारतेंदु युग हिन्दी निबंध का आरंभिक काल है। हिन्दी साहित्य में निबंधों की उपलब्ध परंपरा का प्रवर्तन भारतेंदु हरिश्चंद्र से प्रारंभ हुआ। भारतेंदु युग में नई चेतना जाग रही थी। यह काल नवीन और पुरातन परंपराओं और विचारों के संघर्ष का काल था। भारतेंदु और उनके सहयोगी लेखकों ने पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी विधा के विकास में भरपूर योगदान दिया।

हिन्दी के पहले निबंध और निबंधकार को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है। कुछ बालकृष्ण भट्ट को तो कुछ भारतेंदु को प्रथम निबंधकार मानते हैं। इससे पूर्व के गद्य लेखकों का रचनाओं में निबंध के गुण उपलब्ध नहीं थे। अतः भारतेंदु के निबंध ही हिन्दी के प्राथमिक निबंध हैं। इनमें निबंध कला की सभी विशेषताएँ उपलब्ध हैं। भारतेंदु ने हिन्दी गद्य की अनेक विधाओं का सूत्रपात किया। भारतेंदु ने भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर निबंधों की रचना की। उन्होंने इतिहास, समाज, धर्म, राजनीति, यात्रा, प्रकृति वर्णन एवं व्यंग्य - विनोद जैसे विषयों पर निबंधों की रचना की। सामाजिक कुरीतियों का खंडन उन्होंने अपने सामाजिक निबंधों के अंतर्गत किया हैं भारतेंदु ने अपने निबंधों में अंग्रेज़ी सरकार के ऊपर भी तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने सरल भाषा शैली में अपने आलोचनात्मक निबंधों की रचना की है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंध 'भारतेंदु ग्रंथावली' के तीसरे खं डमें संकलित हैं। उनके प्रमुख निबंधों में शामिल हैं - नाटक, कालचक्र (जर्नल), लेवी प्राण लेवी, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, कश्मीर कुसुम,

जातीय संगीत, संगीत सार, हिन्दी भाषा और स्वर्ग में विचार सभा। भारतेंदु युग के निबंध मुख्य रूप से पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। उनका मुख्य उद्देश्य जनता को शिक्षित करना था।

भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकारों में बालकृष्ण भट्ट, बदरी नारायण चैधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास। इन सभी निबंधकारों ने हिन्दी निबंध के विकास में बहुत योगदान दिया है।

बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के सर्वाधिक महत्वपूर्ण निबंधकार थे। ये 'हिन्दी प्रदीप' के संपादक थे। और अपनी पत्रिका के माध्यम से अपने निबंधों का संदेश जनता तक पहुँचाते थे। उन्होंने समकालीन समस्याओं पर जम कर लिखा है। बाल विवाह, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, राजा और प्रजा, कृषकों की दयनीय स्थिति, देश सेवा का महत्व, महिला स्वतंत्रता आदि उनके निबंधों के मुख्य विषय हैं। बालकृष्ण भट्ट ने साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयों पर अत्यंत रोचक निबंध लिखे।

बदरीनारायण चैधरी 'प्रेमघन' की निबंध शैली को काफी विलक्षण माना जाता है। उन्होंने विचारात्मक और वर्णनात्मक निबंध लिखे। इनके निबंधों में समसामयिक विषयों और समस्याओं को देखा जा सकता है। इनके निबंधों की भाषा में आलंकारिता एवं कृत्रिमता देखने को मिलती है।

पं. प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु युग के प्रतिनिधि निबंधकार माने जाते हैं। ये विख्यात पत्रिका 'ब्राह्मण' के संपादक थे। ये मनोरंजक एवं व्यंग्य प्रधान निबंधों को लिखने में बहुत कुशल थे। भौं, पेठ, दाँत, नाक आदि पर इन्होंने निबंध लिखे हैं। ये अपने निबंध को विनोदपूर्ण बनाने का प्रयास करते थे। इनकी भाषा मुहावरेदार होती थी। भाषा पर इनकी बहुत जबरदस्त पकड़ थी।

बालमुकुंद गुप्त भी भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकारों में प्रमुख स्थान के अधिकारी हैं। इन्होंने भारतवासियों की राजनीतिक विवशता को नज़र में रखकर 'शिवशंभु के चिट्ठे' नाम का निबंध लिखा जो लाॅर्ड कर्ज़न को संबोधित है। इस युग के महत्वपूर्ण निबंधकारों में राधाचरण गोस्वामी का नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने निबंधों में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया।

छात्रो! अब तक की चर्चा से आप यह समझ सकते हैं कि भारतेंदु युग के निबंधकारों में विषय की विवधता पाई जाती है। इस युग में विभिन्न विषयों पर निबंध लिखे गए। इनके निबंधों की शैली में हास्य - व्यंग्य एवं मनोरंजन की प्रधानता है। भारतेंदु युग के निबंधकारों का मूल्यांकन करते हुए डाॅ. रामविलास शर्मा ने लिखा है "जितनी सफलता भारतेंदु युग के लेखकों को निबंध रचना में मिली उतनी कविता और नाटक में भी नहीं मिली। भारतेंदु युग की गद्य शैली के सबसे चमत्कारपूर्ण दर्शन निबंधों में ही मिलते हैं।"

बोध प्रश्न

- भारतेंदु युगीन निबंधों का विषय क्या था?
- बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' क्यों लिखे थे?

(ख) द्विवेदी युग - भारतेंदु युग में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निबंध साहित्य की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी। इसे आगे बढ़ाने का कार्य द्विवेदी युग में हुआ। यह युग द्विवेदी जी की भाषाई शुद्धता, नैतिकता एवं बौद्धिकता से काफी प्रभावित रहा। इस युग को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग कहा गया है। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोविंदनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, माधव प्रसाद मिश्र, मिश्रबंधु, सरदार पूर्णसिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, श्यामसुंदर दास, पद्मसिंह शर्मा, रामचंद्र शुक्ल, शिवपूजन सहाय और अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि प्रमुख हैं।

इस युग की समस्त साहित्य चेतना महावीर प्रसाद द्विवेदी से आई है। उन्होंने सबसे पहले भाषा के शुद्ध रूप पर बल दिया। भाषा में व्याकरण एवं विराम चिन्हों के उपयोग पर बल दिया। इन सबका प्रभाव उस समय के निबंधों पर भी देखा जा सकता है। आचार्य द्विवेदी ने बेकन के निबंधों को बहुत ही आदर्श माना और उनका हिन्दी अनुवाद 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से किया। द्विवेदी जी के निबंधों का संग्रह है 'रसज्ञ रंजन'। इनके कुछ प्रमुख निबंध हैं कवि और कविता, प्रतिभा, साहित्य की महत्ता, कवि कर्तव्य, लोभ, मेघदूत आदि। इनके निबंधों में भारतेंदु युग की हास्य-व्यंग्य शैली का अभाव पाया जाता है। द्विवेदी जी के निबंधों की भाषा शुद्ध एवं सरल दिखाई पड़ती है जिसके कारण उनको समझना आसान होता है। इनके निबंध व्यास शैली में लिखे गए हैं। व्यास शैली में निबंधकार किसी विषय को कथावाचक की भाँति विस्तार से समझाते हुए चलता है।

द्विवेदी युग की निबंध परंपरा भारतेंदु युग की निबंध परंपरा से भिन्न पाई जाती है। कहने का अर्थ है कि दोनों में एक प्रकार का अलगाव पाया जाता है। गोविंदनारायण मिश्र द्विवेदी युग के मुख्य निबंधकार माने जाते हैं। उनके निबंधों के विषय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक होते थे। इनके निबंध 'गोविंद निबंधावली' में संग्रहीत हैं। मिश्र जी के निबंधों में संस्कृत शब्द अधिक मिलते है।। अतः उनके निबंधों की भाषा तत्सम प्रधान है। उनके निबंध 'सार सुधा निधि' में प्रकाशित हुआ करते थे। आलंकारिक गद्य शैली के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनके निबंधों को 'सायास अनुप्रास में गुँथे शब्द - गुच्छों का अटारा' कहा है।

द्विवेदी युग में आलोचनात्मक निबंध लिखने का श्रेय श्यामसुंदर दास को प्राप्त है। इनके निबंधों में विचारों की अभिव्यक्ति पर बल दिया जाता था। इनके मुख्य निबंध हैं भारतीय साहित्य की विशेषता, कर्तव्य और सभ्यता, समाज और साहितय आदि।

सरदार पूर्णसिंह के निबंधों के विषय अधिकतर नैतिक और सामाजिक होते हैं। संख्या में इनके निबंध बहुत अधिक नहीं हैं किंतु जितना भी हैं उनमें गुणवत्ता पाई जाती है। इसी कारण इन्हें द्विवेदी युग के श्रेष्ठ निबंधकार माना जाता है। इनके निबंध हिन्दी की अमूल्य निधि है। इनके प्रसिद्ध निबंधों में स्वाधीन चिंतन के साथ-साथ लाक्षणिक एवं व्यंग्य प्रधान शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। इनके निबंध निम्नलिखित हैं - आचरण की सभ्यता, मज़दूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, पवित्रता, कन्यादान और अमेरिका का मस्त योगी बाल्ट व्हिटमैन आदि।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी के निबंध भी संख्या में कम हैं किंतु उन्होंने कम ही रचनाओं के सहारे बहुत ऊँचा स्थान बना लिया। इनकी साहित्य क्षमता अप्रतिम थी। वे पुरातत्व के जाने माने विद्वान थे। कहानी और निबंध के क्षेत्र में उनका बहुत ऊँचा स्थान है। गुलेरी जी के निबंधों में उच्च कोटी का पांडित्य एवं व्यंग्य पाया जाता है। उनकी भाषा विषय के अनुकूल होती है तथा उसमें प्रौढ़ता का पुट पाया जाता है। उनके निबंध संग्रहों के नाम हैं - गोबर गणेश संहिता, कछुआ धर्म और मारेसि मोहि कुठाँव।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि द्विवेदी युग में अधिकतर विचार प्रधान निबंधों की रचना हुई। इस युग में भारतेंदु युग की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ भाषा का प्रयोग निबंधों में किया गया है। इन निबंधकारों ने युगीन समस्याओं की अपेक्षा साहित्यिक एवं वैचारिक समस्याओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। इस समय के निबंधकारों की भाषा व्याकरणसम्मत एवं प्रौढ़ है।

बोध प्रश्न

- 'व्यास शैली' किसे कहते हैं?
- गोविंदनारायण मिश्र के निबंधों के संबंध में शुक्ल जी का क्या विचार है?

(ग) शुक्ल युग - हिन्दी निबंध के तृतीय चरण को शुक्ल युग के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने द्विवेदी युग से ही लिखना शुरू कर दिया था, किंतु उनके विचारों में प्रोढ़ता तथा गंभीरता उनके बाद के निबंधों में नज़र आती है। शुक्ल जी हिन्दी के सर्वाधिक चिंतनशील निबंधकार के रूप में आए और अपनी उच्च कोटी के लेखन से सबको प्रभावित किया। इसलिए इस अवधि को हिन्दी निबंध का 'उत्कर्ष काल' अथवा 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, गुलाब राय, बेचन शर्मा उग्र, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, रायकृष्ण दास, वासुदेव शरण अग्रवाल, शांतिप्रिय द्विवेदी, रघुवीर सिंह आदि आते हैं।

इस युग के निबंध साहित्य को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने गहन अध्ययन और चिंतन से परिष्कृत किया है। चिंतामणि भाग 1 और 2 में संकलित निबंधों में मस्तिष्क और हृदय का सुंदर संयोग पाया जाता है। चिंतामणि में संकलित निबंधों ने हिन्दी निबंध को बहुत ऊँचाई पर पहुँचा दिया। निबंध के सभी गुण इनके निबंधों में पाए जाते हैं। इनके निबंध दो प्रकार के हैं -

साहित्यिक समीक्षा संबंधी निबंध तथा मनोविकार संबंधी निबंध। तुलसी का भक्ति मार्ग, कविता क्या है, साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद साहित्यिक समीक्षा के अंतर्गत आने वाले निबंध हैं। उत्साह, लज्जा और ग्लानि, श्रद्धा-भक्ति, क्रोध आदि मनोविकार संबंधी निबंध हैं।

शुक्ल जी के निबंध विषय प्रधान या व्यक्ति प्रधान होते हैं। भाषा की दृष्टि से उनके निबंधों को हिन्दी निबंध का आदर्श कहा जा सकता है। उनके निबंधों में सभी प्रकार की शैलियों का प्रयोग पाया जाता है। गणपतिचंद्र गुप्त ने शुक्ल जी के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए लिखा है - "वस्तुतः शुक्ल जी के निबंधों में वे सभी गुण मिलते हैं जो गंभीर विषयों के निबंधों के लिए अपेक्षित हैं। शुक्ल जी की शैली में भी निजी विशिष्टता मिलती है। भारतेंदु युग की सी मौलिकता उसमें है, किंतु वे उनके छिछलेपन से दूर है, द्विवेदी युग की सी विचारात्मकता उसमें है किंतु वैसी शुष्कता का उनमें अभाव है।" शुक्ल जी के निबंधों में साहित्यिक भाषा का प्रयोग पाया जाता है।

शुक्ल युग के महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं बाबू गुलाबराय। ललित निबंध की दृष्टि से इनकी कुछ रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। ठलुआ - क्लब, फिर निराशा क्यों, मेरी असफलताएँ आदि संग्रहों में इनके व्यक्तिगत निबंध संकलित हैं। मेरा मकान, मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ, प्रीतिभोज आदि उनके उल्लेखनीय ललित निबंध हैं।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के मुख्य निबंध हैं अतीत स्मृति, उत्सव, रामलाल पंडित, श्रद्धांजलि के दो फूल। इनके निबंधों में लेखक की भावुकता, आत्मीयता और व्यंग्य का मिला जुला रूप देखा जा सकता है। इनके निबंध 'पंचपात्र' में संग्रहीत हैं।

शुक्ल युग के एक और महत्वपूर्ण निबंधकार हैं शांतिप्रिय द्विवेदी। इन्होंने आलोचनात्मक निबंध की रचना की। इनके अतिरिक्त सांस्कृतिक विषयों पर निबंध लिखने वाले निबंधकार में डाॅ. वासुदेव शरण अग्रवाल का नाम आता है। लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक भाषा शैली तथा भावप्रधान निबंध लिखने वालों में माखनलाल चतुर्वेदी का नाम लिया जा सकता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शुक्ल युग में निबंधों का विषय बहुत ही गंभीर तथा ठोस हुआ करता था। सभी प्रकार की समस्याओं पर लिखा जाता था।

बोध प्रश्न

- शुक्ल युग में निबंधों का विषय क्या रहा?

(घ) शुक्लोत्तर युग - शुक्लोत्तर युग का आरंभ 1940 ई. से माना जाता है। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इस समय देश की राजनीति और सामाजिक समस्याओं में काफी बदलाव आया। शुक्लोत्तर युग परतंत्रता और स्वतंत्रता दोनों का मिला - जुला समय था। इस युग के साहित्यिकारों पर अनेक विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा। इस युग के सभी निबंधकारों ने

निबंध की नई दिशाएँ खोजीं। इस काल में समीक्षात्मक, विचारात्मक तथा ललित निबंधों की रचना हुई। क्योंकि इस युग के निबंधकार भारत - पाठ युद्ध, भारत-चीन युद्ध, आपातकाल आदि से भी प्रभावित थे।

इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डाॅ. नगेंद्र, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र, प्रभाकर माचवे, डाॅ. भगीरथ मिश्र, डाॅ. रामविलास शर्मा, डाॅ. विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, देवेंद्र सत्यार्थी, कन्हैलाल मिश्र आदि।

शुक्ल जी की परंपरा को आगे बढ़ाने वालों में प्रमुख हैं नंददुलारे वाजपेयी। इनके निबंधों में वैयक्तिकता एवं व्यंग्य की प्रधानता पाई जाती है। उनके मुख्य निबंध हैं हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, नया साहित्य: नए प्रश्न आदि।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबंधकार के रूप में जाने जाते हैं। इनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, विचार प्रवाह, कुटज, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, गतिशील चिंतन, नाखून क्यों बढ़ते हैं, आम फिर बौरा गए आदि। द्विवेदी जी के निबंधों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण भारतीय परंपरा का प्रदर्शन तथा मानव मूल्यों का विश्लेषण पाया जाता है। द्विवेदी जी के निबंधों का विषय बहुत व्यापक है। इनकी शैली विषय के अनुरूप बदलती है। आधुनिक युग की बुराइयों का चित्रण करने के लिए वे हास्य - व्यंग्य शैली का प्रयोग करते हैं। कालीदास के युग का वर्णन करते समय उनके शब्द संस्कृत के हो जाते हैं। उन्होंने शोधपरक निबंधों की भी रचना की है। कहने का अभिप्राय है कि भाषा की लय, गुँफित पदावली, विषय वैविध्य, बिंबात्मक चित्रण आदि के कारण द्विवेदी जी के निबंध श्रेष्ठ हैं।

शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबंधकारों में शांतिप्रिय द्विवेदी जी का नाम भी आता है। ये एक समीक्षात्मक निबंध लेखक है। इनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं - संचारिणी, युग और साहित्य, धरातल, साकल्य, वृंत और विकास। हिन्दी में शांतिप्रिय द्विवेदी को प्रभाववादी समीक्षा के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है। इनके समीक्षात्मक निबंधों का विषय अधिकतर साहित्येतर हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी निबंधों की रचना की। अर्धनारीश्वर, हमारी सांस्कृतिक एकता, प्रसाद, पंत और मैथिलीशरण, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय साहित्य उनके निबंध संग्रह हैं। उनके निबंधों में मानवीय आस्था को देखा जा सकता है।

डा. नगेंद्र की यह विशेषता है कि वह गंभीर से गंभीर विषय को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं ताकि पढ़ने वाले को आसानी से समझ में आ जाए। उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं विचार

और विवेचन, विचार और अनुभूति, विचार और विश्लेषण आदि। उनके निबंधों का बृहत संग्रह है 'आस्था के चरण'।

रामविलास शर्मा प्रगतिशील निबंधकार माने जाते हैं। उन्होंने अपने निबंधों के माध्यम से प्रगतिशील दृष्टिकोण दिखाने का प्रयास किया है। उन्होंने व्यंग्यपूर्ण शैली में गंभीर विचारों को प्रस्तुत किया। इनके मुख्य निबंध हैं प्रगति और परंपरा, संस्कृति और साहित्य आदि।

1.3.4 निबंध के तत्व

निबंध के प्रमुख तत्व निम्नलिखित होते हैं।

1. संक्षिप्तता
2. गद्य की अनिवार्यता
3. व्यक्तित्व की प्रधानता
4. सजीवता
5. भाषा शैली

1. संक्षिप्ता:- निबंध में संक्षिप्ता बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। सभी महत्वपूर्ण बातें संक्षेप में होनी चाहिए। इसका सारांश विषय ही पुनः झलक देता है और पाठक को आखिरी संदेश वहीं से मिलता है।

2. गद्य की अनिवार्यता:- निबंध गद्य की ही विद्या है। अधिकतर निबंध गद्य में ही होता है गद्य इसकी अनिवार्य शर्त होती है, किन्तु कभी कभी इसमें पद्य का भी समावेश देखा जाता है।

3. व्यक्तित्व की प्रधानता:- जब कोई लेखक किसी विषय पर निबंध लिखता है तो उस निबंध में उसका व्यक्तित्व भी नज़र आ जाता है। उदाहरण के लिए हम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों को देख सकते हैं। इन निबंधकारों के निबंधों में इसका व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है।

4. सजीवता:- निबंधकार जब किसी निबंध की रचना करता है तो वह उसके माध्यम से किसी विचार की अभिव्यक्ति करता है या किसी भावना का चित्रण करता है। अतः निबंध को रोचक होना चाहिए उसमें सजीवता का होना भी आवश्यक होता है।

5. भाषा शैली:- निबंध की भाषा सरल होनी चाहिए वह भाषा शैली प्रभावशाली होनी चाहिए। निबंध में भाषा शैली का महत्वपूर्ण स्थान होता है। निबंध की भाषा विषय के अनुरूप होनी चाहिए। तथा इसकी भाषा संस्कृतिक, उर्दूनिष्ठ तथा बोल-चाल के निकट होनी चाहिए।

1.3.5 निबंध के प्रकार

मुख्य तौर पर निबंध के चार प्रकार माने गए हैं-

(1) वर्णनात्मक निबंध:- वर्णनात्मक निबंध उस निबंध को कहते हैं जिसमें किसी घटना, वस्तु अथवा स्थान का वर्णन होता है। इसकी भाषा सरल और रोचक होती है। वर्णणात्मक निबंध को

पढ़कर उस वस्तु घटना या स्थान का पूरा चित्र आँखों के सामने आ जाता है। किसी त्यौहार जैसे - होली दीपावली, ईद या क्रिसमस, यात्रा, दृश्य स्थान या घटना, गणतंत्र दिवस की परेड, ताजमहल, ओलंपिक खेल आदि पर लिखे गए निबंध प्रायः वर्णनात्मक निबंध के अंतर्गत आते हैं।

(2) विचारात्मक निबंध:- विचारात्मक निबंध चिंतन अर्थात विचार की प्रधानता होती है। इस प्रकार के निबंध लिखना प्रायः थोड़ा कठिन होता है। मूदान यज्ञ, अहिंसा परमो धर्म, विधवा विवाह जैसे सामाजिक राष्ट्रीय एकता, विश्वबंधुत्व जैसे राजनीतिक तथा दार्शनिक विषय इस निबंधों के अन्तर्गत आते हैं।

(3) भावात्मक निबंध:- भावात्मक निबंध हमेशा भावना प्रधान होते हैं जैसे गर्मी की छुट्टी, बरसात की रात, बुढ़ापा, मेरे सपनों का भारत आदि। इसमें कल्पनात्मक निबंध भी आते हैं। कल्पनात्मक निबंध के उदाहरण हैं - यदि मैं एक दीन का प्रधानमंत्री होता, मेरी अभिलाषा, नदी की आत्मकथा आदि।

(4) साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध:- किसी साहित्यकार के द्वारा किसी साहित्यिक विद्या या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबंध साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध कहलाता है, जैसे प्रेमचंद, तुलसीदास आधुनिक हिन्दी कविता, छायावाद हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग आदि इसमें ललित निबंध भी आते हैं। इनकी भाषा काव्यात्मक और रसात्मक दोनों होती है।

1.4 पाठ सार

निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को स्वच्छंद रूप में व्यक्त करता है। हिन्दी निबंध के विकास को चार कालों में विभक्त किया जा सकता है। जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग।

भारतेंदु युग हिन्दी निबंध की विकास यात्रा का प्रारंभिक चरण है। भारतेंदु के निबंध ही हिन्दी के प्राथमिक निबंध हैं जिनमें निबंध कला की मूलभूत विशेषताएँ उपलब्ध हैं। भारतेंदु के निबंध विषय एवं शैली की दृष्टि से बहुत ही उच्च कोटी के हैं। उन्होंने इतिहास समाज, धर्म, राजनीति, प्रकृति जैसे विषयों पर निबंधों की रचना की। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में भारतेंदु के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, राधाकृष्ण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास आदि प्रमुख हैं। भारतेंदु युग के निबंधकारों के विषय वस्तु व्यापक थे। इस युग के निबंधकरों के निबंध में हास्य-व्यंग्य एवं मनोरंजन का पुट पाया जाता है।

हिन्दी निबंध के विकास के दूसरे चरण को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर 'द्विवेदी युग' कहा जाता है। इस काल के निबंधों में गंभीरता है तथा भारतेंदु युग की हास्य-व्यंग्य शैली का अभाव। इस युग में भाषा की शुद्धता पर अधिक बल देने के कारण इनकी भाषा में

प्रौढ़ता पाई जाती है। इनकी भाषा व्याकरण सम्मत थी। इस समय के निबंधकारों ने साहित्यिक एवं वैचारिक समस्याओं को अपने निबंधों का विषय बनाया।

हिन्दी निबंध के तृतीय चरण को 'शुक्ल युग' कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के नाम पर इस युग का नाम शुक्ल युग रखा गया। इनके निबंध चिंतामणि में संकलित हैं। चिंतामणि में संकलित निबंधों में निबंध कला के सभी गुण मौजूद हैं। शुक्ल युग को हिन्दी निबंध का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस युग में निबंधों का विषय बहुत व्यापक था तथा उसमें गंभीरता भी पाई जाती थी। भाषा शैली की दृष्टि से यह युग द्विवेदी युग की तुलना में अधिक विकसित एवं प्रौढ़ है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस युग की महानतम उपलब्धि है और वे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार कहें जाते हैं।

'शुक्लोत्तर युग' हिन्दी निबंध का चैथा चरण है। इसका आरंभ 1940 ई. से माना जाता है। इस समय देश की राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं में काफी बदलाव आया। इनका प्रभाव उस समय के निबंधों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस समय में ज़्यादातर समीक्षात्मक, विचारात्मक तथा ललित निबंधों की रचना हुई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी और पं. विद्यानिवास मिश्र इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं।

छात्रो! इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिन्दी निबंध साहित्य ने बहुत कम समय में प्रगति की है। भारतेंदु युग से लेकर वर्तमान युग तक हिन्दी निबंध ने क्रमशः प्रौढ़ता प्राप्त की है। आज भी हिन्दी निबंध नवीनता की खोज में है।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण ने हिन्दी में निबंध विधा के उभ्दव और विकास को गति प्रदान की।
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र और बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी के आरंभिक निबंधकारों के रूप में जाना जाता है।
3. पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भारतेंदु युग में निबंध साहित्य की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी।
4. द्विवेदी युग में विचार प्रधान सामाजिक और नैतिक विषयों पर अनेक निबंधकरों ने अपनी कलम चलाई। इस युग में थोड़ा लिखकर अधिक प्रभाव उत्पन्न करने की दृष्टि से अध्यापक पूर्णसिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
5. छायावाद युग को निबंध साहित्य के युग में 'शुक्ल युग' कहा जाता है। क्योंकि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'चिंतामणि' के अपने निबंधों द्वारा इस विधा को उच्च शिखर तक पहुँचाया।
6. शुक्लोत्तर युग में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'ललित निबंध' को हिन्दी में प्रतिष्ठित किया। आगे इसकी एक लंबी परंपरा चली।

1.6 शब्द संपदा

1. अग्रसर	-	आगे बढ़ता हुआ
2. अप्रत्यक्ष	-	जो दिखाई न दें
3. कुरीति	-	बुरी रीतियाँ, जिसमें समाज या व्यक्ति को हानि हो
4. चिंतन	-	गहराई से सोचना
5. परिष्कृत	-	सुधारा हुआ, शुद्ध किया हुआ
6. प्रारंभिक रूप	-	शुरूआती रूप से
7. प्रौढ़ता	-	परिकल्पना
8. मुद्रणालय	-	छापाखाना, प्रेस
9. मौलिकता	-	असली, वास्तविक
10. विधा	-	साहित्य का एक रूप
11. व्यापक	-	विस्तृत रूप से
12. शैली	-	तरीका, ढंग
13. समस्या	-	परेशानी
14. सारगर्भित	-	जिसमें कुछ महत्व की बात हो, सार पूर्ण
15. स्वच्छंद रूप	-	अपने इच्छा अनुसार
16. हास्य-व्यंग्य	-	किसी पर व्यंग्य से हँसा जाए या उपहास

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हिन्दी निबंध के विकास क्रम का संक्षिप्त परिचय दीजिए
2. हिन्दी निबंध के विकास क्रम में द्विवेदी युग के योगदान का वर्णन कीजिए।
3. 'शुक्ल युग हिन्दी निबंध का उत्कर्ष काल है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. निबंध के अर्थ एवं परिभाषा पर विचार कीजिए।

2. रामचंद्र शुक्ल के निबंध कला पर प्रकाश डालिए।

3. शुक्लोत्तर युग का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खण्ड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. 'स्वर्ग में विचार सभा' के रचनाकार कौन हैं?

(क) रामचंद्र शुक्ल (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(ग) विद्यानिवास मिश्र (घ) शांतिप्रिय द्विवेदी

2. इनमें से एक हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध संग्रह नहीं है।

(क) अशोक के फूल (ख) कुटज (ग) श्रद्धा-भक्ति (घ) कल्पलता

3. प्रभाववादी समीक्षा के अग्रदूत कौन हैं?

(क) रामचंद्र शुक्ल (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(ग) विद्यानिवास मिश्र (घ) शांतिप्रिय द्विवेदी

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. 'साधारणीकरण' ....के अंतर्गत आने वाला निबंध है।

2. 'शिवशंभु के चिट्ठे' में .... को संबोधित किया गया है।

3. द्विवेदी युग में आलोचनात्मक निबंध लिखने का श्रेय .... को प्राप्त है।

III सुमेल कीजिए

(1)आस्था के चरण (क) सरदार पूर्णसिंह

(2) चिंतामणि (ख) विद्यानिवास मिश्र

(3) तुम चंदन हम पानी (ग) रामचंद्र शुक्ल

(4) मजदूरी और प्रेम (घ) नगेंद्र

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. नगेंद्र और हरदयाल

2. हिन्दी साहित्य का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह

4. गद्य की नई विधाओं का विकास, माजीद असद

5. हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास, लाल साहब सिंह

इकाई 2 : हिन्दी निबंध का इतिहास

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूल पाठ: हिन्दी निबंध का इतिहास

2.3.1 निबंध का इतिहास

2.4 पाठ सार

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

हिन्दीसाहित्य में आधुनिक काल में अन्य गद्य विधाओं में लेखन कार् य की शुरुआत हुई थी। जिसमें एक निबंध गद्य विधा का भी अविष्कार हुआ है। निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें भाषा को महत्व देती है। निबंध के द्वारा लेखक किसी विशेष विषय पर अपने व्यक्तिगत प्रभाव को उजागर करता है, और भावों एवं विचारों को व्यवस्थित ढ़ंग से क्रमबद्ध रूप में सुगठित करता है। निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है। आधुनिक काल में भारतेंदु ने निबंध की शुरुआत की है और उसे आगे बढ़ाने का कार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदि निबंधकारों ने किया है। निबंध का विकास अनेक प्रकार के विभिन्न युगों में हुआ है।

2.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- निबंध के इतिहास से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विभिन्न निबंधकार से परिचित हो सकेंगे।

2.3: मूल पाठ : निबंध के प्रकार और निबंध का इतिहास

2.3.1 निबंध का इतिहास –

निबंध मूलतः संस्कृत भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ एकत्र करना, जोड़ना, बांधना, संगठन करना, रोकना आदि। प्राचीन काल में जो भोज पत्रों पर लिखा जाता था उसका संग्रह करने की क्रिया को निबंध कहा जाता था। बाद में इसका अर्थ संकोच के कारण इसका प्रयोग

साहित्यिक रचना के लिए होने लगा। अंग्रेजी में इसे एसे (Essay) कहा जाता है। हिन्दी में निबंध का विकास पाश्चात्य साहित्य की प्रेरणा से हुआ है।

आधुनिक निबंध के जन्मदाता फ़्रांसिसी लेखक मानतेन के अनुसार – "निबंध विचारों, उद्देश्यों और कथाओं का मिश्रण है।"

अंग्रेजी निबंध साहित्य में बेकन का स्थान महत्वपूर्ण हैं। उनके अधिकतर निबंध दार्शनिक विचारों और जीवन के यथार्थ अनुभवों से ओतप्रोत हैं। उनके अनुसार – "निबंध रचना कुछ इने-गिने पृष्टों में होनी चाहिए तथा उसमें विचारों का अनावश्यक विस्तार न होकर, उसका सारगर्भित संक्षिप्त रूप होना चाहिए।"

भारतीय विद्वानों ने निबंध के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "यदि पद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की।"

बाबू गुलाबराय के अनुसार – "निबंध का आकार सीमित होता है, उसमें निजीपन होता है, स्वच्छ और सजीव होता है।"

निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक अपनी अभिव्यक्ति करने के लिए कोई सीमा नहीं है। इसका क्षेत्र विस्तृत एवं संकोचित हो सकता है। निबंध में किसी विशेष विषय पर विचार व्यक्त किया जाता है। इसमें निबंधकार का व्यक्तित्व का प्रभाव होता है। यह पद्यगद्य में लिखा - जा सकता है। रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।" इसमें भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही अधिक हुआ है।

हिन्दी साहित्य में निबंध एक ऐसी विधा है जो निबंधकार किसी एक विशेष विषय पर अपना मत गद्यात्मक रूप में व्यक्त करता है। निबंध लेखन आधुनिक हिन्दी साहित्य की विधा है, इस विधा के जन्म एवं विकास को आधुनिक देन है। इसका विकास भारतेंदु युग से माना जाता है। निबंध का विकास युगों में विभाजित किया गया है। जैसे- भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग आदि।

बोध प्रश्न –

- निबंध किसे कहते हैं ?
- बाबू गुलाबराय ने निबंध के बारे में क्या कहा ?

भारतेंदु युग -

भारतेंदु युग हिन्दी साहित्य में टर्निंग पॉइंट कहा जाता है। इसमें गद्यात्मक लेखन की शुरुआत हुई, जिनमें अनेक विधाओं की स्थापना हुई है, जिसमें एक निबंध विधा है। निबंध का विकास भारतेंदु युग से माना जाता है। इस युग में नई चेतना जाग रही थी। यह काल नवीन और पुरातन परम्पराओं और विचारों के संघर्ष का काल था। भारतेंदु युग के लेखक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम सेहिन्दीविधा का विकास में भरपूर योगदान दिया ।

हिन्दी का पहला निबंध एवं निबंधकार को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों ने बालकृष्ण भट्ट को प्रथम निबंधकार मानते हैं तो कुछ विद्वान भारतेंदु को। भारतेंदु के पहले रचनाओं में निबंध के तत्व नहीं दिखायी देते हैं। भारतेंदु के निबंध ही हिन्दी के प्रथम निबंध कहा जाता है। जिसमें निबंध की सभी कला की विशेषताएँ उपलब्ध हैं। भारतेंदु ने भिन्नभिन्न विषयों - को लेकर निबंध की रचना की, जिसमें इतिहास, समाज, धर्म, राजनीति, यात्रा, प्रकृति वर्णन एवं व्यंग्यविनोद आदि विषयों पर निबंध लेखन कार्य किया है-। सामाजिक कुरूतियों का खंडन निबंध के माध्यम से किया गया है।

भारतेंदु ने कवि वचन तथा हरिश्चंद्र चन्द्रिका में साहित्यिक निबंध लिखे हैं। भारतेंदु के प्रसिद्ध निबंध 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन', 'पाँचवें पैगम्बर', 'दिल्ली दरबार दर्पण' भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है? आदि है। इनके निबंधों में तत्कालीन समस्याओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब निर्देशित होता है।

भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकार – भारतेंदु, बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी, ठाकुर जगमोहन सिंह, बालमुकुंद गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास आदि निबंधकारों ने हिन्दी के निबंध विधा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बालकृष्ण भट्ट को भारतेंदु युग के सर्वश्रेष्ट निबंधकार के रूप में माना जाता है। इन्होंने 'हिन्दीनाम के पत्रिका निकली थी 'प्रदीप । बाल विवाह, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, राजा और प्रजा, कृषक की दयनीय स्थिति, देश सेवा का महत्त्व आदि उनके निबंधों के मुख्य विषय रहे हैं।

प्रतापनारायण मिश्र ने पत्रिका का सम्पादन किया 'ब्राह्मण'। इनके निबंध में मनोरंजन एवं व्यंग्य प्रधान थे। भौं, पेट, नाक, मूँछ, दांत आदि पर इन्होंने व्यंग्य निबंध लिखे हैं। प्रतापनारायण मिश्र ने अपने निबंध में विनोदपूर्ण बनाने का प्रयास करते थे। इनकी भाषा में स्खलन शैली में धनरूप और ग्रामीणता, चंचलता एवं मुहावरेदार की विशेषता रही है।

बालमुकुंद गुप्त ने भारतवासियों की राजनीतिक विवशता को नजर में रखकर 'शिवशंभु के चिट्ठे' नाम का निबंध लिखा है। राधाचरण गोस्वामी भी इस युग में प्रमुख निबंधकार रहे हैं इन्होंने अपने निबंधों में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। बद्रीनारायण चौधरी नारायण के निबंध वर्णनात्मक, भावात्मक और विचारात्मक कोटि के हैं। ठाकुर जगमोहन सिंह के निबंधों में ग्रामीण प्रकृति का चित्रण मनोवैज्ञानिक तरीके से किया है।

बोध प्रश्न –

- भारतेंदु युग के निबंधकार के नाम बताइए।

द्विवेदी युग

भारतेंदु युग में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निबंध की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी। इसे आगे बढ़ाने का कार्य द्विवेदी युग में हुआ है। द्विवेदी युग में भाषा एवं व्याकरण से संबंधित सबसे अधिक निबंध लिखे गए हैं। इसी के साथ कई क्षेत्र के आधार पर निबंध लिखे गए हैं, लेखक तथा

ग्रंथों की परिचयात्मक आलोचना संबंधी निबंध लिखे गए हैं। साहित्यशास्त्र-संबंधी तथा सामयिक –साहित्य संबंधित निबंध द्विवेदी युग में लिखे गए हैं। विषयों की दृष्टि से द्विवेदी युग में सात मुख्य विषय को प्रतिपादित किया गया है। जैसे – साहित्य एवं भाषा, वैज्ञानिक आविष्कार, पुरातत्व एवं इतिहास, भूगोल, जीवन-चरित, अध्यात्म तथा अन्य उपयोगीविषय हैं।

द्विवेदी युग महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जाना जाता है। द्विवेदी जी 1903 में 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन कार्य संभाला है। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से इन्होंने लेखकों की भाषा को संस्कारित व परिमार्जित किया, जिसका प्रभाव लेखकों पर पड़ा। 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी पाठकों में नवजागरण का संदेश दिया है।

द्विवेदी युग के प्रमुख निबंधकार महावीर प्रसाद द्विवेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पं. पद्मसिंह शर्मा, अध्यापक पूर्णसिंह आदि ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ही सर्वप्रथम लेखकों एवं पुस्तकों के परिचय रूप में निबंध लेखन की शुरुआत की है। इनके निबंध टिप्पणियों के रूप में हैं। आत्मनिवेदन, प्रभात, सुतापराधे जनकस्य दंड, वैदिक देवता आदीं निबंधों में व्यक्तित्व व्यंजना के तत्व मिलते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनके निबंधों को 'बातों का संग्रह' कहा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बेकन के निबंधों को आदर्श माना और उनका हिन्दी अनुवाद 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से किया है। इनका प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'रसज्ञ रंजन' है। इनके कुछ प्रमुख निबंध 'कविता और कविता', 'प्रतिभा', 'साहित्य की महत्ता', 'कवि कर्तव्य', 'लोभ', और 'मेघदूत' आदि हैं।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने निबंध बहुत कम ही लिखे हैं लेकिन उनका नाम विख्यात है। इनकी विचारधारा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, चेतना, प्रगतिशील चिंतन, परिष्कृत व्यंग्य और सामाजिक विषयों के प्रति जागरुकतापूर्ण प्रभाव विद्यमान है। गुलेरी जी के निबंधों में उच्च कोटी का पांडित्य एवं व्यंग्य पाया जाता है। उनके निबंध संग्रह – 'गोबर गणेश संहिता', 'कछुआ धर्म' और 'मोहि कुठाँव' आदि है।

पं. पद्मसिंह शर्मा ने चरितात्मक एवं संस्मरणात्मक निबंध की रचना की है। इनके निबंध संग्रह 'पद्म-पराग' और 'पद्म-मंजरी' हैं। इन्होंने विचारात्मक, भावात्मक, संस्मरणात्मक, आलोचनात्मक अदि कई प्रकार के निबंध लिखे हैं।

अध्यापक पूर्णसिंह को द्विवेदी युग के प्रतिष्ठित निबंधकारों में उनकी गणना की जाती है। इनकी निबंधों में भावप्रवणता, गंभीर चिंतन, प्रगतिशील विचारधारा, आध्यात्मिकता, नैतिकता, मानवतावादी विचार आदि दिखायी देता है। इनके प्रमुख निबंध – कन्यादान, नयनों की गंगा, मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, पवित्रता, आचरण की सभ्यता और अमेरिका का मस्त योगी वोल्ट व्हिटमैन आदि है।

बोध प्रश्न –

- द्विवेदी युग के निबंधकारों का क्या विषय रहा है ?

शुक्ल युग –

हिन्दी निबंध का तृतीय चरण को शुक्ल युग के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने हिन्दी निबंधों को एक नया आयाम एवं नई दिशा देने का काम किया है। शुक्ल जी सहज सिद्धांतवादी, अध्ययनशील, चिंतक एवं सशक्त निबंधकार थे। इस युग को हिन्दी निबंध का 'उत्कर्ष काल' कहा गया है। इस युग के प्रमुख निबंधकार – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, बाबू गुलाब राय, बेचन शर्मा उग्र, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, रायकृष्ण दास, वासुदेव शरण अग्रवाल, शांतिप्रिय द्विवेदी, रघुवीर सिंह आदि आते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का नाम हिन्दी निबंध विधा में प्रख्यात हैं। उनके निबंध चिंतामणि भाग -1 और चिंतामणि भाग-2 नाम से संगृहीत हैं। वे साधन संपन्न शिल्पी हैं। उनमें सृजक की सम्पूर्ण निष्ठा है। इन्होंने तीन प्रकार के निबंध लिखे हैं, जो मनोविकार संबंधी, सैद्धांतिक समीक्षा संबंधी एवं व्यवहारिक समीक्षा संबंधी आदि। शुक्ल के निबंध विषय प्रधान एवं व्यक्ति प्रधान होते हैं। भाषा की दृष्टि से उनके निबंधों को हिन्दी निबंध का आदर्श कहा जा सकता है। उनके कुछ प्रमुख निबंध इस प्रकार हैं – कविता क्या है ?, श्रधा और भक्ति, करुणा, घृणा, लज्जा और ग्लानी, लोभ और प्रीति, ईर्ष्या, क्रोध आदि।

बाबू गुलाबराय के प्रसिद्ध निबंध संग्रह ठलुआ-क्लब, फिर निराशा क्यों, मेरी असफलताएँ आदि हैं। इनके ललित निबंध मेरा मकान, मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ, प्रीतिभोज आदि है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का भी निबंध में उत्कृष्ट स्थान है। इनके मुख्य निबंध अतीत स्मृति, उत्सव, रामलाल पंडित, श्रदांजलि के दो फूल आदि हैं। इनके निबंधों में मौलिक विचार व नूतन शैली को देखा जाता है। इनके मुख्य निबंध संग्रह – पंचपात्र, विश्व साहित्य, मकरंद बिंदु, प्रबंध पारिजात, त्रिवेणी, कुछ और कुछ यात्री आदि है।

शुक्ल युग के महत्वपूर्ण निबंधकार में शांतिप्रिय द्विवेदी का नाम आता है। इन्होंने आलोचनात्मक निबंध की रचना की है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपने निबंधों में सांस्कृतिक विषयों पर लिखा है। रघुवीर सहाय के निबंधों का विषय ऐतिहासिक है। इन्होने अनेक ललित निबंध लिखे हैं। ऐसे कई निबंधकार हैं, जो शुक्ल युग को प्रोत्साहित किया है।

बोध प्रश्न –

- शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकार कौन है ?

शुक्लोत्तर युग –

यह युग आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद में आता है। शुक्ल जी ने वैचारिक व मनोविकार संबंधी निबंध को उत्कर्ष की चरम ऊँचाई पर पहुँचा दिया था। शुक्लोत्तर युग के निबंधकार विचारात्मक, समीक्षात्मक और व्यक्तित्वव्यंजक आधारित निबंधो की रचना की है। इस युग का आरंभ 1940 ई. से माना जाता है। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि देश की राजनीति और सामाजिक सम्सायों में काफी बदलाव आया. यह युग स्वतंत्रता एवं परतंत्रता दोनों से मिला जुला समय था। इस काल में राष्ट्रीय चेतना, समीक्षात्मक, विचारात्मक तथा ललित निबंधों की रचना हुई। इस युग के प्रमुख निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ। नगेन्द्र, रामधारी सिंह दिनकर, जैनेंद्र कुमार, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ और हरिशंकर परसाई आदि।

हजारी प्रसाद द्विवेदी शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबंधकार है। इनके प्रमुख निबंध संग्रह इस प्रकार से हैं – कुटज, कल्पलता, अशोक के फूल, विचार प्रवाह, विचार और तर्क, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, गतिशील चिंतन, नाख़ून क्यों बढ़ते हैं, आम फिर बौरा गए आदि। द्विवेदी के निबंधों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण मिलता है और मानव मूल्यों का विश्लेषण पाया जाता है। द्विवेदी जी के निबंधों का विषय व्यापक है। इनकी शैली विषय के अनुरूप बदलती है। द्विवेदी के निबंधों में गंभीर शोध और शास्त्रीय चिंतन है। भावों का मनौवैज्ञानिक और काव्यशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। वे संबंधित विषय की पूरी समझ देते हैं इसलिए इनके निबंधों में विषय प्रधान होता है।

इस युग में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रमुख निबंध संग्रह इस प्रकार से हैं – हिन्दी साहित्य 20वीं. शताब्दी, आधुनिक साहित्य, नया साहित्य : नए प्रश्न, आदि हैं। शांतिप्रिय द्विवेदी का नाम शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबंधकारों में से एक हैं। इन्होंने समीक्षात्मक निबंध लिखे हैं। इनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं – संचारिणी, युग और साहित्य, धरातल, साकल्य, वृंत और विकास आदि।

रामधारी सिंह दिनकर ने भी निबंध की रचना की है। इनके निबंध संग्रह इस प्रकार से हैं – अर्धनारीश्वर, हमारी सांस्कृतिक एकता, प्रसाद, पंत और मैथिलीशरण, राष्ट्रभाषा,मिट्टी की ओर, रेती के फूल और राष्ट्रीय साहित्य आदि। इनके निबंधों में मानवीय आस्था दिखायी देता है। रामधारी सिंह दिनकर के निबंधों में उनका विचारक पक्ष ही उभरकर आया है।

विद्यानिवास मिश्र का भी शुक्लोत्तर युग निबंध में महत्वपूर्ण स्थान है। वे ललित निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके निबंधों में भारतीय के प्रति स्नेह व आस्था की झलक मिलती है। मिश्र जी प्रमुख निबंध चितवन की छाँह, तुम चंदन हम पानी, आँगन की पंछी, मैंने सिल पहुँचाई, मेरे

राम का मुकुट भीग रहा है, हल्दी दूब, कंटीले तारों के आर-पार, कौन तू फूलवा बीनन हारी, वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं, कदम की फूली दल आदि हैं।

कुबेरनाथ राय का हिन्दी ललित निबंधों में महत्वपूर्ण योगदान है। इनके निबंधों का विषय व्यक्तिप्रधान, ज्ञानवर्धन, आकर्षक एवं मनोरंजक हैं। कुबेरनाथ राय के प्रमुख निबंध इस प्रकार से हैं- जम्बुक, देह वल्कल, विरूपाक्ष, प्रिया नीलकंठी, निषाद बाँसुरी, रस आखेटक, पर्णमुकुट, महाकवि की तर्जनी, कामधेनु आदि हैं।

बोध प्रश्न –

- हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध संग्रहों के नाम बताइए।

2.4: पाठ सार

निबंध के इतिहास को चार युगों में विभाजित किया है – जैसे- भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग आदि। विभिन्न युगों में अनेक निबंधकार हुए हैं। भारतेंदु यगु से निबंध की शुरुआत हुई है। द्विवेदी यगु में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निबंध की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी। हिन्दी निबंध का तृतीय चरण को शुक्ल युग के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने हिन्दी निबंधों को एक नया आयाम एवं नई दिशा देने का काम किया है। शुक्लोत्तर युग के निबंधकार विचारात्मक, समीक्षात्मक और व्यक्तित्वव्यंजक आधारित निबंधो की रचना की है। इस युग का आरंभ 1940 ई। से माना जाता है. इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि देश की राजनीति और सामाजिक सम्सायों में काफी बदलाव आया।

2.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुए है।

1. निबंध एक गद्य विधा है. जिसमें निबंधकार अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।
2. निबंध लेखन के विभिन्न प्रकार हैं।
3. निबंध के इतिहास में विभिन युगों का योगदान है।
4. अनेक निबंधकारों के बारे में जानकारी प्राप्त किए हैं।

2.6 : शब्द संपदा

1. भोज पत्र - प्राचीन काल में लिखनेके काम आने वाली एक विशेष प्रकार के वृक्ष की छाल
2. सारगर्भित - जिसमें कुछ महत्त्व की बात हो, सार पूर्ण, सारयुक्त
3. पांडित्य - पंडित होने की अवस्था या भाव, विद्वता, पंडिताई

4. भावात्मक - भावपूर्ण, भावयुक्त
5. पुरातन - प्राचीन, पुराना
6. अधिवेशन - किसीआधिकारिक सभ या समिति का सम्मलेन, बैठक
7. मनोवैज्ञानिक - मनोविज्ञान से संबंध रखने वाला
8. अध्यात्मिक - अध्यात्म या धर्म संबंधी, परमात्मा या आत्मा से संबंध रखने वाला .
9. नैतिकता - नीतिशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान एवं उसके अनुरूप किया जाने वाला आचरण
10. उत्कर्ष - उन्नति, विकास, समृद्धि
11. लोभ - दूसरे की धनसंपति या कोई वस्तु लेने की तीव्र इच्छा-, कामना, लालसा, लालच आदि.
12. प्रीति - हर्ष, आनंद, प्रेम, प्यार, अनुराग
13. मनोविकार - मन की भावना, मन में उठने वाल कोई भाव या विचार
14. ललित - मनोहर, कोमल, सुंदर, रमणीय, प्रिय, क्रीडाशील
15. तर्जनी - अँगूठा और मध्यमा के बीच की उँगली

2.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खडं –(अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए। 500

1. निबंध का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. निबंध लेखन विकास के युग को स्पष्ट कीजिए।
3. प्रमुख निबंधकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खडं –(ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए। 200

1. भारतेंदु युग के निबंध पर प्रकाश डालिए।
2. शुक्लोत्तर युग के निबंध को स्पष्ट कीजिए।

3. द्विवेदी युग के निबंधकारों का परिचय दीजिए।

खडं –(स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन कब संभाला ?

   A) 1900 B) 1903 C) 1905 D) 1910

2. 'हमारी सांस्कृतिक एकता' निबंध के लेखक कौन है?

   A) विद्यानिवास मिश्र B) कुबेरनाथ राय

   C) रामधारी सिंह 'दिनकर' D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

3. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध के निबंधकार कौन है?

   A) विद्यानिवास मिश्र B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

   C) पं. पद्म शर्मा D) उपरोक्त में से कोई नहीं

4. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी का निबंध कौनसा है ?

   A) अतीत स्मृति B) उत्सव

   C) श्रदांजलि के दो फूल D) उपरोक्त सभी

5. 'शिवशंभू के चिट्ठे' किस लेखक का निबंध है ?

   A) बालकृष्ण भट्ट B) भारतेंदु C) बालमुकुंद गुप्त D) प्रताप नारायण मिश्र

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. "यदि पद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की"____________ने कहा है .
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी _________ प्रकार के निबंधकार हैं ?
3. रामधारी सिंह दिनकर __________ युग के निबंधकार हैं
4. अशोक के फूल के निबंधकार ___________ हैं

III. सुमेल कीजिए

1. दिल्ली दरबार दर्पण	(अ) विद्यानिवास मिश्र
2. साहित्य की महत्ता	(आ) हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. मेरा मकान	(इ) बाबू गुलाब राय
4. तुम चंदन हम पानी	(ई) महावीर प्रसाद द्विवेदी
5. विचार और तर्क	(उ) भारतेंदु हरिश्चंद्र

2.8 : पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेन्द्र

3. नए निबंध – श्यामजी गोकुल वर्मा

4. निबंध एवं पत्र लेखन – त्रिलोचन दुबे

3.हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी

इकाई 3 : बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ: बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' की विवेचना

3.3.1 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध की विषय वस्तु

3.3.2 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का प्रयोजन

3.3.3 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध में व्यक्त वैचारिकता

3.3.4 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का भाषा सौष्ठव

3.3.5 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का शैली सौन्दर्य़

3.4 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का सार

3.5 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 : प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी काल के भारतेंदु युग को नवजागरण काल भी कहा जाता है। यह एक नई शुरुआत थी जहाँ पर हिन्दी साहित्य में गद्य का आरंभ हुआ। भारतेंदु युग में कई कवियों तथा लेखकों ने योगदान दिया जिनमें से एक बालकृष्ण भट्ट जी है। बालकृष्ण भट्ट जी प्रमुख रूप से एक निबंधकार के रूप में सामने आए। इन्होंने 300 से भी अधिक निबंध लिखे हैं। यह निबंध सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक कई विचारधाराओं पर गहन चिंतन प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत निबंध साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास काफी प्रसिद्ध निबन्ध है। इस निबंध में इन्होंने हिन्दी साहित्य के आदिकाल, भक्ति काल से भी पहले लिखे गए साहित्य की बात की है। आर्य जाति द्वारा लिखित साहित्य और उसके पीछे कारणों का विश्लेषण हमें इस निबंध में देखने को मिलेगा। इस निबंध की भाषा अत्यंत साधारण और प्रभावपूर्ण है। एक गहरे विषय को बालकृष्ण भट्ट बड़ी ही सादगी से हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। किसी भी देश का साहित्य उस देश में रहने वाले नागरिकों की मानसिकता को व्यक्त करता है। उनका सोचना, रहन-सहन, खान-पान आदि सब उनके साहित्य के द्वारा ही पता चलता है। जब हम इतिहास पढ़ते हैं तो हमें

केवल ऐतिहासिक परिस्थितियों के बारे में जानकारी मिलती है लेकिन जब हम साहित्य पढ़ते हैं तो हमें उन लोगों की मानसिकता और वैचारिकता का भी पता चलता है। लोगों के अंदर क्रोध, स्नेह, अंहकार आदि में से कौन सी भावना अधिक है उसका भी पता चलता है। इस निबंध के माध्यम से लेखक हमें भारत में किस तरह से समय के अनुसार लोगों के विचारों में अंतर आया की जानकारी देते हैं।

3.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन में उपरांत आप -

- बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित निबंध 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' में व्यक्त वैदिक साहित्य की विशेषताओं के बारे में जन सकेंगे।
- समाज तथा साहित्य में आर्यों के योगदान के बारे में जान सकेंगे।
- समाज पर उपनिषदों के प्रभाव को समझ सकेंगे।
- रामायण और महाभारत में अंतर को समझ सकेंगे।
- संस्कृत भाषा के विकास और उसके उत्कृष्ट काल की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली, मराठी, बंगाली आदि भाषाओं की विशेषताएँ जान सकेंगे।

3.3 : मूल पाठ : बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' की विवेचना

प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है। जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है। वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सकते हैं। मनुष्य का मन जब शोक-संकुल, क्रोध से उद्दीप्त या किसी प्रकार की चिंता से दोचित्ता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन रहती है; उस समय उसके कंठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी या तो फुटही ढोल सामान बेसुरी, बेताल, बेलय या करुणापूर्ण, गदगद तथा विकृत-स्वर-संयुक्त होती है। वही जब चित्त आनंद की लहरी से उद्वेलित हो नृत्य करता है और सुख की परंपरा में मग्न रहता है उस समय मुख विकसित कमल सा प्रफुल्लित नेत्र मानो हँसता-सा और अंग-अंग चुस्ती और चालाकी से फिरहरी की तरह फरका करते हैं। कंठ-ध्वनि भी तब बसंत मदमत्त कोकिला के कंठ-रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भाती है। मनुष्य के संबंध में इस अनुल्लंघनिय प्राकृतिक नियम का अनुसरण प्रत्येक देश का साहित्य भी करता है, जिसमें कभी को क्रोधपूर्ण भयंकर गर्जन, कभी को प्रेम का उच्छवास, कभी को शोक और परितापजनित हृदय-विदारी करुणा-निस्वन, कभी को वीरता गर्व से बाहुबल के दर्प में भरा हुआ सिंहनाद कभी को भक्ति के उन्मेष से चित्त की द्रवता का परिणाम अश्रुपात आदि अनेक प्रकार के

प्राकृतिक भावों का उद्गार देखा जाता है। इसलिए साहित्य यदि जनसमूह(Nation) के चित्त को चित्रपट कहा जाए तो संगत है। किसी देश का इतिहास पढ़ने से केवल बाहरी हाल हम उस देश का जान सकते हैं पर साहित्य के अनुशीलन से कौम के सब समय-समय के आभ्यंतरिक भाव हमें परिस्फुट हो सकते हैं।

हमारे पुराने आर्यों का साहित्य वेद है। उस समय आर्यों की शैशवावस्था थी, बालकों के समान जिनका भाव, भोलापन, उदार भाव, निष्कपट व्यवहार, वेद के साहित्य को एक विलक्षण तथा पवित्र माधुर्य प्रदान करते हैं। वेद जिन महापुरुषों के हृदय का विकास था। वे लोग मनु और याज्ञवल्क्य के समान समाज के आभ्यंतरिक भेद, वर्ण-विवेक आदि के झगड़ों में पड़ समाज की उन्नति या अवनति की तरह-तरह की चिंता में नहीं पड़े थे। कणाद या कपिल के समान अपने-अपने शास्त्र के मूलभूत बीजसूत्रों को आगे कर प्राकृतिक पदार्थों के तत्वों की छान में दिन-रात नहीं डूबे रहते थे; न कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष आदि कवियों के संप्रदाय के अनुसार वे लोग कामिनी के विभ्रम-विलास और लावण्य-लीला-लहरी में गोते मार मार प्रमत्त हुए थे। प्रातः काल उदयोन्मुख सूर्य की प्रतिभा देख उनके सीधे-साधे चित्त ने बिना किसी विशेष छानबीन किए इसे अज्ञात और अजय शक्ति समझ लिया। इसके द्वारा वे अनेक प्रकार का लाभ देख कानन-स्थित-विहंग-कूजन समान कलकल रव से प्रकृति की प्रभात वंदना का साम गाने लगे; जल-भर-नत-श्यामला मेघमाला का नवीन सौंदर्य देख पुलकित गात्र हो कृतज्ञता-सूचक उपहार की भाँति स्त्रोत का पाठ करने लगे; वायु जब प्रबल वेग से बहने लगी तो उसे भी एक ईश्वरीय शक्ति समझ उसको शांत करने को वायु की स्तुति करने लगे इत्यादि। वे ही सब ऋक और साम की पावन ऋचाएँ हो गईं। उस समय अब के समान राजनीतिक अत्याचार कुछ न था इसी से उनका साहित्य राजनीति की कुटिल उक्ति युक्ति से मालिन नहीं हुआ था। नए आए हुए आर्यों की नूतन ग्रथित समाज के संस्थापन में सब तरह की अपूर्णता थी सही पर सबका निर्वाह अच्छी तरह होता जाता था; किसी को किसी कारण से किसी प्रकार का अस्वास्थ्य न था; आपस में एक दूसरे के साथ अब का सा बनावट का कुटिल बर्ताव न था। इसलिए उस समय के उनके साहित्य वेद में भी कृत्रिम भक्ति, कृत्रिम सौहार्द, कपटवृति, बनावट और चुना-चुनी ने स्थान नहीं पाया। उन आर्यों का धर्म अबके समान गला घोटने वाला न था। सबके साथ सबकी खान-पान द्वारा सहानुभूति रहती थी। उनके बीच धार्मिक मनुष्य अबके धर्मध्वजियों समान दांभिक बन महाव्याधि सदृश लोगों के लिए गलग्रह न थे। सिधाई, भोलापन और उदार भाव उनके साहित्य के एक-एक अक्षर से टपक रहा है। एक बार महात्मा ईसा एक सुकुमारमति बालक को अपने गोद में बैठाकर अपने शिष्यों की ओर इशारा करके बोले कि जो कोई छोटे बालकों के समान भोला ना बने उसका स्वर्ग के राज्य में कुछ अधिकार नहीं है। हम भी कहते हैं जो सुकुमार चित्त वेद-भाषी इन आर्यों की तरह पद-पद में ईश्वर का भय रख, प्राकृतिक पदार्थों के सौंदर्य पर मोहित हो, बालकों के समान सरलमति न हो उसका स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना अति दुष्कर है।

इन्हीं प्राकृतिक पदार्थों का अनुशीलन करते-करते इन आर्यों को ईश्वर के विषय में जो जो भाव उदय हुए वे ही सब एक नए प्रकार का साहित्य उपनिषद के नाम से कहलाए। जब इन आर्यों

की समाज अधिक बढ़ी और लोगों की रीति-नीति और बर्ताव में विभिन्नता होती गई तब सबों को एकता के सूत्र में बद्ध रखने के लिए और अपने-अपने गुण कर्म से लोग चल विचल हो सामाजिक नियमों को जिसमें किसी प्रकार की हानि न पहुँचाएँ इसलिए स्मृतियों के साहित्य का जन्म हुआ। मनु, अत्री, हारित, याज्ञवल्क्य आदि ने अपने-अपने नाम की संहिता बना विविध प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक और धर्म संबंधी विषयों का सूत्रपात किया। इन्हीं के समकालीन गौतम, कणाद, कपिल, जैमिनी, पतंजलि आदि हुए जिन्होंने अपने-अपने सोचने का परिणाम रूप दर्शन शास्त्रों की बुनियाद डाली। यहाँ तक जो साहित्य हुए यद्यपि वेद की भाषा का अनुकरण उनमें होता गया परंतु नित्य नित्य उनकी भाषा अधिक अधिक सरल, कोमल और परिष्कृत होती गई, तथापि उनकी गणना वैदिक भाषा में ही की जाती है। इन स्मृतियों और आर्य ग्रन्थों की भाषा को हम वैदिक और आधुनिक संस्कृत के बीच की भाषा कह सकते हैं। अब से संस्कृत के दो खंड होते चले जो वेद तथा लोक के नाम से कह जाते हैं। पाणिनि के सूत्रों में, जो संस्कृत पाठियों के लिए कामधेनु का काम दे रहे हैं और जिनसे वैदिक और लौकिक सब प्रयोग सिद्ध होते हैं, लोक और वेद की निरख अच्छी तरह की गई है। और इसी वेद और लोक के अलग-अलग भेद से साबित होता है कि संस्कृत किसी समय प्रचलित भाषा थी जो लोगों के बोलचाल के बर्ताव में लाई जाती थी।

वेद के उपरांत रामायण और महाभारत साहित्य के बड़े-बड़े अंग समझ गए। रामायण के समय भारतीय सभ्यता का प्रेमोच्छ्वास- परिप्लावित नूतन यौवन था, किंतु महाभारत के समय भारतीय सभ्यता क्षतिग्रस्त हो वार्द्धक्य भाव को पहुँच गई थी। रामायण के प्रधान पुरुष रघुकुलावतंस श्रीरामचंद्र थे और भारत के प्रधान पुरुष बुद्धि की तीक्ष्णता के रूप, कूट युद्ध विशारद, भगवान् वासुदेव श्रीकृष्ण या उनके हाथ की कठपुतली युधिष्ठिर थे। रामायण के समय से भारत के समय में लोगों के हृद्गत भाव में कितना अंतर हो गया था कि रामायण में दो प्रतिद्वंद्वी भाई इस बात के लिए विवाद कर रहे थे कि यह समस्त राज्य और राज्य सिंहासन हमारा नहीं है यह सब तुम्हारे हाथ में रहे, अंत में रामचंद्र ने भरत को विवाद में पराभूत कर समस्त साम्राज्य उनके हस्तगत कर आप आनंद निर्भर-चित्त हो सस्त्रीक बनवासी हुए। वही महाभारत में दो दायाद भाई इस बात के लिए कलह करने पर सन्नद्ध हुए कि जितने में सूई का अग्रभाग ढंक जाए इतनी पृथ्वी भी बिना युद्ध के हम ना देंगे| "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव"| परिणाम में एक भाई दूसरे पर जय लाभ कर तथा जंघा में गदाघात और मस्तक पर पदाघात से उसे बध कर भाई के राज्य सिंहासन पर आरूढ़ हो सुख में फूल अनेक तरह के यज्ञ और दान में प्रवृत्त हुआ। रामायण और महाभारत के आचार्य क्रम से कवि कुलगुरू वाल्मीकि और व्यास थे। पृथ्वी के और-और देशों में इनके समान या इनसे बढ़कर कवि नहीं हुए ऐसा नहीं है। यूनान देश में होमर, रूम देश में वरजिल, इटली में डेंटी, इंग्लैंड में चासर और मिल्टन अपनी-अपनी असाधारण प्रतिभा से मनुष्य जाति का गौरव बढ़ाने में कुछ कम न थे। परंतु विचित्र कल्पना और प्रकृति के यथार्थ अनुकरण में चिरंतन वृद्ध वाल्मीकि के समान होमर तथा मिल्टन किसी अंश में नहीं बढ़ने पाए, जिनकी कविता के प्रधान नायक श्रीरामचंद्र आर्य जाति के प्राण, दया के अमृतसागर, गांभीर्य और पौरुष दर्प की मानों सजीव प्रतिकृति थे। वे प्रीति और समभाव से महा नीच जाति चांडाल तक को गले से लगाते थे। उन्होंने लंकेश्वर से प्रबल प्रतिद्वंदी शत्रु को भी कभी तृण के बराबर भी नहीं समझा। स्वर्णमंडित सिंहासन और तपोवन में

पर्णकुटी उन्हें एक-सी सूखकारी हुई। उनके स्मितपूर्वाभिभाषित्व और उनकी बोलचाल की मुग्ध माधुरी पर मोहित हो दंड कारण्य की असभ्य-जाति ने भी अपने को उनका दास माना। अहा ! धन्य श्रीरामचंद्र का अलौकिक माहात्म्य, धन्य वाल्मीकि की कल्पना-सरसी जिसमें ऐसे-ऐसे स्वर्ण कमल प्रस्फुटित हुए।

काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है। वाल्मीकि ने जिन-जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचंद्र में बरकाया था वे ही सब व्यास के समय गुण हो गई, जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके न जाने पावे। भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अंत में इसी बात पर है। शत्रु-संहार और निज कार्य-साधन निमित्त व्यास ने महाभारत में जो-जो उपदेश दिए हैं और राजनीति की काट-ब्यौंत जैसी-जैसी दिखाई है उसे सुन बिस्मार्क सरीखे इस समय के राजनीति के मर्म में कुशल राजपुरुषों की अकिल भी चलने चली जाती होगी। इससे निश्चय होता है कि प्रभुत्व और स्वार्थ-साधन तथा प्रवंचना परवश भारतवर्ष उस समय कहाँ तक उदार भाव, संवेदना आदि उत्तम गुणों से विमुख हो गया था। युधिष्ठिर धर्म के अवतर और सत्यवादी प्रसिद्ध है, पर उनकी सत्यवादिता निज कार्य-साधन के समय सब खुल गई।"अश्वत्थामा हतः नरो वा कुंजरो वा" इत्यादि कितने उदाहरण इस बात के हैं विस्तार भय से नहीं लिखते।

महाभारत के उपरांत भारत और का और ही हो गया। इसकी दशा के परिवर्तन के साथ ही साथ इसके साहित्य में भी बड़ा परिवर्तन हो गया। उपरांत बौद्धों का जोर हुआ। ये सब वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी थे। वेद की भाषा संस्कृत थी इसलिए इन्होंने संस्कृत को बिगाड़ प्राकृत भाषा जारी की। तब से संस्कृत सर्वसाधारण के बोलचाल की भाषा न रही। फिर भी संस्कृत-भाषी उस समय बहुत से लोग थे, जिन्होंने इस नई भाषा को प्राकृत नाम दिया जिसका अर्थ ही यह है कि प्राकृत अर्थात नीचों की भाषा। अतएव संस्कृत नाटकों में नीच पात्र की भाषा प्राकृत और उत्तम पात्र ब्राह्मण या राजा आदि की भाषा संस्कृत रखी गई है। कुछ काल उपरांत यह भाषा भी बहुत उन्नति को पहुंची। शोरसैनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची आदि इसके अनेक भेद हैं इसमें भी बहुत से साहित्य के ग्रंथ बने। गुणाढय कवि का आर्यावध्द लक्षश्लोक का ग्रंथ बृहत्कथा प्राकृत ही में है। सिवा इसके शालीवाहन, सप्तशती आदि कई एक उत्तम प्राकृत के ग्रंथ और भी मिलते हैं। नंद और चंद्रगुप्त के समय इस भाषा की बड़ी उन्नति की गई। जैनियों के सब ग्रंथ प्राकृत ही में हैं। उनके स्रोत पाठ आदि भी सब इसी में है। इससे मालूम होता है कि प्राकृत किसी समय वेद की भाषा के समान पवित्र समझी गई थी।

संस्कृत यद्यपि बोलचाल की भाषा इस समय न रह गई थी, पर हर एक विषय के ग्रंथ इसमें एक से एक बढ़-चढ़कर बनते गए। और साहित्य की तो यहाँ तक तरक्की हुई कि कालिदास आदि कवियों की उक्ति युक्ति से मुकाबिले वेद के भद्दा और रुखा साहित्य अत्यंत फीका मालूम होने लगा। कालिदास की एक-एक उपमा पर और भवभूति, भारवी, श्रीहर्ष, बाण की एक-एक छटा पर वेद का उमदा से उमदा सूक्त, जिनमें हमारे पुराने आर्यों ने मरपच साहित्य की बड़ी भारी कारीगरी दिखलाई

है, न्यौछावर है। संस्कृत के साहित्य के लिए विक्रमादित्य का समय "अगस्टिन पीरियड" कहलाता है अर्थात उस समय संस्कृत, जहाँ तक उसके लिए परिष्कृत होना संभव था, अपनी पूर्ण सीमा तक पहुँच गई थी। यद्यपि भारवी, माघ, मयूर, प्रभृति कई एक उत्तम कवि धाराधिपति भोजराज के समय तक और उनके उपरांत भी जगन्नाथ पंडितराज तक बराबर होते ही गए किंतु संस्कृत की परिष्कृत होने की सामग्री उस समय तक पूरी हो चुकी थी। भोज का समय तो यहाँ तक कविता की उन्नति का था कि एक-एक श्लोक के लिए असंख्य इनाम राजा भोज कवियों को देते थे। वेद का साहित्य उस समय यहां तक दब गया था कि छांदस मूर्ख की एक पदवी रक्खी गई थी। केवल पाठ मात्र वेद जानने वाले छांदस कहलाते थे और वे अब तक भी निरे मूर्ख होते आए हैं|

बौद्धों के उच्छेद के उपरांत एक ज़माना पुराण के साहित्य का भी हिंदुस्तान में हुआ। उस समय बहुत से पुराण, उप-पुराण और संहिताएँ दो ही चार सौ वर्ष के हेर-फेर में रची गई। अब हम लोगों में जो धर्म-शिक्षा, समाज-शिक्षा और रीति-नीति प्रचलित है वह सब शुद्ध वैदिक एक भी नहीं है। थोड़े से ऐसे लोग हैं जो अपने को स्मार्त मानते हैं, उनमें तो अलबत्ता अधिकांश वेदोक्त कर्म का यत्किंचित् प्रचार पाया जाता है। सो भी केवल नाम मात्र को, पुराण उसमें भी बीच-बीच आ घुसा है। हमारी विद्यमान छिन्न-भिन्न दशा, जिसके कारण हज़ार-हज़ार चेष्टा करने पर भी जातीयता हमारे में आती ही नहीं, सब पुराण की ही कृपा है। जब तक शुद्ध वैदिक साहित्य हम लोगों में प्रचलित था तब तक जातीयता के दृढ़ नियमों में जरा भी अंतर नहीं होने पाया था। पुराणों के साहित्य के प्रचार से एक बड़ा लाभ भी हुआ कि वेद के समय की बहुत सी घिनौनी ऋतियों और रस्मों को, जिनके नाम लेने से भी हम घिना उठते हैं और उन सब महाघोर हिंसाओं को, जिनके सबब से अपने अहिंसा धर्म के प्रचार करने में बौंद्धों को सुविधा हुई थी, पुराणकर्ताओं ने उठाकर शुद्ध सात्विकी धर्म को विशेष स्थापित किया। अनेक मतमतांतरों का प्रचार भी पुराणों ही की करतूत है। पुराणवाले तो पंचायतन पूजन ही तक से संतोष करके रह गए। तंत्रों ने बड़ा संहार किया उन्होंने अनेक शुद्र देवता भैरों, काली, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत तक के पूजन को फैला दिया। मद-मांस के प्रचार को, जिसे बौंद्धों ने तमोगुणी और मलिन समझ उठा दिया था, तांत्रिकों ने फिर बहाल किया। पर बलवीर्य की पुष्टता से, जो मांसाहार का प्रधान लाभ था, ये लोग फिर भी वंचित ही रहे। निःसन्देह तांत्रिकों की कृपा न होती तो हिंदुस्तान ऐसा जल्द न डूबता। वेद के अधिकारी शुद्ध ब्राह्मण के लिए तांत्रिक दीक्षा या तंत्र मंत्र अति निषिद्ध है। ब्राह्मण तंत्र के पठन-पाठन से बहुत जल्द पतित हो सकता है यह जो किसी स्मृतिकार का मत है हमें भी कुछ-कुछ सयुक्तिक मालूम होता है। बहुत से पुराण तंत्रों के बाद बने। उनमें भी तांत्रिकों का सिद्धांत पुष्ट किया गया है।

हम ऊपर लिख आए हैं कि हिंदू जाति में कौमियत के छिन्न-भिन्न होने का सूत्रपात पुराणों के द्वारा हुआ और तंत्रों ने उसे बहुत ही बहुत पुष्ट किया। शैव,शाक्त, वैष्णव, जैन, बौद्ध इत्यादि अनेक जुदे-जुदे फिरके हो गए जिनमें इतना दृढ़ विरोध कायम हुआ कि एक दूसरे के मुँह देखने के रवादार ना हुए तब परस्पर का एका और सहानुभूति कहाँ रही। जब समस्त हिंदू जाति

की एक वैदिक संप्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारी जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिंदू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खंड हुए कि अब तक नए-नए धर्म और मत-प्रवर्तक होते ही जाते हैं। ये टुकड़े जितना वैष्णों में अधिक है उतना शैव-शाक्तों में नहीं और आपस में एक दूसरे के साथ मेल और खानपान जितना कम इनमें है उतना औरों में नहीं। राम के उपासक कृष्ण के उपासक से लड़ते हैं कृष्ण के उपासक रामोपास्कों से इत्तिफाक नहीं रखते। कृष्णोपासको में भी सत्यानाशी अनन्यता ऐसी आड़े आई है कि यह इनके आपस ही में बड़ा खटपट लगाए रहती है।

प्राकृत के उपरांत हमारे देश के साहित्य के दो नमूने और मिलते हैः एक पद्मावत, और दूसरा पृथ्वीराज रायसा। पद्मावत की कविता में तो किसी कदर कुछ थोड़ा-सा रस है भी पर पृथ्वीराज रायसा में तारीफ के लायक कौन-सी बात है यह हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आती। प्राकृत से उतरते-उतरते हमारी विद्यमान हिन्दी इस शक्ल में कैसे आई, इस बात का पता अलबत्ता रायसा से लगता है। मतमतांतर के साथ ही साथ हमारी भाषा भी गुजराती, मरहठी, बंगाली इत्यादि के भेद से प्रत्येक प्रांत की जुदी-जुदी भाषा हो गई। इन एकदेशी भाषाओं में बंगाली सबसे अधिक कोमल, मधुर और सरस है। मरहठी महाकठोर और कर्णकटु, तथा पंजाबी निहायत भद्दी, कठोर और रूखापन में उर्दू की छोटी बहन है। अब अपनी हिन्दी की ओर आइये। इसमें संदेह नहीं विस्तार में हिन्दी अपनी बहिनों में सबसे बड़ी है। ब्रजभाषा, बुंदेलखंडी, बैसवारे की तथा भोजपुरी इत्यादि इसके कई एक अवांतर भेद है। ब्रजभाषा में यद्यपि कुछ मिठास है पर यह इतनी जनानी बोली है कि इसमें शिवाय श्रृंगार के दूसरा रस आ ही नहीं सकता। जिस बोली को कवियों ने अपने लिए चुन रक्खा है वह बुंदेलखंड की बोली है। इसमें सब प्रकार के काव्य और सब रस समा सकते हैं। अपनी-अपनी पसंद निराली होती है, 'भिन्नरुचिर्हि लोकः'। हमें बैसवारे की मर्दानी बोली सबसे अधिक भली मालूम होती है। दूसरी भाषाएं जैसे मरहठी, गुजराती, बंगला की अपेक्षा कविता के अंश में हिन्दी का साहित्य बहुत चढ़ा हुआ है तथा संस्कृत से कुछ ही न्यून है। किंतु गद्य-रचना 'प्रोज़' हिन्दी का बहुत ही कम और पौछ है। सिवाय एक प्रेमसागर-सी दरिद्र रचना के इसमें और कुछ हई नहीं। जिसे हम इसके साहित्य के भंडार में शामिल करते। दूसरे उर्दू इसकी ऐसी रेढ़ मारे हुए हैं कि शुद्ध हिन्दी तुलसी, सूर इत्यादि कवियों की पद्य-रचना के अतिरिक्त और कहीं मिलती ही नहीं। प्रसंग प्राप्त अब हमें यहाँ उर्दू के साहित्य की समालोचना का भी अवसर प्राप्त हुआ है किंतु यह विषय अत्यंत ऊब पैदा करने वाला हो गया इससे इसे यहीं समाप्त करते हैं। उर्दू की समालोचना फिर कभी करेंगे।

3.3.1 विवेच्य निबन्ध की विषय वस्तु

बालकृष्ण भट्ट जी कहते हैं कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ पर रहने वाले नागरिकों के हृदय का स्वच्छ और आदर्श रूप होता है। वहाँ की कोई भी जाति जिस समय, जिस भाव से परिपूर्ण है या वह उस समय जिन भावों को अधिक महत्व देती है वे सभी भाव उस समय के

साहित्य की (छिद्रान्वेशष) समालोचना से अच्छी तरह प्रकट हो सकते हैं। अर्थात प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ पर रहने वाले नागरिकों के हृदय की स्पष्ट झलक दिखाता है। जब मनुष्य का मन दुख की संवेदना से भरा होता है। क्रोध से प्रदीप्त(जलना) या किसी चिंता से घिरा होता है तब उसके चेहरे की आकृति और छवि दूषित हो जाती है। वह उदासी से भरा और कांतिहीन लगने लगता है। ऐसी अवस्था में उसकी कंठ ध्वनि भी उसका साथ छोड़ देती है क्योंकि उसके कंठ से फटे हुए ढोल के समान बेसुरी, बिना ताल, बिना लय की या करुणा से भरी गद्गद विकृत आवाज निकलती है। दूसरी तरफ जब आनंद से भरा मन उत्तेजित होकर नृत्य करता है और सुख के संसार में डूब जाता है। उस समय उसका चेहरा विकसित होकर कमल के समान खिल जाता है। उसके नेत्र मानो हँसने लगते हैं। उसका प्रत्येक अंग चुस्ती और चालाकी से भर फिरहरि की तरह फड़कता है। उसकी आवाज में बसंत ऋतु में मदमस्त हुई कोयल की आवाज से भी अधिक मिठास होती है। उसकी आवाज मधुर और सुहानी हो उठती है और मन को बहाने लगती है। सुख में खुश और दुख में दुखी होना यह मनुष्य व्यवहार का अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियम है। इस नियम को संसार के सभी देशों का साहित्य स्वीकार करता है। तभी तो प्रत्येक देश के साहित्य में कभी क्रोध से पूर्ण भयंकर गर्जना होती है, कभी प्रेम के दर्द से भरी लम्बी गहरी सासें, कभी शोक संताप और पश्चाताप से भरे हृदय की करुण पुकार, कभी वीरता के दर्प में भरा बाहुबल के अहंकार से भरा हुआ सिंहनाद, कभी भक्ति के आलोक से मन की द्रवता पवित्रता प्राप्त होती है। जिसके कारण हृदय शुद्ध हो जाता है लेकिन आँखों से आँसू निकलने लगते हैं या अन्य प्रकार के प्राकृतिक भावों का उद्गार हमारे भीतर दिखाई देता है। इसलिए साहित्य को जनता के मन की फिल्म (चित्रपट) कहना तर्कसंगत ही है। जब हम किसी देश के इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हम उस देश के भौतिक या बाहरी हाल को ही जान सकते हैं। दूसरी तरफ साहित्य के अध्ययन से उस देश में समय-समय पर परिवर्तित होनेवाले भावों का ज्ञान हमें होता है।

बोध प्रश्न

- साहित्य को जनसमूह के चित्त का चित्रपट क्यों गया है?
- दुख और सुख की परिस्थितियों में मानव का व्यवहार किस प्रकार बदलता है?

किसी देश के इतिहास का अध्ययन करने से केवल उसकी राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का ही पता चलता है। हमारा अति प्राचीन वेद साहित्य आर्यों द्वारा रचित साहित्य है। यह आर्यों की बाल्यावस्था थी क्योंकि उनके साहित्य में किसी प्रकार की बनावट या आडंबर नहीं था। बालक मन के भाव, मासूमियत, उदार भाव, छल-कपट रहित व्यवहार जैसे गुण वेद साहित्य को एक विशिष्ट पवित्रता तथा मधुरता प्रदान करते हैं। जिन विद्वानों ने वेद का निर्माण किया वे लोग ऋषि याज्ञवल्क्य और मनु की भाँति नहीं थे। इन दोनों के समान उन लोगों ने समाज के आंतरिक भेद, वर्ण-विवेक जैसे झगड़ों में न पड़कर समाज की उन्नति या अवन्नति की चिंता नहीं की थी। यह विद्वान कणाद और कपिल की तरह भी नहीं थे क्योंकि

कणाद और कपिल स्वयं द्वारा रचित शास्त्रों के बीज सूत्रों की मदद से रात दिन प्राकृतिक पदार्थ की छानबीन में डूबे रहते थे। उन्हें समाज को लेकर कई सारी शंकाएं थी। बालकृष्ण भट्ट जी अन्य कवियों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कालिदास, भभूति, श्रीहर्ष, आदि कवियों की भाँति ये (वेद लिखने वाले) लोग कामिनी के विभ्रमविलास और लावण्य लीला लहरी (नारी के श्रंगारिक वर्णन) में डुबकियाँ मार कर आनंदित नहीं होते थे। इन्होंने अपने साहित्य को मानव जाति के विकास के लिए समर्पित किया था। प्रकृति में उपलब्ध साधनों सूर्य, वायु आदि के महत्व को जानकर उन पर साहित्य की रचना की। जैसे रोज सुबह सूर्य का उदय होना और मानव जाति पर उसका प्रभाव और आवश्यकता को जानकर इसकी प्रशंसा में उसकी वंदना करते हुए साहित्य लिखने लगे। इसी प्रकार जल से भरे मेघों का सौंदर्य देख उनका हृदय गद्गद हो जाता और उसे प्रकृति का उपहार समझ धन्यवाद स्वरूप स्त्रोत के रूप में उसका पाठ करने लगे। इसी प्रकार वायु के प्रबल प्रवाह को ईश्वरीय शक्ति समझकर उसे शांत करने के लिए वायु की स्तुति करने लगे। यही सब भविष्य में ऋगवेद और सामवेद की पवित्र ऋचाएँ बन गई। जब इतना सीधा और सरल साहित्य लिखा जा रहा था तब वर्तमान समय की तरह राजनीतिक अत्याचार नहीं होते थे। इसलिए उनका साहित्य राजनीति के टेढ़े-मेढ़े विचारों से दूषित नहीं हुआ था। आगे निबंधकार आर्यों के आगमन और उनके नवीन समाज की स्थापना के अधूरेपन का जिक्र करते हैं। जहाँ पर सबका निर्वाह अच्छी तरह से हो रहा था। किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं थी। सभी का व्यवहार निष्कपट था। आज लोगों के व्यवहार में स्वार्थ, बनावट और कुटिलता होती है वैसी उस समय नहीं थी। यही कारण था कि उनके रचित वेद साहित्य में भी बनावटी भक्ति, झूठा सौहार्द(बन्धुत्व), छल-कपट आडंबर और दिखावटी चुनाव का स्थान नहीं था। उनका धर्म वर्तमान धर्म के समान गला घोटनेवाला नहीं था। सबके साथ खानपान रहन-सहन आदि में सहानुभूति रहती थी अर्थात् सब मिलजुलकर रहते थे। उनमें अब के धार्मिक पाखंडियों के जैसा अहंकार नहीं था। न ही उनमें धर्म के नाम पर आपस में लड़ने का कोई विचार पनपा होगा। भोलापन और उदारता का भाव उनके एक-एक अक्षर से टपकता था। लेखक यहाँ उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि एक बार एक बालक को अपनी गोद में बैठा कर महात्मा ईसा अपने शिष्यों को कहते हैं कि जो व्यक्ति छोटे बालकों के समान भोला नहीं होता उसे स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता। लेखक कहते हैं ऐसा कोमल मन जो वेद भाषी आर्यों की भांति कदम-कदम पर ईश्वर से डरता हो, प्राकृतिक पदार्थ के सौंदर्य पर आकर्षित हो तथा उसका मस्तिष्क बालकों की तरह सरल न हो उसका स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाना बहुत दुःसाध्य है।

बोध प्रश्नः

- आर्यों के साहित्य की क्या विशेषता बताते हैं।
- "उनका साहित्य राजनीति की कुटिल उक्ति युक्ति से मालिन नहीं हुआ था"। पंक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य है?

आर्यों ने प्राकृतिक पदार्थों का अनुशीलन करते-करते ईश्वर के विषय में उदित भावों को अपने साहित्य में लिखा। इसे ही उपनिषद कहा गया। जैसे-जैसे समाज में आर्यों की संख्या बढ़ने

लगी और लोगों की रीति-नीति व्यवहार में भिन्नता आने लगी। तब सभी को एक सूत्रता में बाँधे रखने के लिए और उनके गुण तथा कर्मों को व्यवस्थित दिशा प्रदान करने के लिए कुछ सामाजिक नियम बनाए गए। जिससे समाज में शान्ति बनी रहे और किसी को किसी प्रकार की हानि न हो। इसलिए स्मृतियों के साहित्य का जन्म हुआ। मनु, अत्रि, हारित, याज्ञवल्क्य आदि ने अपने नाम की संहिता बनाई है। जिनमें कई प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक विषयों के ऊपर लिखा गया है। इन्हीं के समय में गौतम बुद्ध कणाद, कपिल, जैमिनि, पतंजलि जैसे महापुरुषों ने दर्शन शास्त्रों की बुनियाद डाली। इस समय तक जो साहित्य लिखे गए उनमें वेदों की भाषा का अनुकरण किया गया परंतु समय के साथ साथ उनकी भाषा अधिक सरल, कोमल और शुद्ध होती गई। इसके पश्चात् भी इस भाषा की गणना वैदिक भाषा से ही की जाती है। इन स्मृतियों और आर्य ग्रन्थों की भाषा को हम वैदिक और आधुनिक संस्कृत के बीच की भाषा कह सकते हैं| कुछ और समयोपरांत संस्कृत के दो खण्ड हो गए जिन्हें वैद और लोक के नाम से जाना जाने लगा। जिन्हें संस्कृत भाषा में विशेज्ञता प्राप्त है उनके लिए पाणिनि के सूत्र कामधेनु के समान है। जिससे लौकिक और वैदिक सब प्रकार के प्रयोग (योजनाएं /कार्य) सिद्ध हो रहे हैं। जिसके कारण लोग और वेद की पहचान अच्छी तरह से हो रही है। इसी लोक और वेद की भिन्नता के कारण हमें यह भी ज्ञात होता है कि संस्कृत किसी समय बहुत प्रचलित भाषा थी जिसका प्रयोग आम लोग अपनी आम बोलचाल की भाषा के रूप में करते थे।

बोध प्रश्नः

- समाज में लोगों की संख्या अधिक बढ़ने पर आर्यों ने अपने साहित्य में क्या परिवर्तन किया|
- स्मृतियों के साहित्य से लेखक का क्या अभिप्राय है?

वेद के पश्चात रामायण और महाभारत साहित्य के बड़े-बड़े अंग समझ गए। रामायण के समय भारतीय सभ्यता का प्रमोच्छ्वास से भरपूर पलवित नव यौवन था किंतु वहीं महाभारत के समय भारतीय सभ्यता क्षतिग्रस्त होकर वार्ध्दक्य (वृद्धावस्था) भाव में पहुँच गई थी। अर्थात अब के साहित्यकारों की सोचने की शैली में परिवर्तन आने लगा था। रामायण के प्रमुख पात्र जहाँ रघुकुलवंशज श्री रामचंद्र थे वहीं महाभारत के प्रमुख पात्र कुशाग्रबुद्धि के रूप, युद्ध विशेषज्ञ, कूटनीतिज्ञ, वासुदेव के पुत्र श्री कृष्ण थे या उनकी हर बात मानने वाले (हाथों की कठपुतली) युधिष्ठिर थे। रामायण के समय से भारत के समय में लोगों के हृदयगत भावों में बहुत अंतर आ गया था क्योंकि रामायण में दो विरोधी प्रतिद्वंदी भाई दशरथ के पुत्र राम और भरत आपस में इस बात पर विवाद कर रहे थे कि समस्त राज्य और राज्य सिंहासन हमारा नहीं है। यह सब तुम्हारे हाथों में रहे और अंत में रामचंद्र जी भरत को इस विवाद (बहस, तर्क-वितर्क) में हरा देते हैं। संपूर्ण अयोध्या साम्राज्य उनके हाथों में सौंपकर खुद अपनी पत्नी सीता के साथ आनंदित मन से पिता को दिए हुए वचन को पूरा करने के लिए वनवास चले जाते हैं। दूसरी

तरफ महाभारत में एक ही खानदान के दो भाई इस बात को लेकर झगड़ने के लिए आतुर है कि जितने में सूई के आगे का भाग ढक जाए उतनी भूमि भी बिना युद्ध के हम नहीं देंगे। जब दोनों पक्ष नहीं मानते तो परिणाम स्वरुप महाभारत का युद्ध होता है। जिसमें एक भाई दूसरे भाई पर विजय प्राप्त करने के लिए उसकी जंघा पर गदा से वार करता है और उसे पूरी तरह से परास्त करने के लिए उसके मस्तक पर भी पदाघात कर उसका वध कर देता है। जीत के पश्चात् अपने भाई के राज्य सिंहासन पर बैठता है और जीत की खुशी में फुल कर कई प्रकार के यज्ञ, हवन, दान, दक्षिणा और पूजा आदि में प्रवृत हो जाता है अर्थात अपने आप को एक सफल और आदर्श राजा साबित करने में कोई कमी नहीं छोड़ता है। बालकृष्ण भट्ट आगे लिखते हैं कि केवल भारत में ही नहीं पृथ्वी के और देश में भी इन्हीं के समान विद्वान कवि और लेखक हुए हैं जैसे यूनान में होमर, रूम में वरजिल, इटली में डेंटी, इंग्लैंड में चासर और मिल्टन। यह सभी विद्वान अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण मनुष्य जाति का गौरव बढ़ाने में किसी से भी कम नहीं थे। इन्होंने उत्तम साहित्य की रचना की सभी महान साहित्यकार थे किंतु इनमें वाल्मीकि सी विचित्र कल्पनाशीलता और प्रकृति की वास्तविकता को विभिन्न भावों में प्रस्तुत करने की क्षमता नहीं थी। होमर तथा मिल्टन को इस विषय में अधिक उन्नति नहीं मिली थी। उनकी कविता के प्रधान नायक श्री रामचंद्र जी जो आर्यजाति के प्राण दया अमृतसागर, गंभीरता और पौरुषत्व के तेज से परिपूर्ण थे। वे प्रेम, स्नेह, आदर और समानता के भाव से सबसे छोटी समझी जानेवाली चांडाल जाति को भी गले से लगाते थे। श्री रामचंद्रजी विष्णु के अवतार थे फिर भी उन्होंने अपने सबसे शक्तिशाली शत्रु लंकेश्वर को कभी कम नहीं समझा। अयोध्या का सोने से जड़ा सिंहासन हो या तपोवन की पर्णकुटी दोनों को रामचंद्र ने एक ही समझा। दोनों उन्हें समान सुखदायक लगती थी (केवल राम ही ऐसे राजा है जिन्हें तपस्वी राजा कहा जाता है)। उनकी आत्मीयता और प्रेम से पूर्ण व्यवहार और मधुर बोली के कारण जंगल की आदिवासी असभ्य जनजातियाँ उनकी गुलाम बन गई थी। धन्य है श्री रामचंद्र के महात्मयी और अलौकिक रूप को। धन्य है वाल्मीकि की कल्पना शक्ति को जिसमें ऐसे आदर्श पुरुष सोने के कमल के समान उदित हुए।

बोध प्रश्नः

- रामायण और महाभारत की कथावस्तु में क्या अंतर है?
- होमर, मिल्टन जैसे महान लेखक वाल्मीकि के समान रचना क्यों नहीं कर पाए?

समय सदा एक समान नहीं होता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह काल की महिमा ही है कि समय के साथ-साथ मनुष्य की प्रकृति में भी परिवर्तन होता रहता है। इसमें केवल भौतिक परिवर्तन ही नहीं मानसिक परिवर्तन भी शामिल है। वाल्मीकि ने जिन बातों को अवगुण, दोष, बुराइयाँ समझकर अपनी कल्पना के प्रमुख नायक राम को उन सब से दूर रखा था, वही सब महर्षि व्यास के समय में गुण हो गई। अपना मान, गौरव, प्रभुत्व जहाँ तक हो सके जाना नहीं चाहिए यही उनकी कविता का मुख्य लक्ष्य था। अर्थात मान-सम्मान, गौरव और सत्ता को इन्होंने अधिक महत्व दिया। धयान से देखने पर महाभारत के प्रत्येक प्रसंग (घटना) के अंत में

निष्कर्ष स्वरूप यही वास्तविकता दिखाई देती है। अपने शत्रुओं के संहार और व्यक्तिगत स्वार्थ को पूरा करने के लिए व्यास ने महाभारत में न जाने कितने ही उपदेश दिए हैं। दूसरी तरफ राजनीति की भी जो काट-छांट की है उसे देख सुनकर बिस्मार्क जैसे कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ की अकल भी धोखा खा जाएगी और इस समय के राजनीतिज्ञों, विशेषज्ञों, राजपुरुषों की अकल भी घास चरने चली जाएगी अर्थात वे गलत को गलत और सही को सही नहीं कह पाएंगे। सच्च जानते हुए भी अपनी आँखें बंद कर लेंगे। इससे यह निश्चित होता है कि सत्ता, स्वामित्व और स्वार्थ साधन तथा प्रवचन के वश में भारत सरीखे आदर्श देश, उदार-भाव, संवेदना आदि उत्तम गुणों से विमुख हो गया था। युधिष्ठिर को धर्मराज का अवतार माना गया और वे अपनी सत्यवादिता के लिए जगत प्रसिद्ध थे लेकिन उनकी सत्यवादिता अपाहिज हो जाती है। जब वह अपने निज स्वार्थ के लिए अपने गुरु के सामने झूठ बोल जाते हैं कि "अश्वत्थामा हतः नरो वा कुंजरो वा"। महाभारत में न जाने कितने ही ऐसे उदाहरण है जिन्हें निबंधकार ने निबंध को अति विस्तार से बचने के लिए नहीं लिखा है। यदि बालकृष्ण भट्ट उनका वर्णन करते तो यह निबंध और अधिक लंबा हो सकता था।

बोध प्रश्नः

- लेखक वाल्मीकि की कल्पना शक्ति को धन्यवाद क्यों देते हैं|
- वाल्मीकि जी और व्यास के लेखन में क्या विभिन्नता थी|
- राजनीति के कौन सी विशेषताएं विकास की महाभारत में देखने को मिलती हैं|

जैसे-जैसे परिस्थितियाँ परिवर्तित होती है शासको के साथ-साथ उनकी मानसिकता भी बदलती है। ठीक ऐसे ही महाभारत के उपरांत भारत और का और ही हो गया अर्थात न केवल इसकी दशाओं में और परिस्थितियों में परिवर्तन आया बल्कि इसके साहित्य में भी काफी बड़ा बदलाव आया। अब यहाँ बौद्धों का प्रभुत्व था। ये जाति से क्षत्रिय थे। शायद इसलिए ये वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी थे। पहले वेद की भाषा संस्कृत थी बौद्धों ने संस्कृत को विकृत कर प्राकृत भाषा को अधिक महत्व दिया। इसके पश्चात आम लोगों के बोलचाल की भाषा के रूप में संस्कृत का प्रचलन कम होने लगा तथापि काफी लोग संस्कृत भाषा का ज्ञान रखते थे और अपने दैनिक जीवन में उसका उपयोग कर रहे थे। इन्हीं लोगों ने इस नई भाषा को प्राकृत भाषा का नाम दिया। जिसका अर्थ होता था नीचों की भाषा अर्थात् छोटी जाति के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा। नाटकों में भी दास नौकर या नीच जाति के पात्रों की भाषा प्राकृत ही होती थी और ब्राह्मणों, राजाओं आदि द्वारा बोले जानेवाले संवाद संस्कृत में होते थे। कुछ समय पश्चात प्राकृत भाषा भी विकसित होकर साहित्य की भाषा बन गई। शोरसैनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची आदि इसी के भेद है। इसमें भी कई साहित्यिक ग्रन्थों की रचना हुई। गुणाढय कवि का आर्यावद्ध, लक्षक्ष्लोक का ग्रन्थ वृहतकथा प्राकृत भाषा में है। इसके अतिरिक्त शालिवाहन सप्तशती आदि प्राकृत भाषा के सफल और प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। प्राकृत भाषा की उन्नति

का वास्तविक काल राजा नंद और चंद्रगुप्त का शासन काल था। जैन साहित्य के अधिकतर ग्रंथ प्राकृत में लिखे गए। उनके स्रोत पाठ आदि इसी में लिखे गए हैं। जिससे यह तो स्पष्ट हो जाता है की प्राकृत एक समय वेद की भाषा के समान पवित्र समझी जाती थी।

बोध प्रश्नः

- "महाभारत के उपरांत भारत और का और ही हो गया"। कथन से निबन्धकार का क्या अभिप्राय है?
- बौद्धों के साहित्य की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

इस समय संस्कृत भले ही आम बोलचाल की भाषा नहीं रही थी फिर भी उसमें नित नए-नए विषयों पर साहित्य की रचना हो रही थी। प्रत्येक विषय में ग्रन्थों का निर्माण हो रहा था। जिससे संस्कृत साहित्य की काफी तरक्की हुई। यहाँ तक की कालिदास आदि कवियों की उक्ति युक्ति के सामने वेद का साहित्य बेरंग, बेरूप, रुखा और अत्यंत हल्का लगने लगा। सस्कृत कवि कालिदास अपनी उपमाओं के लिए काफी प्रसिद्ध थे। भवभूति, भारवि, श्रीहर्ष बाण जैसे कवियों की रचनाओं के सामने वेद के बढ़िया से बढ़िया सूक्त न्यौछावर है। इन्हीं सूत्रों के निर्माण में आर्यों को बहुत मेहनत और माथापच्ची (मगजमारी) करनी पड़ी थी। संस्कृत साहित्य के लिए कवि विक्रमादित्य का समय 'अगस्टिन पीरियड" कहलाता है क्योंकि यह संस्कृत के सर्वांग विकास का समय था। संस्कृत अपने विकास की पूर्ण सीमा तक पहुँच गई थी। इसके पश्चात् भारवि, माध, मयूर प्रभृति जैसे श्रेष्ठ कवि धाराधिपति भोजराज के समय तक और उनके पश्चात जगन्नाथ पंडितराज के समय में भी हुए लेकिन संस्कृत की परिष्कृत होने की सामग्री उस समय तक पूरी हो चुकी थी। राजा भोजराज का समय कविताओं के लिए काफी उन्नति का समय था क्योंकि राजा भोज एक-एक श्लोक के लिए कवियों को असंख्य इनाम देते थे। दूसरी तरफ वेद का साहित्य कमजोर होता जा रहा था। यहाँ तक की छांदस मूर्ख की एक पदवी रखी गई थी। जिन्हें केवल वेद पढ़ने का ज्ञान था उन्हें छांदस कहा जाता था। और अब उनकी गणना निरे मूर्खों में हो रही थी।

बोध प्रश्नः

- संस्कृत के साहित्य के लिए विक्रमादित्य का समय "अगस्टिन पीरियड" क्यों कहलाता है?
- संस्कृत भाषा की उन्नति में राजा भोज के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।

बौद्धों के उच्छेदों पश्चात् पुराण साहित्य भी हिंदुस्तान में प्रचलित हुआ। उस समय से बहुत से पुराण, उपपुराण और संहिताएँ दो चार सौ वर्ष के हेर फेर में रची गई। वर्तमान समय में लोगों में जो धर्म-शिक्षा, समाज-शिक्षा और रीति-नीति प्रचलित है, उनमें से शुद्ध वैदिक एक भी नहीं है। कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वयं को स्मार्त मानते हैं। दरअसल उनमें से अधिकतर में वेदोक्त कर्म का थोड़ा बहुत प्रचार पाया जाता है। यह ज्ञान अत्यंत गंभीर न होकर केवल नाम मात्र ही होता है।

जिसमें पुराण का भी समावेश होता है। अथार्त जिसे वेदों का ज्ञान होता है वह उसमें थोड़ा बहुत पुराण के ज्ञान को जोड़ लेता है। निबन्धकार एक गंभीर विषय की ओर भी संकेत करते हैं कि वर्तमान में हमारी विद्यमान छिन्न-भिन्न दशा जिसके कारण हजार कोशिश करने पर भी जातीयता हमारे भीतर आती ही नहीं यह सब पुराण की कृपा है। जब तक शुद्ध वैदिक साहित्य आम लोगों में प्रचलित था, तब तक जातीयता के दृढ़ नियमों में कोई अंतर नहीं आया था। लेकिन पुराण के साहित्य का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि वेद के समय में कई घिनौनी ऋतियाँ और रस्मों को जिनका नाम लेने से भी हम में घृणा उत्पन्न होती थी उन सब अत्यंत क्रूर हिंसाओं का विरोध कर बौद्धों ने अपने अहिंसावादी धर्म का प्रचार प्रसार किया। इन्हीं कुरीतियों रस्मों और हिंसाओं के विरुद्ध उन्होंने धर्म में अहिंसा को विशेष स्थान दिया। पुराणकर्ताओं ने शुद्ध सात्विकी धर्म की स्थापना की। अनेक मतमतांतरों का प्रचार हुआ जो की पुराण की ही हरकत है। पुराणों में पंचायतन पूजा करते थे अर्थात में पंचायतन पूजन में के समर्थक थे।

पुराण के पश्चात तन्त्रों की बारी आई। यहाँ पर तन्त्र बड़े संहारक थे। इन्होंने कई शुद्र देवी-देवताओं जैसे भैरव, काली, डाकिनी, शाकिनी, भूत-प्रेत तक के पूजन को लोगों के बीच में फैला दिया था। शराब और मांसाहार का प्रचार किया जिसे बौद्धों द्वारा तामसी प्रवृति को श्रेय देनेवाला और गंदा समझ गया था। उसका प्रयोग सभी के लिए वर्जित था। इन्होंने इसका पूरे मन से उपयोग किया किंतु इस प्रकार बलवीर्य की पुष्टता से जो मांसाहार का प्रमुख लाभ था यह लोग उससे वंचित रहे। इसमें कोई शक नहीं कि जैसे-जैसे संसार में तांत्रिकों की ऐसी रचनाओं का प्रचार प्रसार होने लगा हमारी सात्विकता और बौद्धिकता विकृत होने लगी। तांत्रिकों की ऐसी रचनाओं की कृपा के कारण हिंदुस्तान कुरीतियों और अंधविश्वास की गर्त में डूबता चला गया। वेद के ज्ञाता शुद्ध ब्राह्मणों के लिए तांत्रिक दीक्षा या तंत्र मंत्रों की मनाही है। ब्राह्मण तंत्रों के अध्ययन से बहुत जल्दी दूषित हो सकता है। अगर यह मत किसी स्मृतिकार का है तो निबंधकार उससे सहमत है और उन्हें यह युक्ति संगत भी लगता है। कई पुराणों का निर्माण तंत्रो के बाद हुआ है। उनमें भी तांत्रिकों के सिद्धांतों की पुष्टि मिलती है।

बोध प्रश्नः

- पुराण साहित्य क्या है|
- पुराण साहित्य वैदिक साहित्य पर हावी कैसे हुआ|

ऊपर के अनुच्छेदों में लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि कैसे हिंदू जाति में कौमियत के कमजोर और क्षीण होने का प्रमुख कारण पुराण ही थे। और तंत्रों ने इन्हें और अधिक क्षीण करने का काम किया। शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध धर्म सभी एक दूसरे से अलग-अलग हो गए। समय के चलते यह एक दूसरे के मजबूत विरोधी बन गए जो एक दूसरे का चेहरा तक देखने को तैयार नहीं थे। ये सभी अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने में लगे हुए थे। ऐसे में एक दूसरे के प्रति एकता और सहानुभूति की भावना किसी में नहीं थी। हिंदू जाति अब एक न रहकर कई भागों में बिखर गई थी। अब वह वैदिक संप्रदाय ना रही। इस स्थिति पर लेखक एक मिसाल देते हैं एक औरत जब दो आदमियों के द्वारा

फसाई जाती है तो उसकी अपनी पहचान छीन जाती है। हिंदू जाति के भी कई टुकड़े हुए और उन टुकड़ों के कई खंड होते चले गए। जिसके परिणामस्वरुप अभी भी नए-नए धर्म, मत-प्रवर्तक बनते ही जा रहे हैं। वैष्णव संप्रदाय में शिव और शाक्त मत की अपेक्षा अधिक टुकड़े होते जा रहे हैं। इनमें वैष्णव संप्रदाय के खंड एक दूसरे के साथ मेल-जोल और खान-पान बहुत काम करते हैं। इतना भेद या विरोध शैव और शाक्त सम्प्रदाय में नहीं है। वैष्णव सम्प्रदाय में राम के उपासक कृष्ण के उपासकों से लड़ते हैं। कृष्ण के उपासक राम के अनुयायियों से कोई सरोकार नहीं रखते। यहाँ तक तो भी ठीक है। राम और कृष्ण को छोड़िए अब तो कृष्ण के उपासकों में भी अलग-अलग भक्ति की लहरें प्रचलित हो रही है। उन में भेद आते जा रहे हैं। जिससे इनमें आपस में ही कुछ ना कुछ खटपट चलती ही रहती है अर्थात् कहासुनी चलती रहती है।

बोध प्रश्नः

- समय के साथ साथ हिन्दू जाति में किस तरह खण्डों में विभाजित होती चली गई।
- नए धर्मों और मत प्रवर्तकों के बीच में किस प्रकार के भेद बढ़ रहे थे।

प्राकृत के उपरांत हमारे साहित्य में दो और उदाहरण मिलते हैं एक जायसी द्वारा रचित पद्मावत और दूसरी चन्दवरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो। पद्मावत प्रबंधात्मक काव्य है जिसमें थोड़ा बहुत रस है अर्थात इसे किसी उद्देश्य प्राप्ति के लिए लिखा गया है। यह प्रेम मार्ग की काव्यधारा का प्रतिनिधि ग्रंथ है। जिसमें रहस्यवाद की झलक मिलती है। लेकिन पृथ्वीराज रायसा की कथावस्तु उतनी महान नहीं है और उसको लिखने का उद्देश्य भी स्पष्ट नहीं है। कुल मिलाकर निबंधकार पृथ्वीराज रायसा से संतुष्ट नहीं है। समय के साथ साथ प्राकृत भाषा का स्तर गिरने लगा। आज की हमारी हिन्दी को यह रूप कैसे मिला इसका पता रायसा से लगता है। आगे चलकर समय के साथ-साथ हमारी भाषा भी गुजराती, मराठी, बंगाली इत्यादि के अंतर से प्रत्येक प्रांत की अलग-अलग भाषा हो गई। भारतवर्ष में कई स्थानीय भाषाओं में उत्तम साहित्य लिखा जा रहा था। इन भारतवर्ष भाषाओं में कई गुण थे जैसे बंगाली को कोमल मधुर और रस से परिपूर्ण माना गया। मरहठी को अत्यधिक कठोर और कर्णकुट भाषा, पंजाबी को एकदम भद्दी भाषा जो कठिन और रूखेपन में उर्दू की छोटी बहन लगती है। हिन्दी की बात करें तो इसमें कोई शक नहीं की हिन्दी बाकी भारतीय भाषाओं की तुलना में अधिक विस्तृत भाषा है। ब्रजभाषा, बुंदेलखंडी, बैसवारे और भोजपुरी हिन्दी के अंतर्गत आने वाली कुछ भाषाएँ हैं। निबंधकार के अनुसार ब्रजभाषा अत्यंत मधुर भाषा है जिसमें अधिकतर श्रृंगार की कविताएँ ही लिखी जाती हैं। यद्यपि ब्रजभाषा में मिठास है किंतु यह एक जनानी बोली के समान है। उन्हें लगता है कि इसमें श्रृंगार का आनंद ही आता है। जिस बोली को कवियों ने अपने लिए चुना वह बुंदेलखंड की बोली है अर्थात जिसमें गद्य साहित्य लिखा जा सकता है। जिसमें ओजपूर्ण कविताएँ लिखी गई वह बुंदेलखंड की बोली है। इसमें सब प्रकार के काव्य और सब रस समा सकते हैं। हर किसी की पसंद अलग-अलग होती है 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' इसीलिए कहा जाता है कि लोगों की पसंद अलग-अलग होती है और हर किसी को अपनी पसंद अच्छी लगती है। इसी

तरह से बैसवारे की मर्दानी बोली ही सबको बहुत अच्छी लगती है। दूसरी भाषाएं जैसे गुजराती, मराठी, बंगाल आदि भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी के साहित्य में कविताओं का बहुत अधिक बाहुल्य दिखाई देता है। कविताओं में श्रेष्ठता दिखाई देती है जो कि संस्कृत से थोड़ी सी कम है। संस्कृत काव्यशास्त्र के सभी नियमों का पालन करता है किंतु हिन्दी साहित्य में थोड़ी सी छूट दी जाती है। दूसरी तरफ लेखक यह भी कहते हैं कि हिन्दी साहित्य में गद्य की रचना का आरंभ हो रहा था। उस समय तक केवल प्रेम सागर जैसी कुछ रचनाएँ ही लिखी गई थी। दूसरी तरफ उर्दू हिन्दी के समानान्तर में बढ़ रही थी। लोगों में हिन्दी के साथ-साथ उर्दू का भी प्रचलन बढ़ रहा था। जिस पर लेखक कहते हैं की शुद्ध हिन्दी तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों की पद्य रचना के अतिरिक्त कहीं और देखने को नहीं मिलती। अपने निबंध में उर्दू का प्रसंग आने पर लेखक व्यंग्य रूप में रहते हैं कि यहाँ उर्दू साहित्य की समालोचना करने का अवसर प्राप्त हुआ लेकिन ऐसा करने से यह निबंध अधिक ऊबाउपन पैदा करने वाला हो जाएगा। इस कारण इस निबंध को यहीं समाप्त करते हैं और उर्दू की समालोचना भविष्य में करने की बात कहते हैं।

बोध प्रश्नः

- बंगाली भाषा मरहठी और पंजाबी कैसे भिन्न है।
- खड़ीबोली कैसे गद्य के लिए उपयुक्त भाषा है?

3.3.2 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का प्रयोजन

भारतेंदु युग के महान लेखकों में एक प्रसिद्ध नाम बालकृष्ण भट्ट जी का है। बालकृष्ण भट्ट जी अपने निबंधों के कारण चर्चा में आते है। प्रस्तुत निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' में बालकृष्ण भट्ट जी ने भारत में उपलब्ध वेद साहित्य, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, तंत्रों और उसके पश्चात लिखे गए साहित्य पर प्रकाश डाला है। विभिन्न समयावधियों में भिन्न प्रकार का साहित्य हमें उपलब्ध होता है। वेद लिखे गए तब की स्थितियाँ और उपनिषद के समय की स्थितियों मे थोड़ा सा ही अन्तर था। रामायण महाभारत के आते आते परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल चुकीं थी। लोगों की सोच में भी अन्तर आने लगा था। बौद्धों ने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य का निर्माण किया। आगे चलकर बौद्ध धर्म विभाजित हुआ। उन शाखों ने भी अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य लिखा। समय परिवर्तन के साथ-साथ पुराण और तंत्रों का भी भारत में बोलबाला हुआ। आरम्भ से ही भारत में कई धर्मों का पालन होता रहा है। यही हमें इसके साहित्य में भी दिखाई देता है। नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य आदि ने अपने धार्मिक साहित्य का प्रचार-प्रसार किया। इसके बाद में जैन धर्म का विकास भारत में होता है हमें जैन साहित्य दिखाई देता है। जैन साहित्य में प्राकृत भाषा को साहित्य के प्रचार का माध्यम बनाया। अपभ्रंश के बाद भारत में अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, मैथिली जैसी कई भाषाओं में साहित्य लिखा जाने लगा। बालकृष्ण भट्ट जी का अपने निबंध में संस्कृत भाषा की संपन्नता पर भी प्रकाश डालते हैं|

3.3.3 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध में व्यक्त वैचारिकता

भारत विभिन्नता में भिन्नता और अनेकता में एकता वाला देश है। इसका परिचय हमें इस निबंध में लग जाता है। प्रवाहपूर्ण, संयत गंभीर किन्तु साधारण भाषा में लिखा गया यह निबंध हमें वैदिक साहित्य से लेकर वर्तमान भारतेंदु युग में लिखे गए साहित्य की जानकारी उपलब्ध कराता है। वैदिक साहित्य कितना शांत और सरल था। उसमें केवल मानव कल्याण की चिंताएँ थीं और जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया उनके लिए उसमें नियम कायदे कानून बनाए गए। जिसमें किसी तरह का आड़म्बर, अश्लीलता, वासना और श्रंगार नहीं था। उसके पश्चात् उपनिषदों का समय आया जो आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन पर आधारित थे। उपनिषदों के बाद में पुराण और पुराण के बाद में तंत्रों की बारी आई। दूसरी तरफ कालिदास, जैसे कवि भी हुए। बालकृष्ण भट्ट जी ने अपने इस निबंध में उस समय के काव्य से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों को पकड़ने की कोशिश की है। यहाँ तक कि वह यह बात भी लिखने से पीछे नहीं रहते कि रामायण और महाभारत के बाद बौद्ध समय में किस तरह से समय परिवर्तन होने लगा। परिस्थितियों में ही नहीं सोच में परिवर्तन आने लगा इसका भी जिक्र बालकृष्ण भट्ट करते हैं। बौद्धों के नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य का वर्णन मिलता है। तंत्रों ने किस प्रकार से पुराणों को प्रभावित किया और साथ ही साथ मनुष्यों के विचारों पर इसका क्या असर हुआ। बालकृष्ण जी यह कहने से भी पीछे नहीं रहते कि तंत्रों के कारण भारत का बेड़ा गर्ग हो गया। जिस गति से हम उन्नति कर रहें थे वह लगभग खत्म हो गयी। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल लगभग सभी के साहित्य पर प्रकाश डाला है।

3.3.4 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध का भाषा सौष्ठव

बालकृष्ण भट्ट की हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार है। उनके निबंधों में गंभीर विवेचन और विचारात्मकता देखने को मिलती है। साहित्य, समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, नैतिकता, सामयिक आदि उनके निबंधों के प्रमुख विषय रहे हैं। इन्होंने तीन सौ से भी अधिक निबंध लिखे हैं। भट्ट जी भारतेंदु मंडली के प्रधान सदस्यों में से एक थे। साहित्य सुमन और भट्ट निबंधावली इनके निबंध संग्रह है| निबंधकार के साथ-साथ आप उपन्यासकार, नाटककार तथा अनुवादक भी है| भावों के अनुकूल वे भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रस्तुत निबन्ध एक गंभार विषय पर है किन्तु इसे पढ़ते समय उबाऊपन महसूस नहीं होता यही बालकृष्ण भट्ट जी की भाषा की विशेषता है। अपनी बात को सीधे सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। तत्सम शब्दों का प्रयोग होता है, संस्कृत निष्ठ होते हुए भी उसमें साधारण जन से जुड़ने की क्षमता होती है। महावरों और कहावतों के कारण इनकी भाषा में जीवितता आ जाती है। उदाहरणः "एक नारी जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। इस निबन्ध में वे महाभारत से उदाहरण भी देते हैः "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" आदि। भट्ट जी ने शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया। संस्कृत के साथ-साथ तत्कालीन उर्दू, फ़ारसी, अरबी तथा अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग यत्र तत्र करते रहते हैं।

उनकी भाषा जीवंत तथा चित्ताकर्षक, विषय एवं प्रसंग के अनुसार प्रचलित हिन्दीतर शब्दों से भी समन्वित है। यह अत्यन्त प्रवाहमयी भाषा है।

3.3.5 "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" निबन्ध शैली सौन्दर्यः

बालकृष्ण भट्ट जी केवल निबन्धकार ही नहीं अपितु नाटककार, उपन्यासकार आदि थे। उनके निबन्धों में एक अनूठापन होता है जो विचारों की गहराई को दर्शाता है। विषय की विस्तुत विवेचना के साथ उस पर गंभीर चिन्तन भी किया जाता है। कहीं कहीं पर व्यंग्य के द्वारा वे अपने गंभीर विषय को भी मनोरंजक बना देते हैं। वर्णनात्मकता, विचारात्मकता और भावात्मकता तीनों इनके लेखन की जान हैं। निबन्ध सभी को आसानी से समझ में आए इसके लिए वे अपने विचारों को विस्तार से समझाते हैं। जैसे इस निबन्ध में रामायण और महाभारत के रचनाकारों की तीक्ष्ण विचारधारा की तुलना वे निष्पक्ष भाव से करते हैं। उनके वाक्य कई बार बहुत लम्बे तो कई जगहों पर छोटे हो जाते हैं। कई गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखते समय आपकी भाषा अत्यन्त विचारात्मक हो जाती है। जिसे समझाने के लिए वे तर्क-वितर्क, आलोचना, भक्ति-ज्ञान, आस्था विश्वास आदि का सहारा लेते हैं। जिसमें उनकी भाषा संस्कृत निष्ठ हो जाती है। साहित्यिक निबन्धों में भट्ट जी भावात्मक शैली को महत्व देते हैं। यह भट्ट जी की प्रतिनिधि शैली थी। शुद्ध हिन्दी में अपने भावों और विचारों को प्रस्तुत करते हैं। अपने निबन्धों को बोझिल, उबाऊ और निरस होने से बचाने के लिए भट्ट जी हास्य व्यंग्य का सहारा भी लेते हैं। इनके निबन्धों में उर्दू शेरो शायरी भी कहीं कहीं दिखाई देती है।

3.4 : पाठ सार

साहित्य जन समुदाय के हृदय का विकास है निबन्ध में लेखक यह बताने का प्रयास करते हैं कि प्रत्येक जाति द्वारा लिखा गया साहित्य उस जाति में रहने वाले लोगों की भावनाओं को इंगित करता है। वेदों का प्रमुख उद्देश्य केवल जनता का कल्याण था। यहाँ पर रीति नीति तथा आदर्श इसीलिए स्थापित किए गए थे ताकि जनता में किसी तरह की कोई अनैतिकता और अराजकता उत्पन्न न हो। वैदिक साहित्य श्रंगारिकता और राजनीति के कुट विचारों से एकदम अलग था। वहाँ पर केवल जनता के बारे में बात की गई है। किसी तरह का छल कपट और बनावट उसमें नहीं दिखाई देती। आर्य जाति की विशेषताओं का पता चलता है। जैसे जब जनसंख्या बढ़ने लगी तो उन्होंने सभी के लिए नियम बनाये जिससे लोगों में आपसी समझ और साझेदारी बनी रहे।

रामायण में राम की कल्पना एक सफल तपस्वी शासक के रूप में की है। जो अपने मधुर भाषण तथा आदर्श व्यवहार से आदिवासी जनजातियों का हृदय जीत लेता है। राम स्वयं भगवान थे लेकिन रावण जैसे शत्रु को भी तुच्छ नहीं समझते हैं। व्यास द्वारा रचित महाभारत में राजनीति के कई रूप दिखाई देते हैं। एक तरफ दुर्योधन अपने भाइयों से लड़ने के लिए तैयार है। दूसरी तरफ श्री कृष्ण सत्य की विजय के लिए और असत्य को हराने के लिए सारा महाभारत रचते हैं। हर कोई अपने को सही साबित करने के लिए इसमें छल करता है।

बौद्ध धर्म की प्रचलित धाराओं के साहित्य की विशेषताओं का अध्ययन किया। वेदों की प्रमुखता जातिवाद थी। उन्होंने इसका अच्छे तरीके से निर्वाह किया था। वेदों द्वारा निर्धारित की गई कई कुरीतियां अत्यंत घिनौनी थी। जिसके विरोध में बौद्धों ने अहिंसा को अपने साहित्य का केन्द्रबिन्दु बनाया। संस्कृत साहित्य की भी अच्छे से उन्नति हो रही थी। कालिदास भवभूति, भारवी, श्रीहर्ष, बाण कई संस्कृत के कवि थे। जिन्होंने संस्कृत को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया और संस्कृत साहित्य को विकसित किया। पुराण समय के साथ साहित्य में बदलाव लेकर आए। ये वेदों से अलग आधुनिक विचारों को श्रेय देते थे। पुराणों के बाद तन्त्रों का समय आता है । तंत्र हिंदू सभ्यता के लिए बहुत ज्यादा हानिकारक सिद्ध हुए क्योंकि इन्होंने शुद्र देवी देवताओ भैरों, काली, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत तक के पूजन को फैला दिया। मद-मांस का प्रचार किया। इनका असर पुराणों के साथ साथ आने वाले साहित्य पर भी पड़ा।

आदिकालीन साहित्य के रासों और भक्तिकालीन साहित्य में प्रेममार्गी पदमावत् पर प्रकाश ड़ाला है। भक्तिकालीन साहित्य कई भागों में बटा और यह भाग उप-भागों में बटते चले गए। विशेष कर वैष्णव संप्रदाय राम कृष्ण से होते-होते यह कृष्ण में ही कई उपखंडों में विभाजित होने लग गया। यह लोग आपस में ही अलग-अलग विचारधारा का निर्वाह करते हुए एक दूसरे से परहेज करने लगे। संस्कृत, वैदिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश जैसी भाषाओं के पश्चात ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, मैथिली आदि साहित्य की भाषाएं बनने लगी। लेखक इन सभी भाषाओं के गुणों से अवगत कराते हैं जैसे कुछ भाषाएँ बोलने में कर्कश है और कुछ मधुर हैं।

3.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से ये निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

- आर्यों द्वारा रचित साहित्य केवल समाज में एकता और शांति बनाये रखने के लिए था। इसमें किसी तरह का आड़म्बर नहीं था। न तो आज के राजनीतिज्ञों की कपटधर्मी बाते थी न ही संस्कृत के महान कवियों की भाँति श्रंगारप्रियता थी। आर्यों की जाति व्यवस्था के पीछे समाज कल्याण की भावना निहित थी।
- वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के नायक राम अपनी कर्तव्यपरायणता और त्याग के कारण आजीवन सम्मान, प्रेम के अधिकारी बने। दुसरी तरफ महाभारत के युधिष्ठिर जो सत्यवादी थे किंतु अपने स्वार्थ के चलते हुए द्रोणाचार्य से झूठ कहते हैं और पाप के भागीदार बनते हैं। रामायण और महाभारत दोनों के लेखन काल में अंतर आ गया था जो उनके लेखकों की सोच में दिखाई देता है। वेदों की कुरीतियों का फायदा बौद्ध साहित्य के निर्माताओं ने उठाया उन्होंने इन्हीं कुरीतियों का विरोध कर अपने धर्म का प्रचार किया।
- संस्कृत भाषा के विकास और उत्कर्ष की जानकारी मिलती है। संस्कृत और प्राकृत भाषा में उस समय भेद किया जाता था।

- पुराणों की रचना होने लगी, पुराण लोगों में अत्यधिक प्रिय होने लगे। दूसरी तरफ तन्त्रों का भी विकास हुआ इन तन्त्रों ने सभी को आकर्षित किया। यही कारण था कि पुराण में भी तन्त्रों का जिक्र किया जाने लगा।
- भक्तिकाल में रचित साहित्य एक समय के बाद कई खण्डों में विभाजित हो गया विशेषकर वैष्णव सम्प्रदाय के राम और कृष्ण। कृष्ण धारा कई उपखण्डों में बिखर गई और ये लोग आपस में ही भेद भाव करने लगे।
- पालि प्राकृत, अपभ्रंश के पश्चात भारत में ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, मैथिली आदि भाषाओं में साहित्य की रचना हो रही थी। इनकी विशेषताओं की जानकारी मिलती है। गद्य साहित्य के लिए खड़ीबोली को स्वीकृति मिली।

3.6 : शब्द संपदा

1. मुखच्छवि – चेहरे की छवि
2. विकृत - बिगाड़ा हुआ रूप, टेढ़ा किया हुआ
3. प्रफुल्लित - फुर्तीला, तेजमान, प्रफुल्लित,
4. अनुल्लंघनिय - भ्रष्ट न करने योग्य, सत्ताशील, धृष्ट
5. परितापजनित - पाश्चाताप उत्पन्न होना
6. अश्रुपात - अश्रुप्रवाह, आँसू बहाना
7. आभ्यंतरिक - घर के भीतर होनेवाला, अन्दर होने वाला
8. परिस्फुट - प्रकट होना, फूटना, विकसित होना
9. कानन - बड़ा जंगल, घना वन
10. विहंग - पंछी, पक्षी
11. कुजन – पक्षियों की कलरव क्रिया
12. कृत्रिम सौहार्द - आडम्बर से भरा सद्भाव या मैत्री
13. परिप्लावित - जलसिक्त; गीला; सराबोर; जलार्द्र
14. सस्त्रीक - पत्नी सहित
15. अग्रभाग - आगे का हिस्सा
16. पौरुष - पुरुष में सामान्य रूप से होनेवाले गुण जैसे(शौर्य तो पौरुष का प्रतीक है)
17. दर्प - घमंड, अभिमान
18. स्मित - मंद हास्य, धीमी हँसी

19. बरकाया - कोई अनिष्ट अथवा अप्रिय घटना या बात न होने देना।
20. उक्ति - कथन
21. युक्ति - मिलन, योग ढंग, तरक़ीब।
22. मुकाबिले - बराबरी, समानता
23. परिष्कृत - शुद्ध, साफ़, स्वच्छ, परिमार्जित, प्रांजल
24. संहिताएँ - वह सबसे बड़ी परम और नित्य चेतन सत्ता जो जगत का मूल कारण और सत्, चित्त, आनन्दस्वरूप मानी गयी है।

3.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए।

1. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबन्ध का सारांश लिखिए।
2. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबन्ध की विवेचना कीजिए।
3. महाभारत के युधिष्ठिर रामायण के राम से किस प्रकार अलग थे|
4. आर्यों के साहित्य और वर्तमान साहित्य साहित्य की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

खण्ड (ब)

लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1. इतिहास अध्ययन और साहित्य अध्ययन में क्या अंतर है?
2. वैदिक और आधुनिक संस्कृत के विकसित रूप को लेखक ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है|
3. आदर्श समाज की स्थापना के लिए आर्यों ने क्या कदम उठाए।
4. राम के किन गुणों की चर्चा निबन्ध में की गई है (जो सभी को अपना दास बना लेती है) ?
5. महाभारत के संदर्भ में "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" पंक्तियाँ की व्याख्या कीजिए।
6. व्यास द्वारा रचित महाभारत में क्या-क्या गुण थे?
7. रामायण से महाभारत तक आते-आते भारतीय साहित्य में क्या बदलाव दिखाई दिया?
8. संस्कृत नाटकों में संस्कृत और प्राकृत भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाता था?

9. पुराण साहित्य की विशेषताएं बताएं|
10. पुराण साहित्य को तंत्रों ने कैसे प्रभावित किया?
11. भक्तिकालीन साहित्य की किन विशेषताओं पर लेखक ने प्रकाश डाला है?
12. वैष्णव संप्रदाय में ज्यादा भिन्नता की वजह क्या है?
13. बज्रभाषा की विशेषता क्या है?
14. पृथ्वीराज रायसा और पदमावत की कथावस्तु लिखिए|

खण्ड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. कौन से राजा संस्कृत के एक-एक श्लोक के लिए असंख्य इनाम कवियों को देते थे?
   अ) राजा भोज आ) विक्रमादित्य इ) अशोक ई) जगन्नाथ पंडित
2. "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" पंक्तियाँ किसने कही है?
   अ) अर्जुन आ) दुशासन इ) दुर्योधन ई) नकुल
3. पृथ्वीराज रासो कौन से काल की रचना है?
   अ) आधुनिक काल इ)भक्तिकाल
   आ)रीतिकाल ई) आदिकाल
4. पंचायतन पूजा में किसका विश्वास था?
   अ) वेदों आ) पुराणों इ) उपनिषदों ई) तन्त्रों
5. लेखक कौन सी भाषा को जनानी बोली कहते हैं?
   अ) भोजपुरी आ) ब्रजभाषा इ) मरहठी ई) बंगाली

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. संस्कृत के साहित्य के लिए विक्रमादित्य का समय .... कहलाता है।
2. ....ने शुद्र देवता भैरों, काली, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेतों के पूजन को फैला दिया।
3. वेद के अधिकारी शुद्ध ब्राह्मण के लिए .... या .... अति निषिद्ध है।
4. अतः एव संस्कृत नाटकों में नीच पात्र की भाषा .... और उत्तम पात्र ब्राह्मण या राजा आदि की भाषा .... रखी गई है।
5. यूनान देश में ...., रूम देश में ...., इटली में ...., इंग्लैंड में चासर और मिल्टन अपनी-अपनी असाधारण प्रतिभा से मनुष्य जाति का गौरव बढ़ाने में कुछ कम न थे।

III. सुमेल कीजिए।

1. नाथ	अ) 84
2. सिद्ध	आ) पाली
3. पृथ्वीराज रासो	इ) 9
4. भाषा	इ) चंद बरदाई

3.8: पठनीय पुस्तकें

1. बालकृष्ण भट्ट रचनावली, समीर कुमार पाठक
2. बालकृष्ण भट्ट निबन्धों की दुनिया, निर्मल जैन
3. बालकृष्ण भट्ट, बृजमोहन व्यास
4. भट्ट निबन्धावली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
5. बालकृष्ण भट्ट रचना संचयन, गंगा सहाय मीणा

इकाई 4 : रामचंद्र शुक्ल के निबंध ‘कविता क्या है’ की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

4.1- प्रस्तावना

4.2- उद्देश्य

4.3- मूल पाठ- रामचंद्र शुक्ल के निबंध ‘कविता क्या है’ की विवेचना

4.3.1- 'कविता क्या है' निबंध की विषय वस्तु

4.3.2- 'कविता क्या है' निबंध का प्रयोजन

4.3.3- 'कविता क्या है' निबंध में व्यक्त वैचारिकता

4.3.4- 'कविता क्या है' निबंध का भाषा सौष्ठव

4.3.5- 'कविता क्या है' निबंध का शैली सौंदर्य

4.4- पाठसार

4.5- पाठ की उपलब्धियां

4.6- शब्द संपदा

4.7- परीक्षार्थ प्रश्न

4.8- पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

आचार्य रामचंद्र शुक्ल (1884-1941 ई०) हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार माने जाते हैं। उनके निबंध 'चिंतामणि' निबंध संग्रह में संकलित हैं, जो चार भागों में प्रकाशित है। चिंतामणि भाग एक आचार्य रामचंद्र शुक्ल का निबंध संग्रह प्रथमत: 'विचार वीथी' नाम से प्रकाशित हुआ। चिंतामणि भाग एक में कुल 17 निबंध संकलित हैं, जिनमें ग्यारहवां निबंध 'कविता क्या है' है, जो लगभग 36 पेज का है। 'कविता क्या है' निबंध सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में सन् 1909 ई० में प्रकाशित हुआ। उसके बाद कुछ वैचारिक परिवर्तनों के साथ 1939 ई० में चिंतामणि भाग-एक निबंध संग्रह में प्रकाशित हुआ। यह आलोचनात्मक निबंध है, इस निबंध का प्रारंभ शुक्ल जी ने समास शैली/सूत्र शैली से किया है। इस निबंध के माध्यम से शुक्ल जी ने अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताएं प्रस्तुत की है ।काव्यशास्त्रीय मान्यताओं में रसवाद और लोकमंगल का जो संलयन शुक्ल जी ने किया है उसी को यह निबंध मूर्त रूप देता है । इस निबंध में शुक्ल जी ने कविता की परिभाषा देते हुए ,कविता की आवश्यकता, उपयोगिता ,काव्य विषय, काव्य भाषा, कविता

और प्रकृति, कविता में भावना, अलंकार का स्थान, काव्य और सौंदर्य, कविता और चमत्कारवाद तथा कविता पर होने वाले अत्याचार पर विस्तार से प्रकाश डाला है।अब आप इस इकाई में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित 'कविता क्या है' निबंध का अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1- कविता के स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे ।
2- 'कविता क्या है' निबंध का महत्त्व बता सकेंगे।
3- कविता की भाषा एवं अलंकार की उपयोगिता को समझ सकेंगे।
4- 'कविता क्या है' निबंध की भाषा शैली को बता सकेंगे।
5- 'कविता क्या है' निबंध के प्रयोजन को बता सकेंगे।
6- 'कविता क्या है' निबंध में व्यक्त निबंधकार के विचारों को समझ सकेंगे।
7- कविता क्या है' निबंध के भाषा सौष्ठव को व्यक्त कर सकेंगे।

4.3 मूल पाठ :कविता क्या है निबंध

4.3.1- 'कविता क्या है' निबंध की विषय वस्तु

'कविता क्या है' आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का लंबा निबंध है जो चिंतामणि भाग एक का 11वां निबंध है, जो लगभग 36 पेज का है। इस निबंध में शुक्ल जी ने कविता की परिभाषा देते हुए, कविता की आवश्यकता, उपयोगिता, काव्य विषय, काव्य भाषा, कविता और प्रकृति, कविता में भावना, अलंकार का स्थान, काव्य और सौंदर्य, कविता और चमत्कारवाद तथा कविता पर होने वाले अत्याचार पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इस निबंध का सारांश निम्न शीर्षकों में प्रस्तुत किया जा सकता है-

1-कविता की परिभाषा

आचार्य शुक्ल का यह निबंध सैद्धांतिक कोटि का है ।इसमें उन्होंने कविता संबंधी विविध पक्षों का उद्घाटन करते हुए उन पर अपना मत व्यक्त किया है, उन्होंने कविता को एक प्रकार की योग साधन माना है। कर्म योग और ज्ञान योग के समकक्ष ही उन्होंने भावयोग की इस साधना को स्थान प्रदान किया है। कविता की परिभाषा देने से पूर्व आचार्य ने जीना, जगत, मुक्त हृदय, आत्मा की मुक्तावस्था, हृदय की मुक्तावस्था आदि का वर्णन किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने

कविता की परिभाषा देते हुए लिखा है-" जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है। उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है ।हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।"

कविता हृदय को स्वार्थ के संकुचित घेरे से ऊपर उठकर लोक सामान्य की भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित करती है। इस भूमि पर पहुंचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता क्योंकि वह अपनी सत्ता को लोकसत्ता में लीन किए रहता है। इस अवस्था में पहुंचे व्यक्ति की अनुभूति सबकी होती है या हो सकती है । इस अनुभूति योग के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिष्कार होता है और शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक संबंधों की रक्षा और निर्वाह होता है । शुक्ल जी ने कविता को भावयोग कहा है और उसे ज्ञान योग एवं कर्मयोग के समकक्ष माना है।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल ने कविता की क्या परिभाषा दी है स्पष्ट कीजिए?
- प्रस्तुत पाठ्यांस की भाषा शैली के विषय में बताइए।

2- सभ्यता का आवरण और कविता

इस शीर्षक के अंतर्गत शुक्ल जी ने यह प्रतिपादित किया है कि जैसे-जैसे सभ्यता के आवरण मानव के हृदय पर चढ़ते जाएंगे, वैसे -वैसे कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी और कवि कर्म कठिन होता जाएगा। सभ्यता की वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य अपने भावों को छुपाना सीख गया है। जैसे-जैसे मनुष्य के व्यापार बहुरूपी एवं जटिल होते गए वैसे-वैसे उसके मूल रूप प्रच्छन्न होते गए । प्रच्छनता का उद्घाटन कवि कर्म का एक मुख्य अंग बन गया है ।काव्य में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता बिम्बग्रहण अपेक्षित होता है यह बिम्बग्रहण निर्दिष्ट गुर्जर और मूर्त विषय का ही हो सकता है। कवि का प्रयास यह रहता है कि वह कविता में इन बिम्बों को उपस्थित कर प्रछन्नता को उजागर करे और वस्तु स्थिति से पाठकों को अवगत कराये। शुक्ल जी का निष्कर्ष यह है कि सभ्यता के प्रसार के साथ-साथ कविता की आवश्यकता इसलिए बढ़ेगी क्योंकि कविता ही हमारी मनुष्यता को जगाती है। काव्य में अर्थ ग्रहण नहीं बिम्ब ग्रहण होना चाहिए जो मूर्त, गोचर और निर्दिष्ट रूप का हो सकता है।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल ने कवि कर्म का मुख्य अंग किसे माना है।
- प्रस्तुत पाठ्यांश की विषय वस्तु के बारे में बताइए।

3-कविता और सृष्टि प्रसार

इस शीर्षक के अंतर्गत शुक्ल जी ने काव्य की विषय-वस्तु एवं उसकी व्यापकता पर प्रकाश डाला है। कविता का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वह आदिम रूपों और व्यापारों को पुनः उभार कर उसे हमें परिचित करवाये। इसके परिणामस्वरुप बाह्य प्रकृति के साथ मानव की अंत: प्रकृति का सामंजस्य होता है और उसकी भावात्मक सत्ता का प्रसार होता है। शेष सृष्टि से अपने आपको विलग करने पर मनुष्य में मनुष्यता ना रहेगी । यदि शेष सृष्टि के नित्य-प्रति के विभिन्न व्यापारों ने मनुष्य को प्रभावित नहीं किया होता तो उसके जीवन में क्या रह जाता। काव्य दृष्टि निम्न क्षेत्र तक सीमित होती है । (1) नर-क्षेत्र (2)मनुष्येतर बाह्य सृष्टि (3) समस्त चराचर। (1) नर-क्षेत्र - यह कविता का सर्वाधिक व्यापक क्षेत्र है। नरत्व की बाह्य प्रकृति और अंत:प्रकृति के नाना संबंधों और पारस्परिक विधानों का संकलन या उद्भावना ही काव्यों में मुक्तक या प्रबंध में पाई जाती है। कहीं-कहीं इनमें दोनों रूप भी पाये जाते हैं। वाल्मीकि रामायण तथा तुलसी के रामचरितमानस आदि सभी प्रबंध काव्यों में प्रधान विषय लोक चरित्र है। सहित्यशास्त्र की रस निरूपण पद्धति में बाह्य रूप में प्रकृति चित्रण उद्दीपन रूप में आया है या इसमें केवल नाम गिनाए गए हैं ।तात्पर्य यह है कि कविता अधिकांशत: नरक्षेत्र के भीतर ही हुई है।

4- मनुष्येतर बाह्य सृष्टि

बाह्य प्रकृति को आलम्बन रूप में संस्कृत कवियों ने ग्रहण किया और यही कारण है कि उनके वर्णनों में अपूर्व माधुर्य सजीवता और सौंदर्य है । मन में आई वस्तुओं का ग्रहण दो प्रकार से हो सकता है -बिम्ब ग्रहण और अर्थ ग्रहण । बिम्ब ग्रहण वहां होता है, जहां कवि अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा वस्तुओं के अंग,प्रत्यंग ,वर्ण,आकृति तथा उसके आस-पास की परिस्थिति का परस्पर संश्लिष्ट विवरण देता है ।जहां भी इस प्रकार के वर्णन मिलें उन्हें बाह्य प्रकृति के आलंबन रूप का समझ लेना चाहिए। कालिदास का मेघदूत प्रकृति के आलंबन रूप में किए गए वर्णनों का जीवित उदाहरण है । प्रकृति विविध रूपों में हमारे सम्मुख आती है- विकराल रूप में भी, सुंदर रूप में भी, उसके कुछ चित्र साधारण होते हैं, कुछ भीषण और कुछ असाधारण। सच्चा कवि प्रकृति के इन सभी रूपों का चित्रण समान रूप से करता है। मशीनी युग ने मानव को बाह्य प्रकृति से बहुत दूर कर दिया है, किंतु मानव प्रकृति को भुला नहीं सका है। जिन कवियों में रागात्मक तत्त्व की कमी होती है, वे ही प्रकृति में अपने विलास या सुख की सामग्री ढूंढते हैं।

5-समस्त चराचर पूर्ण काव्य दृष्टि

समस्त चराचर क्षेत्र के भीतर घूमने वाली काव्य दृष्टि सर्वाधिक व्यापक और गंभीर होती है पहली से दूसरी और दूसरी से तीसरी की व्यापकता और गंभीरता बढ़ती जाती है। ।समस्त व्यक्त जगत के बीच जिसकी दृष्टि घूमेगी उसका हृदय अत्यंत विशाल हो जाएगा, उसकी पार्थक्य बुद्धि का परिहार हो जाएगा और उसकी वृत्ति अत्यधिक प्रशांत व गंभीर हो जाएगी। जो तथ्य हमारे किसी भाव को उत्पन्न करते हैं वे उस भाव का आलम्बन बन जाते हैं और रसात्मक तथ्यों को ज्ञानेंद्रियां उपस्थित करती हैं । शुक्ल जी का कहना है कि ज्ञान क्षेत्र की वृद्धि व्यवसायात्मक विस्तार होने के कारण हमें अपने हृदय का भी विस्तार करना होगा।

बोध प्रश्न-

- प्रस्तुत पाठ्यांस के आधार पर बताइए कि कविता का महत्त्वपूर्ण कार्य क्या है?
- प्रस्तुत पाठ्यांस के आधार पर काव्य दृष्टि के विषय में बताइए।

6- काव्य और व्यवहार-

कुछ लोग कविता पर यह आरोप लगाते हैं कि काव्य व्यवहार का बाधक है, उसके अनुशीलन से अकर्मण्यता आती है। मनुष्य को कर्म क्षेत्र में प्रवृत्त करने वाली मूल वृत्ति भावात्मिका है । केवल बुद्धि और ज्ञान द्वारा कुछ नहीं हो सकता । कर्म की ओर मानव को प्रवृत्त कराने के लिए मन में कुछ वेग का आना आवश्यक है। शुद्ध कविता को छोड़कर शुद्ध ज्ञान या विवेक में यह वेग नहीं होता । सीधे ढंग से कहा जाए कि देश का शोषण हो रहा है तो यह कथन प्रभावशाली न होगा पर यदि इस शोषण के चित्र दिखाये जाएं तो वे इतने प्रभावशाली होंगे कि तुरंत प्रभाव डालेंगे। कविता से मन की वृत्तियों का परिष्कार होता है। जो दूसरों के सुख-दुख से प्रभावित होते हैं, उनके लिए कविता अत्यंत आवश्यक एवं प्रयोजनीय वस्तु है जो मानव मात्र को सत्कर्म के लिए प्रेरित करती है।

बोध प्रश्न-

- भावात्मिका के विषय में बताइए।
- प्रस्तुत पाठ्यांश की विषय वस्तु के बारे में बताइए।

7-मनुष्यता की उच्च भूमि और कविता

शुक्ल जी का मत है कि कविता के द्वारा मनुष्य की क्रियाओं और भाव तथा मनोविकारों का विस्तार होता है । सृष्टि का सौंदर्य हमें अह्लादित करने लगता है, निष्ठुर कार्यों के प्रति हमें घृणा होने लगती है, हम अपने जीवन को कई गुने रूप में संसार में व्याप्त देखने लगते हैं। हमारी

दृष्टि व्यक्तिगत सुख-दुख तथा स्वार्थ से ऊपर उठकर संसार के सुख-दुख की ओर हो जाती है ।यहीं पर मनुष्यता की उच्च भूमि की प्रतिष्ठा हो जाती है ।जो लोग संसार के सुख-दुख आदि से मुख मोड़कर अपने में ही लीन होकर रह गए हों, वह जिन्हें किसी प्रकार के दुख से कोई लेना-देना ना हो ,हृदयहीन व्यक्तियों की दवा कविता है। इसतरह कविता व्यक्ति को स्वार्थ के संकुचित घेरे से ऊपर उठाकर मनुष्यता की उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित करती है।

बोध प्रश्न-

- भावों एवं मनोविकारों का विस्तार कैसे होता है? स्पष्ट कीजिए।
- प्रस्तुत पाठ्यांस की भाषा शैली के विषय में बताइए।

8-भावना या कल्पना

रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि काव्यानुशीलन भावयोग है और कर्मयोग तथा ज्ञान योग के समकक्ष है। उपासना भावयोग का ही एक अंग है, जिसका अर्थ पूजा या ध्यान ही नहीं है । इसका वास्तविक अर्थ है-अपने से अलग वस्तु की मूर्ति लाकर उसके सामीप्य का अनुभव करना। यही भावना या कल्पना कहलाती है ।कल्पना दो प्रकार की होती है-(1) विधायक (2) ग्राहक ।कवि में विधायक तथा पाठक या श्रोता में ग्राहक कल्पना का रूप होता है। जहां कवि पूर्ण चित्रण नहीं करता, वहां पाठक को मूर्ति विधान करना पड़ता है।

बोध प्रश्न-

- कल्पना कितने प्रकार की होती है स्पष्ट कीजिए।
- काव्यानुशीलन को रामचंद्र शुक्ल ने क्या कहा है?

9-कविता और मनोरंजन

रामचंद्र शुक्ल का मत है कि कविता का ध्येय मनोरंजन करना नहीं है ।उसका अंतिम लक्ष्य जीवन और जगत् के मार्मिक पक्षों का उद्घाटन करके उनके साथ मनुष्य के हृदय का सामंजस्य स्थापित करना है। कविता में मनोरंजन का गुण है इसीकारण से यह मनुष्य की चित्त की अस्थिरता को रोक देती है तथा पाठक अथवा श्रोता के मन को बांधकर अपने गंभीर उद्देश्य अवगत कराती है। पंडित राज जगन्नाथ ने कविता को रमणीयता की सृष्टि करने वाली कहा है तथा यही काव्य का साध्य है ।किसी भी कौतूहलपूर्ण घटनाओं से युक्त आख्यान या कहानी से भी मनोरंजन होता है कविता का लक्ष्य भी यही मान लिया जाए तो वह भोग-विलास की सामग्री बन जाएगी रीतिकालीन कविता से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि कविता का लक्ष्य भाव का प्रसार करना है विलास की सामग्री बढ़ाना नहीं है।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल के अनुसार कविता का उद्देश्य क्या है?
- प्रस्तुत पाठ्यांश की विषय वस्तु के बारे में बताइए।

10-काव्य और सौंदर्य

कविता हर प्रकार के सौंदर्य को अभिव्यक्त करती है ।सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है अपितु मन के भीतर की वस्तु है। कुछ वस्तुओं का रूप- रंग ऐसा होता है कि हमारे मन में आते ही हमारी सत्ता पर इतना अधिकार कर लेती है कि हमें उसका ध्यान ही नहीं रहता। हमारी अंतःसत्ता की यही तदाकार परिणति सौंदर्य की अनुभूति है । यह परिणति जिस वस्तु में जितनी अधिक होगी वह उतनी ही अधिक सुंदर कहीं जाएगी। किसी वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से हमारी अपनी सत्ता का बोध जितना तिरोभाव होकर कम होगा वह वस्तु उतनी ही सुंदर कही जायेगी। सौंदर्य का दर्शन मानव में ही कवि नहीं करता अपितु प्रकृति के विभिन्न व्यापारों में भी सौंदर्य की झलक देखता है। मनुष्यता की सामान्य भूमि पर पहुंची हुई संसार की सब सभ्य जातियों में सौंदर्य के समान्य आदर्श प्रतिष्ठित हैं। भेद अधिकार अनुभूति की मात्रा में पाया जाता है। किसी पुष्प को देखकर कोई उसे कुरूप नहीं कहेगा क्योंकि उसकी सुंदरता की अनुभूति किसी को कम किसी को अधिक होती है। जिस सौंदर्य की भावना में मग्न होकर मनुष्य अपनी पृथक सत्ता की प्रकृति का विसर्जन करता है वह अवश्य एक दिव्य विभूति होती है ।भक्त लोग अपनी उपासना अथवा ध्यान में इसी विभूति का अवलंबन करते हैं । तुलसी और सूर ने राम और कृष्ण की सौंदर्य भावना में मग्न होकर ऐसी मंगल दशा का अनुभव किया है ।कविता वस्तुओं के रूप रंग की छटा नहीं प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है यहां तक कि जिन मनोवृतियों में संसार को कुरूपता देखा करता है उनमें निहित सुंदरता को कविता ही ढूंढ निकलती है और हमें मुग्ध करती है। यदि किसी अत्यंत सुंदर पुरुष की सत्यप्रियता, वीरता, धीरता आदि अथवा किसी अत्यंत रूपवती स्त्री की सुशीलाता, कोमलता और प्रेम परायणता आदि सामने रख दी जाएं तो सौंदर्य की भावना सर्वांगपूर्ण हो सकती है ।कार्य के दो पक्ष सुंदर-असुंदर होते हैं ,इसे ही धार्मिक शुभ या मंगल कहता है और कभी उसके सौंदर्य पक्ष का उद्घाटन करता है।

बोध प्रश्न-

- सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है मन के भीतर की वस्तु है। स्पष्ट कीजिए।
- कविता में सौंदर्य की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

11-कविता और चमत्कारवाद

चमत्कार मनोरंजन की सामग्री है अत: जो लोग मनोरंजन को काव्य का उद्देश्य मानते हैं ,वे कविता में चमत्कार का समावेश भी करते हैं और उसे खोजते भी हैं। चमत्कार से शुक्ल जी

का तात्पर्य उक्ति के चमत्कार से है जिसके अंतर्गत अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि शब्दालंकारों के साथ-साथ वचन-वक्रता से जुड़े अर्थालंकार भी आते हैं। यद्यपि भावुक कवि भी काव्य में चमत्कार का विधान करते हैं किंतु उसी सीमा तक जहां तक वह भाव-व्यंजना के लिए आवश्यक हो तथापि जिन लोगों के लिए चमत्कार ही काव्य का साध्य बन गया है ,वहां काव्यत्व तो नष्ट हो जाता है और कवि की दृष्टि चमत्कार पर ही टिकी रहती है। इस प्रकार का चमत्कार हिन्दी के रीतिकालन काव्य में प्रचुरता से देखा जाता है, जिसका शुक्ला जी समर्थन नहीं करते हैं। काव्य और सूक्ति में अंतर यह है कि यदि कोई उक्ति हृदय में भाव जाग्रत कर दे या प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे, तो वह काव्य है और जो उक्ति कथन के अनोखे ढंग, रचना विचित्र्य, चमत्कार, कवि की निपुणता या श्रम की ओर ध्यान खींचे, वह सूक्ति है।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल ने चमत्कार के विषय में क्या बताया है?
- काव्य और सूक्ति में क्या अंतर है बताइए?

12- कविता की भाषा

काव्य की सफलता तथा सार्थकता उसकी भाषा पर निर्भर करती है। कविता की भाषा सामान्य भाषा से अलग होती है। कविता में कही गयी बात चित्र रूप में हमारे सामने आनी चाहिए। 'समय बिता जाता है' कहने के स्थान पर कविता भाषा की लक्षणा शक्ति से काम लेकर रहेगी- समय भागा जाता है । काव्य भाषा में भावना को मूर्त रूप में रखने की आवश्यकता होती है, इसलिए उसमें जाति संकेत वाले शब्दों की अपेक्षा विशेष रूप व्यापार सूचक शब्द अधिक रहते हैं । कविता की भाषा में तीसरी विशेषता वर्ण-विन्यास की है । 'सामने सूखा वृक्ष खड़ा है' इस वाक्य को शुष्कोवृक्षस्तिष्ठत्यग्रे और नीरसतरूरिह विलसित पुरत: इन दो रूपों में व्यक्त किया जा सकता है ।स्पष्ट है वर्ण विन्यास की विशिष्टता के कारण द्वितीय कथन में काव्यत्व है, प्रथम कथन में नहीं ।काव्यभाषा में नाद सौंदर्य का विधान होने से उसकी आयु बढ़ती है । अन्त्यानुप्रास ,वृत्ति विधान, लय आदि नाद सौंदर्य में सहायक होते हैं । काव्य भाषा की चौथी विशेषता है- उपयुक्त शब्द चयन ।शब्द प्रकरण विरुद्ध नहीं होने चाहिए। अत्याचारी से छुटकारा पाने के लिए कोई कृष्ण को पुकार रहा है तो उसे मुरलीधर, राधिका रमण की अपेक्षा उसमें कंसनिकंदन जैसे शब्द प्रयुक्त करने चाहिए।

बोध प्रश्न-

- कविता की भाषा कैसी होती है।
- लक्षणा शक्ति का एक उदाहरण बताइए।

13- काव्य और अलंकार

कविता में भाषा की सब शक्तियों से कार्य लेना पड़ता है। कविता में भावोत्कर्ष दिखाने के लिए अलंकारों की आवश्यकता बराबर पड़ती है । कहीं-कहीं तो अलंकारों के बिना कवि का काम ही नहीं चलता है, किंतु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि अलंकार कविता के साधन हैं, साध्य नहीं। जिन कवियों ने इस बात को भुलाकर अलंकारों को ही कविता का साध्य मान लिया उन्होंने अलंकारों का सायास प्रयोग करके कविता के रूप को विकृत कर दिया। उपमानों का ऐसा प्रयोग नहीं करना चाहिए जो प्रस्तुत भाव के विरोधी हों ,केशव अलंकारवादी कवि के पच्चीसों पद्य अलंकार बहुल होते हुए भी प्रभावहीन हैं क्योंकि उसमें मार्मिकता नहीं है। जिस प्रकार कोई सुंदर स्त्री आभूषण धारण करके अपनी शोभा बढ़ाती है । उसी प्रकार कविता भी अलंकारों से अपनी शोभा में वृद्धि करती है किंतु कुरूप स्त्री अलंकार धारण करके सुंदर नहीं बन सकती ।इस प्रकार रमणीयता के अभाव में कोई कविता केवल अलंकारों के बल पर श्रेष्ठ नहीं कहीं जा सकती।

बोध प्रश्न-

- काव्य में अलंकार की क्या आवश्यकता है स्पष्ट कीजिए?
- प्रस्तुत पाठ्यांश की भाषा शैली के विषय में बताइए।

14- कविता पर अत्याचार

कुछ कवि, जो लोभी, स्वार्थी तथा खुशामद करते थे, उन्होंने अनेक अपात्रों की स्तुति कर कविता का गला ही घोंट दिया और उन्होंने कविता पर अत्याचार किया है । शुक्ल जी का कहना है कि तुच्छ वृत्ति वालों का अपवित्र हृदय कविता के निवास के योग्य नहीं है। कवि का काम श्रीमानों के आगमन पर पद्य बनाना या बधाई देना नहीं अपितु तो उसका कार्य है रूप कर्म कलाप जगत और जीवन के बीच में जो उसे सुंदर लगते हैं उन्हीं के वर्णन में स्वान्त: सुखाय प्रवृत होना।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल ने कविता पर किस प्रकार के अत्याचार की बात कही है।
- कविता में स्वान्त: सुखाय कब प्रवृत्त होता है?

15- कविता की आवश्यकता

शुक्ल जी का विचार है कि कविता मानव के लिए अत्यंत प्रयोजनीय वस्तु है इसीलिए संसार की सभी सभ्य-असभ्य जातियों में किसी न किसी रूप में कविता पाई जाती है। चाहे इतिहास और दर्शन ना हो पर कविता का प्रचार अवश्य रहेगा। जैसे-जैसे सभ्यता में वृद्धि होती जाएगी मनुष्य अपने ही व्यापारों के सघन और जटिल मंडल में घिरता जाएगा और शेष सृष्टि के साथ अपने हृदय के संबंध को भूला रहेगा इस परिस्थिति में उसकी मनुष्यता खोने का डर

बराबर बना रहेगा मानव की अंत:प्रकृति में मनुष्यता को समय-समय पर जागते रहने के लिए कविता मानव- जाति के लिए निरंतर आवश्यक रहेगी, हां जानवरों को इसकी आवश्यकता नहीं है।

बोध प्रश्न-

- रामचंद्र शुक्ल के अनुसार कविता के प्रयोजन को स्पष्ट कीजिए।
- मनुष्य के लिए कविता की क्याआवश्यकता है? स्पष्ट कीजिए।

4.3.2- 'कविता क्या है' निबंध का प्रयोजन

शुक्ल जी स्वतंत्र और मौलिक चिंतक थे ।उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य समीक्षात्मक सिद्धांतों का समन्वय करके उनके सामंजस्य का मौलिक रूप में प्रयत्न किया उनके मूल सिद्धांत थे लोक मंगल, साधारणीकरण, रसवाद, प्रकृति प्रेम ,देश प्रेम और विश्व प्रेम । उन्होंने भारतीयता के प्रति अनुरक्ति रखते हुए पश्चात्य जगत से जो नवीनता और औचित्य लगा उसको ग्रहण कर लिया । इन समीक्षा विषयक सिद्धांतों पर साहित्यिक समालोचना का मार्ग प्रशस्त किया "विश्वविद्यालय के उच्च शिक्षा क्रम के भीतर हिन्दी साहित्य का समावेश हो जाने के कारण उत्कृष्ट कोटि के निबंधों महती आवश्यकता थी "इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए शुक्ला जी ने निबंधों की रचना की थी। शुक्ल जी ने कविता क्या है निबंध में काव्य का प्रयोजन लोक मंगल माना है ।कविता व्यक्ति को अकर्मण्य नहीं बनाती बल्कि वह उसकी वृत्तियों को उदार बना देती है जिससे व्यक्ति समस्त जगत को अपना कुटुंब समझने लगता है। उन्होंने वस्तुगत सौंदर्य के सिद्धांत का मण्डन किया है, उनके अनुसार सौंदर्य काव्य का सर्वस्व है । इस तरह शुक्ल जी का 'कविता क्या है' निबंध लिखने का प्रयोजन काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को प्रस्तुत करना है । काव्यशास्त्रीय मान्यताओं में रसवाद और लोकमंगल का जो संलयन शुक्ल जी ने किया है उसी को यह निबंध मूर्त रूप देता है । इस निबंध में शुक्ल जी ने कविता की परिभाषा देते हुए, कविता की आवश्यकता, उपयोगिता ,काव्य विषय, काव्य भाषा, कविता और प्रकृति, कविता में भावना, अलंकार का स्थान, काव्य और सौंदर्य, कविता और चमत्कारवाद तथा कविता पर होने वाले अत्याचार पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

बोध प्रश्न

- ‘कविता क्या है’ निबंध का प्रयोजन क्या है ?

4.3.3- 'कविता क्या है' निबंध में व्यक्त वैचारिकता

कविता क्या है' निबंध हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखा गया है, जो कि उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह चिंतामणि भाग -एक में संकलित है। शुक्ल जी ने इस निबन्ध की रचना साहित्यिक एवं व्यवहारिक उपयोगिता की दृष्टि से की थी। इस निबंध से उनका

मौलिक चिंतन, विषय विश्लेषण क्षमता एवं सूक्ष्म दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है। यह निबंध साहित्यिक समीक्षा संबंधी निबंध है जो शास्त्रीय आलोचना से संबंधित है। यह निबंध कविता की परिभाषा, प्रकार, और महत्व पर प्रकाश डालता है।इस निबंध में शुक्ल जी ने कविता को "मन की रचना" कहा है। उनके अनुसार, कविता मन की अनुभूतियों और भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के साथ ही यह अनुभूतियों और भावनाओं को कलात्मक रूप से व्यक्त करती है।शुक्ल जी ने कविता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि कविता मनुष्य के जीवन में आनंद, प्रेरणा, और उत्साह का स्रोत है। यह मनुष्य को जीवन के विभिन्न पक्षों को सूक्ष्मता से समझने और उसके प्रति सजग होने में मदद करती है।'कविता क्या है' निबंध हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण निबंध है। इसमें शुक्ल जी ने कविता के लक्षणों को स्पष्ट किया है इस निबंध में उनका विवेचन नीरस नहीं हुआ है क्योंकि उन्होंने हृदय एवं बुद्धि का संतुलित समन्वय किया है। चिंतामणि भाग एक में स्वयं शुक्ल जी ने 'निवेदन' के अन्तर्गत इस तथ्य को इन शब्दों में व्यक्त किया हैं-" इस पुस्तक में मेरी अंतर्यात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को भी साथ लेकर। अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहां कहीं मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुंची है, वहां हृदय थोड़ा-बहुत रमता और अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कुछ कहता गया है ।इस प्रकार यात्रा के श्रम का परिहार होता रहा है। बुद्धि-पथ पर हृदय भी अपने लिए कुछ-ना-कुछ पाता रहा है।" यही उनकी विशेषता है।

बोध प्रश्न

- शुक्ल जी के 'चिंतामणि' के 'निवेदन' में क्या कहा है ?

4.3.4- 'कविता क्या है' निबंध का भाषा सौष्ठव

भाषा भावों की वाहिका होती है। किसी भी लेखक के मानसिक विचारों को भाषा के माध्यम से मूर्तता प्राप्त होती है। कोई भी भाव बिना भाषा के व्यक्त नहीं हो सकता और भाषा भी भाव विहीन नहीं होती है। वास्तव में वही भाषा सफल मानी जाती है जो अभिप्सित भावों को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में सक्षम होती है। विषयानुकूल और भावानुकूल भाषा ही श्रेष्ठ मानी जाती है। 'कविता क्या है' निबंध की भाषा सम्बन्धी निम्न विशेषताएं हैं-

(1) इस निबन्ध की भाषा विशुद्ध साहित्यिक परिनिष्ठित हिन्दी है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रमुखता है।जैसे कोकिल, मधुर, उच्छृंखलता आदि।

(2) शुक्ल जी का भाषा विषयक दृष्टिकोण अत्यंत उदार था, उन्होंने संस्कृत शब्दों के साथ-साथ अरबी- फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी इस निबन्ध में किया है। जैसे- स्टेशन, इंजिन, जरूरत आदि।

(3) इस निबंध में शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत, प्रौढ़ एवं साहित्यिक है जिसमें भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता है।

(4) इस निबंध में शुक्ल जी ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है, किंतु ये अलंकार चमत्कार प्रदर्शन के लिए ना होकर विषय को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।

(5) इस निबंध में शुक्ल जी का वाक्य विन्यास पूर्णत: व्याकरणसम्मत और सुगठित है ।उसमें हिन्दी की मूल प्रवृत्ति का ध्यान रखा गया है, अंग्रेजी ढंग की वाक्य रचना से उनकी भाषा मुक्त है।

(6) 'कविता क्या है' निबंध की भाषा में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहीं भी बोझिलपन, उलझन और अस्पष्टता नहीं है। वह व्याकरणसम्मत है, अशुद्धियों से मुक्त है और विराम चिन्हो का प्रयोग अत्यन्त सजगता से किया गया है।

(7) कविता क्या है निबंध में संस्कृत के तत्सम शब्द हैं जिसमें बीच-बीच में तद्भव या देशज शब्द नगीनों की भांति जड़ दिए गए हैं जैसे- गड़बड़झाला, खेल तमाशे आदि।

(8) इस निबंध में शुक्ल जी ने अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हिन्दी के जो शब्द निर्मित किए हैं वे उनकी प्रतिभा के परिचायक है।

(9) इस निबंध में सामासिक पदों का सहज विधान करने के साथ ही लाक्षणिक भाषा का प्रयोग भी शुक्ल जी ने किया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि 'कविता क्या है' विचार प्रधान निबंध है, जिसमें शुक्ल जी का ह्रदय भी अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप भावात्मक और सरल स्थलों पर रमता रहा है, जिससे यह निबंध सरस और रोचक हो गया है ।

बोध प्रश्न

- शुक्ल जी की भाषा की दो विशेषताएँ बताइए।

4.3.5- 'कविता क्या है' निबंध का शैली सौंदर्य

रामचंद्र शुक्ल जी ने अपने 'कविता क्या है' निबंध में आवश्यकता और विषय के अनुरूप विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उनकी शैली उनके व्यक्तित्व का की परिचायक है ।संक्षेप में शैली के जो विविध रूप उनके निबंध में दिखाई पड़ते हैं उनका विवेचन निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है-

(1) आलोचनात्मक शैली- इस शैली का प्रयोग शास्त्रीय समीक्षा संबंधी निबंधों में किया जाता है। यह चिंतन प्रधान शैली है, जिसमें तर्क और विश्लेषण की प्रधानता है, चिंतन का गाम्भीर्य और

भाषा की सुव्यवस्था इस शैली में दिखाई पड़ती है 'कविता क्या है' का एक उदाहरण दृष्टव्य है- "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्थारस दशा कहलाती है ।हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।"

(2) समास शैली- शुक्ल जी के निबंध 'कविता क्या है' में प्राय: समास शैली का प्रयोग हुआ है। समास शैली में विचारों की सघनता और कम शब्दों में अधिक बात कहने की क्षमता दिखाई पड़ती है इसे सूत्र शैली भी कहा जा सकता है। 'कविता क्या है' में वे लिखते हैं- "जो केवल अपने विलास या शरीर सुख की सामग्री ही प्रकृति में ढूंढा करता हैं उनमें उस रागात्मक सत्व की कमी है जो व्यक्त सत्ता मात्र के साथ एकता की अनुभूति में लीन करके हृदय के व्यापकत्व का अभास देता है। संपूर्ण सत्ताएं एक ही परम सत्ता और संपूर्ण भाव एक ही परम भाव के अंतर्भूत है। अतः बुद्धि की क्रिया से हमारा ज्ञान जिस अद्वैत भूमि पर पहुंचता है उसी भूमि तक हमारा भावात्मक हृदय भी इस सत्व रस के प्रभाव से पहुंचता है।"

(3) संस्कृत बहुला अलंकृत शैली- शुक्ल जी के निबंध 'कविता क्या है' में कहीं-कहीं संस्कृत बहुल पदों वाली अलंकृत शैली का प्रयोग भी मिलता है जो उनकी बुद्धिमता की परिचायक है । यद्यपि इस शैली का प्रयोग उन्होंने अधिक नहीं किया है तथापि यह शैली इस बात की परिचायक है कि शुक्ल जी उच्चकोटि की आलंकारिक भाषा भी लिख सकते थे।'कविता क्या है' में वे लिखते हैं" जो केवल प्रफुल्ल प्रसून प्रसार के सौरभ संचार, मकरंद लोलुप मधुप गुंजार, कोकिल कूजित निकुंज और शीतल सुखद स्पर्श समीर आदि की ही चर्चा करते रहते हैं वे विषयी या भोगलिप्सु हैं।"

(4) निर्णयात्मक शैली- इस शैली का प्रयोग प्रधानत: आलोचना संबंधी निबंधों में होता है। इस शैली में उनकी मत स्थापना हुई है। कहीं-कहीं तुलनात्मक विवेचना करके निर्णय देने की प्रवृत्ति भी मिलती है।'कविता क्या है' में वे लिखते हैं" सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। योरोपीय कला समीक्षा की यह एक बड़ी ऊंची उड़ान या बड़ी दूर की कौड़ी समझी गई है ।पर वास्तव में यह भाषा के गड़बड़झाले के सिवाय और कुछ नहीं है ।जैसे वीर कर्म से पृथक् वईरत्व कोई पदार्थ नहीं वैसे ही सुंदर वस्तु से पृथक् सौंदर्य कोई पदार्थ नहीं।"

(5) तर्कपूर्ण शैली- शुक्ल जी के निबंध 'कविता क्या है' समीक्षात्मक निबंध में तर्कपूर्ण शैली के दर्शन होते हैं। कहीं-कहीं वे अन्य सिद्धांतों के खंडन-मंडन में तर्क का सहारा लेते पाए जाते हैं ।जैसे -"उक्ति ही काव्य होती है, यह तो सिद्ध बात है ।हमारे यहां भी व्यंजक वाक्य ही माना जाता है ।अब प्रश्न यह है कि कैसी उक्ति,

किस प्रकार की व्यंजना करने वाला वाक्य।वक्रोक्ति वादी कहेंगे कि ऐसी उक्ति जिसमें कुछ वैचित्र्य या चमत्कार हो,व्यंजना चाहे जिसकी हो, या किसी ठीक-ठाक बात की ना हो।पर जैसा कि हम कह चुके हैं, मनोरंजन मात्र काव्य का उद्देश्य न मानने वाले उनकी इस बात का समर्थन करने में असमर्थ होंगे?"

(6) हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली- 'कविता क्या है' निबंध में स्थान-स्थान पर हास्य-व्यंग्य का पुट भी दिखाई पड़ता है। सामाजिक विसंगतियों को व्यक्त करने के लिए शुक्ल जी इस शैली का प्रयोग करते हैं किंतु यह उल्लेखनीय है कि उनका हास्य मर्यादित है और व्यंग्य अमोघ है। हास्य का प्रयोग वह ऐसे स्थलों पर करते हैं जहां विषय की वस्तुगत विशेषता गंभीर विचार सूत्रों द्वारा नहीं समझाइए जा सकती यथा-" हिन्दी के रीति-काल के कवि तो मानों राजाओं-महाराजाओं की काम-वासना उत्तेजित करने के लिए ही रखे जाते थे। एक प्रकार के कविराज तो रईसों के मुंह के मकरध्वज रस झोंकते थे, दूसरे प्रकार के कविराज कान में मकरध्वज रस की पिचकारी देते थे, पीछे से तो ग्रीष्मोपचार आदि के नुस्खे भी कवि लोग तैयार करने लगे।"

उपरोक्त शैलियों के अतिरिक्त 'कविता क्या है' निबंध में भावानुकूल शैली, विषयानुरूप शैली, व्याख्यात्मक शैली,विवेचनात्मक शैली इत्यादि का प्रयोग देखने को मिलता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 'कविता क्या है' निबंध की शैली शुक्ल जी के व्यक्तित्व के अनुरूप है । उन्होंने विषय के अनुरूप भाषा शैली को परिवर्तित कर दिया है। उसमें लाक्षणिकता ,उक्ति वैचित्र्य,आलंकारिकता और सूत्रात्मकता जैसे गुण विद्यमान हैं।

बोध प्रश्न

- कविता क्या है में कौन कौन सी शैलियों का प्रयोग मिलता है ?

4.4 : पाठ सार

'कविता क्या है' निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल (1884-1941 ई०)के द्वारा लिखित है जो ,चिंतामणि भाग-एक निबंध संग्रह में संकलित है। इस निबंध में शुक्ल जी ने अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताएं प्रस्तुत की है ।काव्यशास्त्रीय मान्यताओं में रसवाद और लोकमंगल का जो संलयन शुक्ल जी ने किया है उसी को यह निबंध मूर्त रूप देता है । इस निबंध में शुक्ल जी ने कविता की परिभाषा देते हुए ,कविता की आवश्यकता, उपयोगिता ,काव्य विषय, काव्य भाषा, कविता और प्रकृति, कविता में भावना, अलंकार का स्थान, काव्य और सौंदर्य, कविता और चमत्कारवाद तथा कविता पर होने वाले अत्याचार पर विस्तार से प्रकाश डाला है। शुक्ल जी ने कविता को भाव योग कहा है और इसे ज्ञानयोग एवं कर्मयोग के समकक्ष माना है। वे कहते हैं कि सभ्यता के प्रसार के साथ-साथ कविता की आवश्यकता इसलिए बढ़ेगी क्योंकि कविता ही

हमारी मनुष्यता को जगाती है। काव्य का विषय मानव, प्रकृति ,भावना सौंदर्य सब कुछ हो सकता है। कविता अत्यंत आवश्यक एवं प्रयोजनीय वस्तु है, जो मानव मात्र को सत्कर्म के लिए प्रेरित करती है। शुक्ल जी का मत है कि कविता भाव एवं मनोविकारों का परिष्कार करती है तथा इनका क्षेत्र विस्तृत करते हुए इनका प्रसार भी करती है। कविता पढ़ते समय मनोरंजन आवश्यक होता है ।वह हमें कर्म में प्रवृत्त करती है ,एक संदेश देती है इसलिए मनोरंजन को काव्य का एकमात्र उद्देश्य नहीं कहा जा सकता। कविता हर प्रकार के सौंदर्य को अभिव्यक्त करती है। सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है अपितु मन के भीतर की वस्तु है। काव्य और सूक्ति का अंतर समझाते हुए शुक्ल जी कहते हैं कि यदि कोई उक्ति हृदय में भाव जाग्रत कर दे तो वह काव्य और जो उक्ति कथन के अनोखे ढंग ,रचना वैचित्र्य, चमत्कार, कवि की निपुणता या श्रम की ओर ध्यान खींचे,वह सूक्ति है। शुक्ल जी कहते हैं कि कविता की भाषा सामान्य भाषा से अलग होती है । इसमें लक्षणा शक्ति, वर्ण-विन्यास, विशेष रूप व्यापार सूचक शब्द,तथा उपयुक्त शब्द चयन का महत्त्व होता है। अलंकार के विषय में शुक्ल जी का मत है कि अलंकार कविता का साधन है साध्य नहीं और अंतिम में कविता की आवश्यकता के विषय में शुक्ल जी कहते हैं कि, कविता मानव के लिए अत्यंत प्रयोजनीय वस्तु है इसीलिए संसार की सभी सभ्य-असभ्य जातियों में किसी न किसी रूप में कविता पाई जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है की 'कविता क्या है' निबंध में शुक्ल जी ने विषयानुकूल भाषा का प्रयोग करते हुए कविता के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। इस निबंध में उनका विवेचन नीरस नहीं हुआ है, क्योंकि उन्होंने हृदय एवं बुद्धि का संतुलित समन्वय किया है।

4.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

1- अध्ययन से यह पता चलता है कि, आचार्य रामचंद्र शुक्ल (1884-1941 ई०) के द्वारा लिखित 'कविता क्या है' निबंध सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में सन् 1909 ई० में प्रकाशित हुआ ।उसके बाद कुछ वैचारिक परिवर्तनों के साथ 1939 ई० में चिंतामणि भाग-एक निबंध संग्रह में प्रकाशित हुआ।

2-यह आलोचनात्मक निबंध है, इस निबंध का प्रारंभ शुक्ल जी ने समास शैली/सूत्र शैली से किया है, साथ ही विभिन्न प्रकार की शैलियों का इस निबंध में प्रयोग हुआ है जिससे निबंध को पढ़ने पर रोचकता का संचार होता है।

3-इस निबंध को पढ़ने से कविता की परिभाषा, कविता की आवश्यकता, उपयोगिता, काव्य विषय, काव्य भाषा, कविता और प्रकृति, कविता में भावना, अलंकार का स्थान, काव्य और

सौंदर्य, कविता और चमत्कारवाद तथा कविता पर होने वाले अत्याचार पर विशेष जानकारी मिलती है।

4-इसको पढ़ने के उपरान्त 'कविता क्या है' निबंध के प्रयोजन के विषय में ज्ञात होता है कि शुक्ल जी का 'कविता क्या है' निबंध लिखने का प्रयोजन काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को प्रस्तुत करना है । काव्यशास्त्रीय मान्यताओं में रसवाद और लोकमंगल का जो संलयन शुक्ल जी ने किया है उसी को यह निबंध मूर्त रूप देता है ।

5-इस निबंध के भाषा सौष्ठव के विषय में यह पता चलता है कि शुक्ल जी के इस निबंध की भाषा विषय के अनुरूप प्रौढ़, गंभीर एवं साहित्यिकता का पुट लिए हुए है।वह परिष्कृत एवं संयत है उसमें भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता है। प्रत्येक शब्द अपने स्थान पर ऐसा जड़ा हुआ है कि उसे वहां से हटा पाना असंभव है।

4.6 : शब्द संपदा

1-तादात्म्य - तल्लीनता

2- परिष्कार - सुरुचिपूर्ण

3- प्रत्यक्ष - स्पष्ट दिखाई पड़ना

4- तृप्त - जिसकीइच्छाएं पूरी हो गई हों

5-मंजरि - कोपल

6-अमराई - आम का बाग

7-मनुष्येतर - मनुष्य से भिन्न

8-हर्ष - खुशी, प्रसन्नता

9-विषाद - दु:ख

10-द्वेष - वैमनस्यता

11-उच्छृंखलता- निरंकुशता

12-दुर्दिन - बुरे दिन

13-प्रफुल्लता - हंसता हुआ, प्रसन्न

14-प्रच्छन्नता - गोपनीयता

15- स्वान्त: सुखाय- अपने सुख के लिए

4.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड(अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1- कविता के संबंध में शुक्ल जी के विचार क्या हैं? चिंतामणि के 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर इसका संक्षेप में विवेचन कीजिए?

2- निम्न अवतरण की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए एवं इसके साहित्यिक सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

" जब तक कोई अपने पृथक् सत्ता की भावना को ऊपर किये इस क्षेत्र के नाना रूपों और व्यापारों को अपने योगक्षेम, हानि-लाभ, सुख-दु:ख आदि से सम्बद्ध करके देखता रहता है तब तक उसका हृदय एक प्रकार से बद्ध रहता है ।इन रूपों और व्यापारों के सामने जब कभी वह अपनी पृथक् सत्ता की धारणा से छूटकर- अपने आपको बिल्कुल भूलकर- विशुद्ध अनुभूति मात्र रह जाता है ,तब वह मुक्त हृदय हो जाता है। जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है ,उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है ।हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं । इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं।"

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1- 'कविता क्या है' निबंध के भाषा सौष्ठव पर प्रकाश डालिए?

2- 'कविता क्या है' निबंध में व्यक्त वैचारिकता के विषय में बताइए।

3- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य की क्या परिभाषा दी है? तथा "हृदय की मुक्तावस्था रसदशा है" का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

(1) 'कविता क्या है' निबंध के लेखक कौन हैं? ( )

(क)श्याम सुंदर दास　　　(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ग)डॉ० नगेंद्र　　　(घ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(2) 'कविता क्या है' निबंध किस निबंध संग्रह में संकलित है? ( )

(क) चिंतामणि भाग एक (ख) चिंतामणि भाग दो

(ग) चिंतामणि भाग तीन (घ) चिंतामणि भाग चार

(3) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था क्या कहलाती है? ( )

(क) मनोविकार (ख) रसदशा (ग)ज्ञानदशा (घ) साधनावस्था

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1)............ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ- संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है।

(2)..........बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है।

(3) मनुष्य के लिए.......... इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य- असभ्य सभी सभी जातियों में, किसी न किसी रूप में पाई जाती है।

(4) मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे..........कहते हैं

(5) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था........... कहलाती है।

III. सुमेल कीजिए-

1-तादात्म्य	(अ) प्रसन्नता।
2-मंजरि	(आ)वैमनस्यता
3-हर्ष।	(इ)तल्लीनता
4-विषाद	(ई)कोपल
5-द्वेष	(उ) दु:ख

4.8 : पठनीय पुस्तकें

1- आचार्य रामचंद्र शुक्ल-चिंतामणि भाग एक, निबंध संग्रह

2- डॉ०नगेंद्र और डॉ०हरदयाल -हिन्दी साहित्य का इतिहास

3- विश्वनाथ त्रिपाठी- हिन्दी आलोचना

4- डॉ०श्यामसुंदर दास –साहित्यालोचन

5- डॉ०भागीरथ मिश्र -काव्यशास्त्र

इकाई 5 : हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा
5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ: हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' की विवेचना
5.3.1 विवेच्य निबंध की विषय वस्तु
5.3.2 विवेच्य निबंध का प्रयोजन
5.3.3 विवेच्य निबंध में व्यक्त वैचारिकता
5.3.4 भाषा सौष्ठव
5.3.5 शैली सौन्दर्य
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द-संपदा
5.7 परीक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1: प्रस्तावना

प्रिय छात्रो !आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने निबंध साहित्य के शुष्क प्रदेश को 'ललित निबंध 'नामक रसमयी धारा से जोड़ने का महनीय कार्य किया है। निबंध लेखन की भिन्नभिन्न - कोटियाँमौजूद हैं उनमें से एक कोटि ललित निबंध की है। ललित निबंध में अन्य निबंधों की तुलना में चिंतन का आकाश कुछ अधिक खुला होता है। यहाँ किसी प्रकार का बंधन नहीं है। इसमें परिवेश का उचित छौंक मौजूद रहता है। ललित निबंध में लेखक अपनी निजी मान्यताओं को सामान्य तरीके से प्रस्तुत करता है। इसमें लेखक अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को पाठक तक पहुंचाकर उसके साथ तादाम्य स्थापित कर लेता है। ललित निबंध की बुनावट या कसावट की बात जाए तो इसमें एक तरफ जहां कविता सी तरलता होती है तो दूसरी तरफ कहानी का उतार–चढ़ाव। गंभीर विचार प्रवाह और सांस्कृतिक दृष्टि के साथ-साथ रमणीयताकल्पना की , उड़ान और विनोदपूर्ण शैली मौजूद होती है।

हिन्दी साहित्य में प्रकृति-विषयक, आत्मपरक, हास्य-व्यंग्यपरक, लोक-जीवनपरक, संस्मरणात्मक, समसामयिक युगबोधपरक व सांस्कृतिक विषयक आदि ललित निबंध लिखे गए हैं। ललित निबंध को हिन्दी साहित्य में पूर्ण उत्कर्ष तक पहुंचाने का श्रेय आचार्य द्विवेदी को प्राप्त है। वे ललित निबंधों के क्षेत्र में हिमशिखर स्वरूप हैं। 'अशोक के फूल' उनके द्वारा रचित ललित

निबंधों के विपुल भंडार में से एक विशेष निबंध है। इसके माध्यम से आचार्य द्विवेदी जी ने भारत की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक यात्रा के अनेकानेक पहलुओं से हमारा परिचय कराते हैं।

5.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में आप आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'अशोक के फूल' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़कर आप-

- ❖ विवेच्य निबंध की विषय-वस्तु का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- ❖ अशोक के फूल निबंध के प्रयोजन या उद्देश्य से आप परिचित हो सकेंगे ।
- ❖ अशोक के फूल के वर्ण्य विषय की जानकारी हासिल कर सकेंगे ।
- ❖ निबंध की अंतर्वस्तु की विशेषताएं बता सकेंगे।
- ❖ भाषा और शैली की दृष्टि से निबंध पर विचार कर सकेंगे।

5.3 : मूल पाठ : हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फुल' की विवेचना

यह सर्वविदित है कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने साहित्येतिहास लेखन के साथ ही उपन्यास और निबंध लेखन के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी चलाई है। इन दोनों विधाओं में उन्हें अपार सफलता मिली है। उपन्यास के क्षेत्र में उन्होंने भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों को पुनर्जीवित किया। इसी प्रकार निबंध लेखन की दुनिया में कभी अपने आसपास होने वाली गतिविधि अथवा प्रकृति की किसी विशिष्ट कृति को आधार बनाकर भारत की गौरवशाली परंपरा का तार्किक एवं समन्वयवादी इतिहास प्रस्तुत किया है। 'अशोक के फूल' शीर्षक निबंध उनके इसी चिंतन पद्धति का प्रत्यक्षीकरण है।

प्रस्तुत निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अशोक के फूल की महनीय सांस्कृतिक परंपरा एवं उसके महत्व का प्रतिपादन किया है। लेखक का मत है कि अशोक के फूल का किसी समय में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत ही महत्व रहा है। लेकिन वर्तमान में वह धूमिल या समाप्त हो गया है। अशोक की इस स्थिति से लेखक को अत्यधिक क्षोभ है। उन्होंने पिछले हजारों वर्ष की भारतीय चिंतन परंपरा में मौजूद इस फूल के महत्व पर ध्यान आकृष्ट किया है। निबंधकार ने इस फूल के मनोहर एवं रहस्यमयी छवि, भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में उसकी उपस्थिति, यक्ष और गंधर्व के पूज्य वृक्ष व सामंती-सभ्यता के प्रतीक कर रूप में इसका बखूबी वर्णन किया है। उक्त प्रसंगों के बीच इस निबंध में भुलक्कड़ दुनिया की स्वार्थता और मनुष्य की निर्मम जीवनी-शक्ति एवं बदलती मनोवृति पर भी रोचक ढंग से चर्चा की गई है। विवेच्य निबंध के सारांश को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं।

बोध प्रश्न:

- आचार्य द्विवेदी ने निबंध के अलावा अन्य किस विधा में लेखन कार्य किया है ?
- लेखक को किस बात को लेकर अत्यधिक क्षोभ है ?

5.3.1 विवेच्य निबंध की विषय-वस्तु (सारांश)

अशोक के फूल का मनोहर रूप –

प्रस्तुत निबंध का आरंभ अशोक के फूल के मनोहर रूप के वर्णन से किया गया है। छोटे-छोटे लाल पुष्पों के मनोहर स्तबकों (फूलों का गुच्छ) में खिला अशोक अत्यंत मनमोहक है। कामदेव ने भी उसकी मनोहर रूपराशि पर रीझकर उसे अपने तूणीर में स्थान देने योग्य समझा। यह पुष्पित अशोक निस्सन्देह बहुत सुन्दर है और इसे देखकर मन उदास हो जाता है। इसका वास्तविक कारण तो अन्तर्यामी ही जानते हैं। आचार्य द्विवेदी जी शोक सहित अशोक के फूल का महत्व आदि को व्याख्यायित करते हैं।

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में अशोक के फूल –

अशोक के मनोहर रूप पर चर्चा के पश्चात् निबंधकार ने भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में अशोक के फूल का प्रवेश और विस्मृत करने का वर्णन किया है। द्विवेदी जी ने लिखा है कि भारतीय साहित्य में इस फूल का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार है। ऐसा नहीं है कि प्राचीन साहित्यकारों या कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस फूल को महत्व नहीं दिया गया है। अवश्य दिया गया है, लेकिन कालिदास की रचनाओं में वह जिस शोभा और सुकुमारता को लेकर आता है, उसमें नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है। मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के साथ ही इस मनोहर फूल से संबंधित साहित्य लुप्त हो गया। बाद में लोग इस फूल का ऐसे ही नाम लेते हैं, जैसे बुद्ध और विक्रमादित्य का।

कालिदास ने अशोक को अपूर्व सम्मान दिया था। उन्होंने अशोक के फूल को सुन्दरियों के नूपुर वाले चरणों के मृदु आघात से फूलने वाला, कोमल कपोलों पर आभूषणवत् रहकर उनकी शोभा बढ़ाने वाला बताया है। वह महादेव के हृदय में भी क्षोभ उत्पन्न करने वाला तथा राम के मन में सीता का भ्रम पैदा करने वाला भी रहा है। कामदेव के अन्य बाणों- अरविन्द (कमल), आम, नीलोत्पल (नील-कमल) व नवमल्लिका - का वर्णन अब भी कवि करते हैं, लेकिन अशोक ही अभागा है। कमल, आम व नीलोत्पल को सभी ने याद रखा। हाँ यह जरूर है कि नवमल्लिका को अब विशेष महत्व नहीं मिल रहा है किन्तु इससे ज्यादा महत्व कभी प्राप्त भी नहीं हुआ थी। लेकिन दुर्भाग्य से आज अशोक को भुला दिया गया है। केवल परंपरा-निर्वाह के लिए कवि यत्र-तत्र इसका प्रयोग उपमान या उद्दीपन रूप में कर लेते हैं। लेखक का विकल मन भारतीय रस-साधना के हजारों वर्षों का हवाला देते हुए कहता है कि क्या यह मनोहर पुष्प भुलाने की चीज है? क्या सहृदयता लुप्त और कविता सो गई थी? क्या कवियों का हृदय भी मनोहर वस्तुओं को देखकर मुग्ध नहीं होता या उन्हें देखकर उनके मन में भाव उत्पन्न नहीं होते? लेखक का आहत मन मानने को तैयार नहीं होता है और कहता है कि जले पर नमक यह है कि तरंगायित पत्रवाले

निफूले पेड़ को सारे उत्तर भारत में अशोक कहकर याद किया गया। याद का यह रूप अपमान का परिचायक है।

पुनः भारतीय धर्म, साहित्य और शिल्प में अशोक के फूल का जिक्र करते हुए कहते हैं मेरे मानने और नहीं मानने से क्या फर्क पड़ता है। ईसवी सन् के आरम्भ से ही अशोक का शानदार पुष्प भारतीय धर्म, साहित्य और शिल्प में अद्भुत महिमा के साथ प्रस्तुत हुआ था। उसी समय यक्षों और गन्धर्वों ने भारतीय धर्म-साधना को एकदम नए रूप में परिवर्तित कर दिया था। विद्वानों का मानना है कि कंदर्प और गंधर्व शब्द में केवल उच्चारण मात्र का अन्तर है। कंदर्प ने अशोक को अपनाया तो वह निश्चित ही आर्येत्तर सभ्यता की देन है। इन आर्येतर जातियों ने वरुण, कुबेर, इन्द्र को भी पूजा। कंदर्प ही कामदेव हुआ, जो शिव से पराजित हुआ, विष्णु से डरता था और बुद्धदेव से टक्कर लेकर लौट आया। वह हारकर भी झुका नहीं, बल्कि अशोक रूपी अस्त्र का प्रयोग कर बौद्ध धर्म को घायल किया तथा शैव-शक्ति साधना को झुका दिया। वज्रयान, कौल-साधना और कापालिक मत इस बात के साक्षी हैं।

बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान डालने वाले युगद्रष्टा रवीन्द्रनाथ का भी जिक्र किया है। द्विवेदी जी ने लिखा है कि रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को 'महामानवसमुद्र' कहा है। आज के भारतवर्ष को बनाने के लिए असुर, आर्य, शक, हुण, नाग, यक्ष, गंधर्व आदि अनेक जातियाँ आयी और समा गईं। हिन्दू जाति अनेक आर्य और आर्येतर उपादानों का अद्भुत सम्मिश्रण है। पशु-पक्षियों की अपनी परम्परा है। अशोक, आम, बबूल, और चम्पे की भी अपनी परम्परा है। जैसे सबकी अपनी परम्परा है ठीक वैसे ही अशोक की भी अपनी स्मृति-परम्परा है। वामन-पुराण का उल्लेख करते हुए लिखा है कि कामदेव ने शिव पर प्रहार किया जिससे वह स्वयं भस्म हो गया। उसका रत्न जड़ित धनुष पृथ्वी पर गिरकर टूट गया। रुक्म-मणि से बना मूठ का स्थान टूटकर चंपे का फूल, हीरे का बना नाह का स्थान टूटकर मौलश्री का फूल, इन्द्रनील मणियों से बना कोटि देश सुन्दर पाटल-पुष्प, चन्द्रकान्त मणियों से बने भाग से चमेली और विद्रुम से बनी कोटि बेला बन गई। स्वर्ग को जितने वाला कठोर धनुष धरती से मिलकर फूल में बदल गया। वामन-पुराण की उक्त प्रसंग के माध्यम से द्विवेदी जी ने बड़े सधे स्वर में कहा कि स्वर्गीय वस्तुएं धरती से मिले बिना मनोहर नहीं होती।

बोध प्रश्न:

- कामदेव के पाँच बाणों के नाम का उल्लेख करें।
- 'महामानवसमुद्र' किसे कहा गया और किसने कहा?

आर्य एवं गंधर्व जाति में अशोक की उपस्थिति

अशोक वृक्ष का संबंध गन्धर्व जाति के पूज्य वृक्ष से है न कि आर्य जाति। जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है कि गन्धर्व और कंदर्प दोनों शब्द एक ही हैं। जो कंदर्प आज कामदेव के रूप

में आर्यों के देवता स्वीकार किये जाते है, वह वास्तव में गन्धर्व जाति का देवता थे। भारत में आर्यों के अतिरिक्त असुर, शक, हूण, नाग, यक्ष, गन्धर्व आदि जातियाँ बाहर से आयीं और यहीं पर बस गयीं। सभी ने भारत के निर्माण और प्रगति में सहयोग किया। आर्यों का इन सभी से संघर्ष हुआ। जिन जातियों ने बिना संघर्ष के आर्य जाति की अधीनता स्वीकार कर ली, उन्हें आर्यों ने देवयोनि-जात में स्थान दिया। जो गर्वीली जातियाँ थीं (असुर, दैत्य व राक्षस) और भयंकर संघर्ष के उपरांत भी आर्यों की अधीनता स्वीकार नहीं की, उन्हें परवर्ती साहित्य में घृणा के साथ स्मरण किया गया। गन्धर्व शान्तिप्रिय जाति थी। उसने आर्यों से संघर्ष करने के स्थान पर उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। आर्यो ने गन्धर्वों को देवयोनि में रखा। गन्धर्व जाति के लोग श्रृंगारप्रिय एवं कामुक स्वभाव के थे। गाना-बजाना और नाचना उन्हें विशेष प्रिय था। कन्दर्प अर्थात् कामदेव उन्हीं के कुल देवता थे। गंधर्व का स्वभाव कन्दर्प अर्थात् कामदेव से मिलता-जुलता था। कामदेव अर्थात् कन्दर्प के जो पाँच बाण बताये गये हैं, उनमें अशोक के फूल भी एक बाण स्वरूप है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि अशोक-वृक्ष गन्धर्व जाति का वृक्ष था। अशोक-वृक्ष की पूजा गन्धर्वों से ही आर्यों में आयी है।

बोध प्रश्न:

- देवयोनि में किसे स्थान नहीं दिया गया और क्यों नहीं दिया ?
- अशोक-वृक्ष किसके पूज्य वृक्ष के रूप में थे और क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

सामंती सभ्यता के परिष्कृत रुचि के प्रतीक –अशोक

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने अशोक के फूल को मनोहर छवि वाला और अशोक-कल्प के माध्यम से उसका दो प्रकार- लाल और सफेद बताया है। सफेद का तांत्रिक क्रियाओं में सिद्धप्रद और लाल फूल को स्मरवर्धक बताया है। इसके साथ-साथ द्विवेदी जी का यह भी मानना है कि अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर, रहस्यमय और अलंकारमय हो, परंतु वह उस विशाल सामंती सभ्यता की परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक है। वह रुचि जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के संसार कणों को खाकर खड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से जो समृद्ध हुई थी। आगे वे कहते हैं कि वे सामंत उखड़ गए, दुनिया अपने रास्ते चली गई और सामंती-सभ्यता के परिष्कृत रुचि के प्रतीक स्वरूप अशोक पीछे छूट गया।

मनुष्य की जीवनी-शक्ति का वर्णन

आचार्य द्विवेदी ने प्रस्तुत निबंध में मनुष्य की प्रबल जीवन शक्ति-का वर्णन करते हुए कहा है कि मैं मनुष्य जाति की कठिनाई से दबाई जाने वाली निष्ठुर धारा के हजारों वर्ष के इतिहास को भली भाँति देख रहा हूँ। मनुष्य के जीने की इच्छा बड़ी ही-प्रबल है। वह सभ्यता और संस्कृति के आकर्षण में फँसने वाली नहीं है। वह व्यर्थ के मोह को रौंदती हुई तेजी से अपने पथ पर अग्रसर हो रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-धारा आगे बढ़ी है।-जीवन बहाती यह इस संघर्ष में वह थकी-हारी नहीं अपितु संघर्षों से सर्वथा नई शक्ति पाई है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग

का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है। सबकुछ में मिलावट है, सबकुछ अविशुद्ध है। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा । वह गंगा की (जीने की इच्छा) अबाधित अनाहत धारा के समान सबकुछ को हजम करने के बाद भी पवित्र है।

अशोक की मौज और मनुष्य की बदलती मनोवृति

आचार्य द्विवेदी जी ने अशोक के मौज और मनुष्य की बदलती मनोवृति का भी जिक्र किया है। लेखक ने निबंध के आरंभ में जिस अशोक और उसके फूल को लेकर उदासी व्यक्त की है, अंत में उसके बारे में कहता है कि उदास होना भी बेकार है। अशोक आज भी उसी मौज में है, जिसमें आज से दो हजार वर्ष पहले था। कहीं भी तो कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी तो नहीं बदला है। बदली है मनुष्य की मनोवृत्ति। यदि बदले बिना वह आगे बढ़ सकती तो शायद वह भी नहीं बदलती। और यदि वह न बदलती और व्यावसायिक संघर्ष आरम्भ हो जातामशीन का रथ चल - विज्ञा-पड़तान का सावेग धावन चल निकलता, तो बड़ा बुरा होता। अशोक का फूल तो उसी मस्ती में हँस रहा है। उदास वह होता है जो इसे पुराने चित से देखने का प्रयास करता है। अशोक का कुछ भी तो नहीं बिगड़ा है। कितनी मस्ती में झूम रहा हैकालिदास इसका रस ले ! अपने ढंग से। मैं भी-सके थे ले सकता हूँ, अपने ढंग से। उदास होना बेकार है।

बोध प्रश्न:

- 'उदास होना बेकार है' लेखक यह क्यों कहता है स्पष्ट कीजिए।
- पुराने चित से देखने का क्या अर्थ है?

ज्ञान का साधारणीकरण

भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान को मुक्ति का मार्ग बताया गया है। विभिन्न ग्रंथों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि ज्ञान के समान पवित्र दूसरा कोई नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीत के चतुर्थ अध्याय में इस बात का वर्णन मिलता है - न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। इसका आशय यह है कि इस लोक में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निसंदेह कुछ भी नहीं है। लेकिन इस बात का भी प्रमाण मिलता है कि ज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति में अहं (घमंड) का भाव प्रायः आ ही जाता है। कहना न होगा कि यह अहं का भाव ही उसे समाज से अलग-थलग कर देता है। द्विवेदी जी इस बात को गहराई से समझते थे। यही कारण है कि उन्होंने ज्ञान के साथ सहज व्यवहार का होना जरूरी माना है। उनकी मान्यता है कि 'पंडिताई भी एक बोझ है-जितनी ही भारी होती है उतनी ही तेजी से डुबाती है। जब वह जीवन का अंग बन जाती है तो सहज हो जाती है। तब वह बोझ नहीं रहती।' ध्यातव्य है कि पंडिताई का आशय ज्ञान है। आचार्य द्विवेदी की निगाह में वही ज्ञान स्वीकार के योग्य है जो सहज है। ज्ञान प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, वह जीवन का अंग है।

उल्लेखनीय है कि आचार्य द्विवेदी के चिंतन को परिष्कृत करने जिन कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनमें से एक कबीर भी हैं। कबीर के यहाँ भी इसी तरह के विचार दिखाई पड़ते हैं। वे अहं की भावना पर कुठाराघात करते हैं – 'मैं-मैं बड़ी बलाइ है, सकै तो

निकसो भाजि । कब लग राखौं हे सखी, रूई पलेटी आगि॥' स्पष्ट है कि जिस अहं भाव से मुक्ति की कामना मध्यकाल के महत्वपूर्ण कवि कबीर करते हैं उसी अहं भाव से मुक्ति की कामना आचार्य द्विवेदी भी करते हैं।

बोध प्रश्न :

- अशोक के फूल की गौरवशाली परंपरा का वर्णन कीजिए।
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किस प्रकार के ज्ञान को ग्रहणीय बताया है?

5.3.2 विवेच्य निबंध 'अशोक के फूल' का प्रयोजन

इस निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का प्रयोजन अशोक के फूल के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा से पाठकों को अवगत कराना रहा है। आचार्य द्विवेदी जी साहित्य और जीवन में अशोक के फूल के आगमन पर विचार करते हुए उसके इतिहास से परिचित कराते हैं। भारतीय धर्म, साहित्य और कला में उसकी अद्भुत महिमा का वर्णन करते हुए गंधर्वो व यक्षों द्वारा अशोक वृक्ष की पूजा आरम्भ करने तथा मदनोत्सव आदि मनाए जाने का उल्लेख करते हैं। इस उत्सव के द्वारा लेखक ने उस काल की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को दिखाया है। लेखक पाठकों को उस युग की समृद्ध संस्कृति से परिचित कराते हुए उसको मनुष्य की जीवनी शक्ति से जोड़ कर देखता है। उसके अनुसार कोई भी संस्कृति अपने आप में पूरी तरह से शुद्ध नहीं है, वह अपने से पूर्व की सभ्यताओं व संस्कृतियों के ग्रहण और त्याग से बनती है। मनुष्य के जीवन जीने की चाह ही शुद्ध है, वही सभ्यताओं और संस्कृतियों का सृजन करती है। इस जीवन व्यापार में सभ्यता व संस्कृति का मोह भी बह जाता है, जो इस जीवनी शक्ति को सबल बनाता है।

विवेच्य निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का प्रयोजन, अशोक के फूल के लुप्तप्राय सांस्कृतिक महत्त्व के बहाने भारतीय संस्कृति की जातीय प्रकृति से परिचित कराना है। भारतीय संस्कृति लोक-हित को महत्त्व देते हुए सदा गतिशील, उर्ध्वमुखी, समयानुकूल परिवर्तित, परिमार्जित व परिष्कृत होती रहती है। अनेक संस्कृतियों और नाना उपादानो से मिश्रित यह संस्कृति अपने अंदर संग्राहकता का गुण समेटे हुए है। उसका यह गुण इस बात की ओर इशारा करता है कि संस्कृति के लिए कोई तत्त्व इसलिए स्वीकार्य अथवा संग्रह योग्य नहीं हो जाता कि वह सुंदर है या पुराने समय से चला आ रहा है या हमारे धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। वह तो अपनी यात्रा में मात्र उन्हीं तत्त्वों का चयन करती है जिसमें मानव जीवन को प्रेरित करने की क्षमता है। साथ ही मनुष्यता के विकास के लिए सदा कल्याणकारी है। यदि वे तत्त्व किसी दिन अनुपयोगी हो जाते हैं और मनुष्य की गतिशीलता अथवा सृजनशीलता को दिशा देने में असमर्थ साबित होते हैं तो संस्कृति और मनुष्य की जिजीविषा उसे उसी समय त्यागकर आगे बढ़ जाएगी। वह सदियों तक साहित्य और संस्कृति में महत्त्व पाने वाला अशोक का फूल ही क्यों न हो!

बोध प्रश्न :

- भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्ति को स्पष्ट कीजिए।
- मनुष्य की जिजीविषा से आप क्या समझते हैं? आशय स्पष्ट कीजिए।

5.3.3 विवेच्य निबंध में व्यक्त वैचारिकता

मानव जाति की दुर्दम और निर्मम धारा के हजारों वर्ष के रूप को आचार्य द्विवेदी खुली दृष्टि से साफ तौर पर देख रहे थे। वे इस बात से अवगत थे कि मनुष्य की जीवन शक्ति बड़ी निर्मम है। संस्कृति और सभ्यता के मोह को वह हमेशा रौंदती रही है। यह अपनी निरन्तरता को स्थिर बनाए रखने के लिए समय-समय पर उत्पन्न होने वाले प्रचलित धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और वृतों को नष्ट करती हुई आगे बढ़ जाती है। मनुष्य जाति का इतिहास संघर्षों का रहा है। वर्तमान समाज भी अनेकानेक त्याग और संग्रह का फल है। मनुष्य के सदैव जीवित रहने की इच्छा ही बलवती है। इस जीवनधारा में सभ्यता और संस्कृति का मोह बाधा उत्पन्न करता है, लेकिन वह भी इसका शक्तिशाली अंग बन जाता है। लेखक इस बात से अवगत है कि आज की वस्तु कल नष्ट हो सकती है, उसमें विकार आ सकता है। वह इस बात से आश्वस्त है कि विनाश से ही उत्पत्ति सम्भव है। इस कारण यह मान लेना अनुचित होगा कि प्राचीन का विलय सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से घातक है। इसकी संभावना हमेशा बनी रहेगी कि प्राचीन का विलय नवीन की उत्पत्ति करेगा। जिस संस्कृति को आज हम मूल्यवान मान रहे हैं कुछ समय के बाद वह भी बदल जाएगी। आशय यह है कि कुछ भी चिर शाश्वत नहीं है। अनेकानेक चक्रवर्ती सम्राटों की आचार-निष्ठा लुप्त हो गई, धर्माचायों का बहुमूल्य ज्ञान और वैराग्य मूल्यहीन हो गया। मध्ययुगीन शासकों की रसप्रियता ऐसे समाप्त हो गई जैसे उसका अवशेष भी ढूंढें कहीं न मिल रहा हो। ऐसी स्थिति में बेचारा अशोक कैसे बचता।

आचार्य द्विवेदी इतिहास से प्रमाण प्रस्तुत करते हुए बताते हैं कि महात्मा बुद्ध ने अपने प्रताप से 'मार' विजय के बाद वैरागियों की पलटन खड़ी की थी। लेकिन वे भी बहुत देर तक न टिक सके, न जाने कब यक्षों के वज्रपाणि नामक देवता इस वैराग्य-प्रवण-साहित्य में प्रवेश कर गये जिसमें बौद्ध, शैव, शाक्त सभी प्रवाहित हो गये। जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने महासुखवाद कहा है वह इन्हीं साधकों की क्रियापद्धति का प्रतिफल था - 'श्री सुन्दरी साधन तत्पराणां योगश्च भोगश्च करस्थ एव।' इसमें कोई संदेह नहीं कि काव्य और शिल्प के मोहक अशोक ने अभिचार में सहायता दी। योग और भोग का यह अद्‌भुत मिश्रण था। इस परम्परा को अशोक-गुच्छ का एक-एक फूल ढोये आ रहा है। लेखक की मान्यता है कि अशोक आज भी उसी स्थिति में है, जैसा दो हजार वर्ष पूर्व था। न उसमें कुछ विकास आया और न उसमें कोई परिवर्तन ही हुआ। बदली है तो मनुष्य की मनोवृत्ति। यदि यह मनोवृत्ति नहीं बदली होती, तो मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता था। मनोवृत्ति का बदलना आज भी यथावत जारी है। यदि वह न बदलती और व्यावसायिक संघर्ष आरम्भ हो जाता तो बहुत बुरा होता। हम

नष्ट हो जाते। फिर भी ऐसी स्थिति में उदास होना व्यर्थ है। लेखक किसी भी परिस्थिति में जीवन से निराश होने का नहीं बल्कि प्रफुल्लित होने का संदेश देता है।

बोध प्रश्न :

- 'विनाश से ही उत्पत्ति संभव है।' इस कथन को विश्लेषित कीजिए।
- मनुष्य की मनोवृत्ति से आप क्या समझते हैं? विवेचित कीजिए।

5.3.4 भाषा-सौष्ठव

निबन्ध एवं निबंधकार दोनों के लिए भाषा का विशेष महत्व है। एक प्रभावशाली एवं सर्वग्राही भाषा के अभाव में निबंधकार अपने उद्देश्य या प्रयोजन को पाठक तक बमुश्किल ही पहुंचा सकता है। विवेच्य निबंध में प्रयुक्त भाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आचार्य द्विवेदी के यहाँ यह अभाव नहीं है। आचार्य द्विवेदी का भाषा पर असाधारण अधिकार है। अशोक के फूल में उन्होंने भाषा प्रयोग में व्यावहारिकता को सदा ध्यान में रखा है। इसीलिए उनकी भाषा या वाक्य विन्यास में संस्कृत-तत्सम, तद्भव, उर्दू, अंग्रेजी, देशज आदि के शब्द प्रसंग के अनुकूल अपना स्थान प्राप्त किए हैं। प्रचलित- अप्रचलित एवं कठिन-सहज सभी प्रकार के शब्द व्यक्त हुए हैं।यथा-

तत्सम- नूपुर, कंदर्प, कपोलों,आर्येत्तर जीवनी-शक्ति, निर्मम आदि
देशज- झम से, खप से, कदर, घर्घर, पिस जाते, बोझ आदि
अरबी-फारसीउर्दू के शब्द- मुसाहिब, सल्तनत, हजम।
अंग्रेजी के शब्द - पुनालुअन सोसायटी, मशीन।
युग्म शब्द- मानने- न- मानने, आस-पास, अबाधित-अनाहत आदि
पुनरुक्त शब्द- छोटे-छोटे, लाल-लाल,
अप्रचलित शब्द- झम से, खप से आदि
कठिन शब्द- आसिन्जनकारी, कुंझटिकाच्छन्न, कर्णावतंस, स्मरवर्धक व अलक्तक आदि

अशोक के फूल में भाषा, भाव एवं व्यक्तित्व में एकाकार होती हुई दिखाई देती है। यह अनायास नहीं अपितु द्विवेदी जी के अध्ययन, लोक-कल्याणकारी दृष्टिकोण एवं हास्य-विनोद की प्रवृत्ति का प्रतिफल है। यही कारण है कि भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी दुरूह नहीं है। शब्द चयन एवं वाक्य-विन्यास भी विषय के सर्वथा अनुकूल है। गम्भीर भाव को भी सरल भाषा में व्यक्त करने की पूर्ण क्षमता द्विवेदी जी के भाषिक-सौन्दर्य की मौलिक पहचान है। उसमें कठोरता के स्थान पर कोमलता एवं कृत्रिमता के स्थान पर सहजता है।

द्विवेदी जी के भाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे गंभीर से गंभीर बात को बहुत ही सहज एवं सरल तरीके से पाठकों तक पहुचा देते हैं। पाठक आसानी से उसे आत्मासात भी कर लेता है। कारण कि ऐसे प्रसंग में वाक्य छोटे-छोटे एवं सूक्तिनुमा रहते हैं। जैसे- 'स्वर्गीय वस्तुएं धरती से मिले बिना मनोहर नहीं होती', 'मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है', पंडिताई भी एक बोझ है' आदि। आवश्यक होने पर मुहावरों का भी प्रयोग करते हैं। यथा- 'जले पर नामक'।

बोध प्रश्न:

- द्विवेदी जी के भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
- अशोक के फूल में व्यक्त किन्ही पाँच तत्सम एवं विदेशी शब्दों का उल्लेख कीजिए।

5.3.5 शैली-सौन्दर्य

अशोक के फूल में शैली-सौन्दर्य चर्चा की जाय तो इसमें शैली के अनेक रूप रूप दिखाई देते है जो इसे एक बेहतर निबद्ध की श्रेणी में ले जाते हैं। इसमें विवेचनात्मक, प्रसादात्मक, चिंतनप्रधान गंभीर, आवेग आदि शैली की अभिव्यक्ति हुई है। अभिव्यक्ति की सवलता, सशक्तता और गहनता, द्विवेदी जी की शैली का विशिष्ट गुण है। इस निबंध में ऐसे अनेक उदारहरण है जहां द्विवेदी जी की उक्त शैली दृष्टिगोचर होती है।

प्रस्तुत निबंध में भावात्मक शैली का समावेश हुआ है। इससे उनकी यह रचना सरल, मधुर और सुकुमार बन गई है। इस निबंध में कहीं-कहीं तो द्विवेदी जी की ममता की मन्दाकिनी गंभीरतम चिंतन भूमितल को सींचकर भावात्मकता की हरियाली उगा देती है। यथा-

"भुलाया गया है अशोक। मेरा मन उमड़-घुमड़ कर भारतीय रस-साधना के पिछले हजार वर्षों पर बरस जाना चाहता है। क्या यह मनोहर पुष्प भुलाने की चीज थी? सहृदयता क्या लुप्त हो गई थी? कविता क्या सो गई थी? ना, मेरा मन यह सब मानने को तैयार नहीं है।"

बोध प्रश्न

- 'अशोक के फूल' में कौन कौनसी शैलियाँ मिलती है ?

5.4 : पाठ सार

भारतीय साहित्य और समाज में अशोक पुष्प किस प्रकार आया, इस पर विचार करते हुए कहा गया कि ऐसा तो कोई नहीं कह सकता कि कालिदास के पूर्व भारत में इस पुष्प को कोई नहीं जानता था। यह पुष्प कालिदास के काव्य में अपूर्व शोभा और सुकुमारता के साथ वर्णित हुआ है। भारत में मुसलमानी सल्तनत के प्रतिष्ठा से यह पुष्प साहित्य के सिंहासन से उतर गया। भारतीय धर्म, साहित्य और शिल्प में यह फूल अद्‌भुत महिमा के साथ वर्णित हुआ है। कामदेव के पाँच बाणों- कमल, अशोक, आम, चमेली तथा नील कमल आदि माने गए हैं। अशोक के छोटे लाल पुष्प कामदेव के पंचबाणों में से एक है। यहाँ की आदिम जातियों गंधर्वों और यक्षों ने अशोक वृक्ष की पूजा को आंरभ किया। अशोक वृक्ष की पूजा वास्तव में इसके स्वामी कामदेव की पूजा है। इसे 'मदनोत्सव' कहा जाता था। प्राचीन साहित्य में इस उत्सव का बड़ा सारस एवं मनोरम वर्णन हुआ है। उस समय के राजाओं व सामन्तों के द्वारा इन उत्सवों को संरक्षण मिला। बाद में सामन्तों का प्रभाव समाप्त होने से मदनोत्सव का प्रभाव क्षीण हो गया।

विवेच्य निबंध में मानव की जीवन जीने की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि मानव की जीवनी शक्ति अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों को रौंदते हुए आगे बढ़ती जाती है। इसी से समाज और संस्कृति का रुप परिवर्तित होते रहता है। इसी परिवर्तन ने अशोक वृक्ष के

महत्त्व को भी भुला दिया। लेखक अशोक के फूल के वैभवशाली अतीत का स्मरण करते हुए उदास होता है। कोई भी बहुमूल्य संस्कृति सदैव नहीं बनी रह सकती है। परिवर्तन इस संसार का नियम है। लेखक का मानना है कि अशोक आज भी उसी मस्ती में झूम रहा है, जैसा कि वह दो हजार वर्ष पहले था। अतः कहीं भी कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी नहीं बदला है, जो भी परिवर्तन हुआ है, वह मानव की मनोवृत्ति बदलने के फलस्वरुप हुआ है।

5.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई में हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'अशोक के फूल ' निबंध का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। इस इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि –

1. ललित निबंध गद्य साहित्य की अत्यंत सशक्त एवं सारस विधा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस विधा के मेरुदंड हैं।

2. अशोक के फूल का किसी समय में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत ही महत्व रहा है। लेकिन वर्तमान में वह धूमिल या समाप्त हो गया है।

3. कामदेव के जिन पाँच बाणों की प्रायः चर्चा होती है उनमें से एक अशोक का फूल भी है।

4. अशोक वृक्ष का संबंध गन्धर्व जाति के पूज्य वृक्ष से है न कि आर्य जाति से।

5. अशोक-कल्प में इस बात का उल्लेख मिलता है कि अशोक का फूल मनोहर छवि वाला होता है। वह दो प्रकार का होता है - लाल और सफेद। सफेद का तांत्रिक क्रियाओं में सिद्धप्रद और लाल फूल को स्मरवर्धक बताया है।

6. मनुष्य के जीने की इच्छा बड़ी ही प्रबल है। वह सभ्यता और संस्कृति के आकर्षण में फँसने वाली नहीं है। वह व्यर्थ के मोह को रौंदती हुई तेजी से अपने पथ पर अग्रसर हो रही है।

7. लेखक का अभिमत है कि देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है। सबकुछ में मिलावट है, सबकुछ अविशुद्ध है। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा जीने की) ।(इच्छा

8. वही ज्ञान स्वीकार के योग्य है जो सहज है। ज्ञान प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, वह जीवन का अंग है।

5.6 : शब्द संपदा

1. हतभाग्य - भाग्यहीन, बदकिस्मत
2. तूणीर - तरकश
3. आसिन्जनकारी - अनुरागोत्पादक
4. कंदर्प-देवता - कामदेव

5. नाटकीय - अभिनयपूर्ण,दिखावटी

6. सौकुमार्य - सुकुमारता

7. नूपुर - पैर में पहने जाने वाला एक गहना, घुँघुरु

8. अलकों - छल्लेदार बालों

9. उपास्थ - पूजा किए जाने योग्य, आराध्य

10. पयार्य - समान अर्थ वाला, समानार्थक

11. अधिष्ठाता - अध्यक्ष, प्रधान, स्वामी

12. स्तबक - फूलों का गुच्छा

13. गन्धर्व, यक्ष - प्राचीन भारतीय जातियाँ जिनका उल्लेख हिन्दु पुराणों में मिलता है।

14. अखाड़ा - मठ, मंडली

15. परिष्कृत - साफ किया हुआ, शुद्ध

16. प्रतीक - चिह्न, निशान, संकेत

17. उपेक्षा - तिरस्कार, अवहेलना

18. वृथा - व्यर्थ, निरर्थक।

19. दुर्दम - प्रबल/ जिसका दमन कठिन हो

20. निर्मम - जिसे ममता या मोह न हो, कठोर

21. विशुद्ध - जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो, वास्तविक

22. सहृदय - दूसरों के सुखदुःख आदि समझने वाला-, भावुक

23. महार्ध - बहुत अधिक मूल्य का, महँगा

24. विकृत - जिसमें किसी प्रकार का विकार हो, जिसका रूप बिगड़ गया हो।

25. जिजीविषा - जीने की इच्छा

5.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड : अ

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'अशोक के फूल' निबंध के प्रयोजन पर प्रकाश डालिए ।
3. 'अशोक के फूल' निबंध के आधार पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-शैली को विवेचित कीजिए।

खंड : आ

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. 'अशोक के फूल' निबंध के नाम की सार्थकता पर विचार प्रकट कीजिए।
2. 'अशोक के फूल' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

खंड : इ

I सही विकल्प का चुनाव कीजिए :

1. 'अशोक के फूल' का प्रकाशन वर्ष है –
   अ) 1948 आ) 1940 इ) 1958 ई) 1968
2. अशोक कल्प में कितने प्रकार के अशोक के फूल का वर्णन है?
   अ) 3 आ) 2 इ) 5 ई) 4
3. निम्न में से कंदर्प देवता है ?
   अ) भगवान विष्णु आ) कुबेर इ) कामदेव ई) शिव
4. किस फूल को देखकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मन उदास हो जाता है?
   अ) चम्पा आ) चमेली इ) शिरीष ई)अशोक

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. ....भी एक बोझ है –जितनी भी भारी होती है, उतनी ही तेजी से डुबाती है। जब वह जीवन का अंग बन जाती है तो सहज हो जाती है। तब वह बोझ नहीं रहती।
2. रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को........ कहा है।
3. ...... – वृक्ष की पूजा इन्हीं गन्धर्वों और यक्षों की देन है। प्राचीन साहित्य में इस वृक्ष की पूजा के उत्सवों का बड़ा सरस वर्णन मिलता है।

4. भरहुत, साँची, मथुरा आदि में प्राप्त यक्षिणी मूर्तियों की गठन और बनावट देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये जातियाँ .... थी। .... का देश ही गंधर्व, यक्ष और अप्सराओं की निवास-भूमि है।

III संबंधित को सुमेलित कीजिए

1. महाराज भोज	क. मालविकाग्निमित्रम्
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी	ख. मार-विजय
3. कालिदास	ग. ललित निबंधकार
4. भगवान बुद्ध	घ. सरस्वती कंठभरण

5.8 : पठनीय पुस्तकें

1. अशोक के फूल – हजारीप्रसाद द्विवेदी

इकाई 6 : रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध 'भारत की सांस्कृतिक एकता' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध 'भारत की सांस्कृतिक एकता' की विवेचना
6.3.1 भारत की सांस्कृतिक एकता निबंध का प्रयोजन
6.3.2 निबंध में व्यक्त वैचारिकता
6.3.3 निबंध का भाषा सौष्ठव
6.3.4 निबंध का शैली सौंदर्य
6.4 पाठ का सार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द-संपदा
6.7 परिक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

रामधारी सिंह 'दिनकर' बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उत्कृष्ट साहित्यकार, परम देशभक्त, प्रतिष्ठित संसदविद, विख्यात शिक्षाविद एवं सम्मानित दार्शनिक के साथ-साथ प्रगतिवादी और मानवतावादी प्रख्यात कवि थे। कहने में अतिशयोक्ति न होगी की स्वतंत्रता पूर्व उन्होंने अपनी प्रेरणादाई एवं राष्ट्रभक्ति की रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना जागृत की। दिनकर स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गए।

ऐसे महान कवि का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव के भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में ही उनकी काव्य प्रतिभा का परिचय हो गया था। स्कूल में पढ़ते हुए 'वीरबाला' नामक काव्य की रचना कर डाली थी। मैट्रिक में पढ़ते समय इनका 'प्राणभंग' नामक काव्य प्रकाशित हो गया था। स्कूली शिक्षा के समय शुरू हुआ यह साहित्य का सफर आगे फलता और फूलता गया। कविता के क्षेत्र में दिनकर जी 'वीर रस' के कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। वह उत्कृष्ट कोटि के ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के गद्यकर भी थे। इन्होंने अपने काव्य में देश के प्रति असीम राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है। राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित इनका साहित्य भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर है। उनकी गणना विश्व के महान साहित्यकारों में की जाती है।

दिनकर जी अपने साहित्य में ऐतिहासिक पात्रों के ताने-बाने से 'राष्ट्रीय चेतना' जगाने का कार्य किया है। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'रेणुका', 'हुंकार', 'सामधेनी', 'रूपवंती', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'अर्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'हमारी सांस्कृतिक

एकता', 'राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता', 'काव्य की भूमिका', 'पंत,प्रसाद और मैथिलीशरण', 'वेणुवन', 'वट-पीपल', 'शुद्ध कविता की खोज', 'धर्म, नैतिकता और विज्ञान', 'साहित्यमुखी', 'भारतीय एकता', 'आधुनिक बोध', 'विवाह की मुसीबतें', 'लोक देव नेहरू', 'राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी', 'उजली आग', 'मिट्टी की ओर', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'चेतना की शिखा', 'देश-विदेश' आदि कृतियां हैं जिनमें यात्रा-वृतांत और संस्मरण के बीच-बीच में वैचारिक निबंध भी गुंफित है।

दिनकर जी ने अपने जीवन काल में विविध पदों को विभूषित किया। जिनमें मोकाम घाट हायस्कूल में 1 वर्ष तक प्राचार्य रहे। कुछ समय पश्चात मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग अध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए। कुछ समय तक वह रजिस्ट्रार के पद पर भी आसीन रहे। सन 1952 में दिनकर जी को राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया। उसके पश्चात वह भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर आसीन रहे। इसके बाद भारत सरकार के गृह मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार मनोनीत हुए। सन 1947 में वह बिहार सरकार के जनसंपर्क विभाग में उपनिदेशक बने। दिनकर जी ने आकाशवाणी के निर्देशक रूप में भी कार्य किया है। अपनी बुद्धिमत्ता और कार्य कुशलता से इन्होंने विविध पदों पर कार्य कर अपनी प्रतिभा की झलक दिखाई।

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के लेखनी से जन्में साहित्य कृतियों को विविध हा सम्मानों से सम्मानित किया गया है। जिनमें 'उर्वशी' महाकाव्य को उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना माना जाता है। इसके लिए उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से और 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए 'साहित्य अकादमी' सम्मान से नवाजा गया है। अपने कार्य और सेवा के लिए सन 1959 में भारत सरकार की ओर से 'पद्मविभूषण' पुरस्कार की उपाधि से अलंकृत किया गया। काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कृतियों के लिए दिनकर जी को अनेक अन्य पुरस्कार मिले हैं जिनमें 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' के लिए 'नागरी प्रचारिणी सभा काशी' द्वारा इन्हें दो बार 'द्विवेदी पदक' दिया गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'नील कुसुम' के लिए और 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद' द्वारा 'मिर्च का मजा' रचना को पुरस्कृत किया गया है। भागलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डि.लीट.' की उपाधि से सम्मानित किया।

कलम के धनी इस साहित्यकार ने गद्य विधा में राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत कृतियों की रचना की है। इनमें भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा और एकता पर वैचारिक लेख, निबंध, आलोचनात्मक टिप्पणियां आदि की प्रमुखता दिखाई देती है। दिनकर जी के आज हम एक ऐसे ही वैचारिक निबंध 'भारत की सांस्कृतिक एकता' का अध्ययन करेंगे।

6.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1)भौगोलिक दृष्टि से प्राकृतिक विविधता में बंटे भारत को समझ सकेंगे।

2) भाषायी दृष्टिकोण से भारतीय भाषाओं से परिचित होंगे।

3) जलवायु के अनुसार खान-पान, पहनावा- ओढावा तथा रीति-रिवाज की विविधता से परिचित हो सकेंगे।

4) प्राचीन भारत की सांस्कृतिक गौरवगाथा को समझ पाएंगे।

5) अनेक विविधता होने के बावजूद भावनात्मक एकता से जुड़े रहना ही हमारी एकता है यह जान पाएंगे।

6) 'विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है' यह समझ पाएंगे।

7) भारत की सांस्कृतिक एकता को समझ पाएंगे।

6.3 : मूल पाठ : 'भारत की सांस्कृतिक एकता' की विवेचना

रामधारी सिंह दिनकर जी को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से नवाजा जाता है। उन्होंने हमेशा से ही राष्ट्रीय हित को सर्वप्रथम रखा है। उन्होंने वैचारिक निबंधों के माध्यम से भारत को एक संघ बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। 'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस वैचारिक निबंध का हेतु भी यही रहा है। रामधारी सिंह जी कहते हैं कि, "अक्सर कहा जाता है कि भारतवर्ष की एकता उसकी विविधता में छिपी हुई है।" यह कहना गलत नहीं है क्योंकि यह विविधता प्रकट रूप में माने दृश्यमान है। इसमें कुछ भी ढपा या छिपा नहीं है। ना ही हम प्रकट चीजों को छुपाने का असफल प्रयास कर सकते हैं। दिनकर जी कहते हैं कि एक बार भारत के नक्शे को ध्यान से देखने की आवश्यकता है। देखते समय ही हमें साफ दिखाई देगा कि देश के तीन हिस्से प्राकृतिक रूप में स्पष्ट है। इसमें सबसे पहले तो भारत का उत्तरी भाग है जो लगभग हिमालय दक्षिण से लेकर विंध्याचल के उत्तरी तक फैला हुआ है। उसके बाद विंध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर तक फैला हुआ है जिसे हम दक्षिणी प्लेटो कहते हैं। इस प्लेटों के दक्षिण कृष्णा नदी से लेकर कन्याकुमारी तक का जो भाग है वह प्रायद्वीप जैसा है। यह तीन हिस्से साफ तौर पर दिखाई देते हैं। प्रकृति ने भारतवर्ष के यह जो तीन खंड किए हैं वही खंड भारतवर्ष के इतिहास के भी तीन क्रीड़ास्थल रहे हैं।

अगर हम पुरातन समय के इतिहास में झांकें तो हमें दिखाई देता है कि उत्तर भारत में जो राज्य कायम हुए उनमें से ज्यादातर विंध्य पर्वत की उत्तरी सीमा तक ही फैल कर रहे गए। इस विंध्य पर्वत को लाँघ कर उत्तर भारत को दक्षिण भारत से मिलने के प्रयास तो बहुत किए गए किंतु इस कार्य में सफलता किसी-किसी राजाओं को ही मिली है। क्योंकि यह कार्य भौगोलिक रूप में बहुत ही कठिन था। इसके लिए विशेष प्रयास करने पड़े हैं। कहा जाता है कि इसकी पहल अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था। उसके पश्चात भगवान श्री रामचंद्र जी ने लंका पर चढ़ाई करने हेतु विंध्याचल को पार किया था। महाभारत के समय में उत्तर और दक्षिण भारत के अंश एक राज्य के अधीन थे या नहीं इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता। लेकिन रामचंद्र जी ने उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच एकता स्थापित की थी। यही एकता महाभारत काल में भी कायम रही और दोनों हिस्सों के लोग आपस में मिलते-जुलते रहते थे। महाराज युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में दक्षिण के राजा भी आए थे और कुरुक्षेत्र के मैदान में जो युद्ध हुआ था। उसमें भी दक्षिण के कई वीरों ने हिस्सा लिया था। इसके प्रमाण महाभारत में मिलते हैं।

प्राचीन भारत से लेकर मध्य युग तक कई प्रमाण दिखाई देते हैं जो भारत को उत्तर से लेकर दक्षिण तक एक संघ बनाने प्रयत्नरत रहे हैं। जिसमें महाराज चंद्रगुप्त, सम्राट अशोक, सम्राट विक्रमादित्य और उसके बाद मुगलों ने भी इस बात के लिए बड़ी कोशिश की यह देश एक छत्र, एक शासन के अधीन लाया जा सके और उन्हें इस कार्य के लिए सफलता भी मिली है। परंतु भारत के इतिहास की एक शिक्षा यह भी है कि देश को 'एक संघ' रखने की जो भी सफलता जिन-जिन राजाओं को मिली वह ज्यादा दिनों तक टिकाऊ नहीं रही। इस देश के प्राकृतिक ढांचे में ही कुछ ऐसी बात है जो उसे एक संघ रखने में बाधा बन जाता है। यही कारण था कि जब भी कोई बलवान,सामर्थ्यशील, दूरदर्शी राजा इस काम को अविरत करते रहा उसे इस कार्य में थोड़ी बहुत सफलता जरूर मिली। लेकिन स्वार्थी और अदूरदर्शी और कमजोर राजाओं के आते ही देश की एकता टूट गई। इसी प्रकार जो मुश्किलें विंध्य के उत्तर को विंध्य के दक्षिण में जोड़ें रखने में हुई वहीं मुश्किलें कृष्णा नदी के उत्तर भाग को उसके दक्षिण भाग से मिलाकर एक रखने में होती रही है।

भारतवर्ष में वैर और फूट का भाव इतना प्रबल क्यों रहा है इसका भी कारण है। बड़े-बड़े पहाड़ और नदियां गुणों से भरपूर होती है किंतु वह प्रांतों की विभाजन रेषा भी बन जाती है। ऐसे में एक प्रदेश दूसरे से अलग हो जाता है। ऐसे क्षेत्रों में क्षेत्रीय भावना पनपती है जो एक को दूसरे से अलग या उच्च मानने लगते हैं। यही वैर का या फुट का मुख्य कारण बन जाता है। अगर हम भारतवर्ष के ऊपरी छोर की बात कहे तो वहां कश्मीर है। जिसकी जलवायु मध्य एशिया की जलवायु समान है। इसके विपरीत दक्षिणी छोर है जहां की घरों की रचना और लोगों का रंग-रूप श्रीलंका के लोगों से मिलता जुलता है। देश में चेरापूंजी जैसी जगह है जहां सबसे ज्यादा बारिश होती है तो दूसरी ओर थार का मरुस्थल है जहां न के बराबर बारिश होती है।

जलवायु, प्राकृतिक भेद भौगोलिक संरचना के कारण लोगों के रहन-सहन, खान-पान, पोशाक पद्धति में भी विविधता आती है। इन सब भेदों को मिटाकर हम सब एक राष्ट्रीय ढंग चलाना चाहे तो उससे बहुत से लोगों को तकलीफ हो सकती है। उदाहरण के तौर पर रोटी और उड़द की दाल या फिर रोटी और मांस को देश का भोजन बनाए तो पंजाबी लोग तो मजे में रहेंगे। यह उनकी जलवायु के अनुकूल है। लेकिन बिहार और बंगाल के लोगों का हाल बुरा हो जाएगा। इसी तरह अगर यह कानून बना दे की हर हिंदुस्तानी को चप्पल ही पहनना होगा तो कश्मीर के लोग घबरा उठेंगे। क्योंकि कश्मीर में पहाड़ों पर चलते समय चप्पल से ठीक-ठाक तरह चल नहीं सकते। वहां जूतो का ही अधिक मात्रा में उपयोग होता है। इसी तरह पोशाकों का भी है। अपनी सुविधा के अनुसार पोशाके पहनी जाती है।

हमारे देश की विविधता का सबसे बड़ा एक और लक्षण है। अनेक प्रकार की भाषा। विविध राज्यों में अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं का उपयोग होता है। उत्तर भारत की भाषाओं ने कुछ मात्रा में आपस में संपर्क साधने का कार्य किया है। किंतु कोई दक्षिण भारतीय उत्तर भारत में या कोई उत्तर भारतीय दक्षिण आ जाए तो मातृभाषा के सिवा अन्य भाषा नहीं जानता हो तो वह सचमुच में बड़ी मुश्किल में पड़ जाएगा। 'भाषा-भेद की यह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है।'

विज्ञान के कारण अब प्राकृतिक बाधाएँ खत्म हो गई है। जिस कारण प्रांतीय मोह अब काम हो रहा है। दिनकर जी कहते हैं कि, “मगर, भाषा-भेद की समस्या जरा कठिन है और उसका हल तभी निकलेगा जब हिन्दी भाषा का अच्छा प्रचार हो जाए। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में काम शुरू हो गए हैं और कुछ समय बीतते-बीतते हम इस बाधा पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।”

अब तक हमने भारत की विविधता के दर्शन किए आप इस विविधता में छपी एकता के करने हैं। सबसे अहम बात है कि हम संविधान में स्वीकृत भाषा और अनेक बोलियां बोलते हैं। किंतु अलग-अलग भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भावनधारा एक है, तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथा वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी भाषा में साहित्य रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर प्राय सभी भाषाओं के बीच अद्‌भुत एकता मिलेगी। इसके अलावा संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था। उसका प्रभाव सभी भाषाओं की जड़ में कार्य करता है।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है उत्तर से लेकर दक्षिण तक आपको एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देते हैं। धार्मिक रीति-रिवाज, चंदन लगाना, पूजा-अर्चा, तीर्थ-व्रत सभी एक समान है। उत्तर-दक्षिण के लोगों के स्वभाव दृष्टि भी एक समान है। धर्म, संस्कृति की एक विरासत के भागीदार है। सभी ने एक होकर देश के आजादी की लड़ाई लड़ी है। आज संसद और शासन विधान भी एक है।

यही बात मुसलमान को लेकर भी कहीं जा सकती है। भारत के सभी कोनों में बसे मुसलमान में एक धर्म को लेकर एक तरह की आपसी एकता है। वहां वे संस्कृति के दृष्टि से हिंदुओं के भी बहुत करीब है। साथ रहते हुए संस्कृति और तहजीब की बहुत-सी बातें समान दिखाई देती हैं।

विश्व के देशों पर अगर नजर डालें तो हमें पता चलता है कि हर एक का देश, वातावरण, रहन-सहन, खान-पान, पोशाके सभी अलग है। अगर किसी भारतीय को इंग्लंड देश की पोशाक पहना कर उन लोगों में खड़ा कर भी दे तो वह अपनी चाल-ढाल से उनसे अलग दिखाई देगा। यह बातें हम इतिहास के पन्ने पलट कर देख सकते हैं कि भारतवासी अंत में भारतवासी कहलाता है। संस्कृतिक एकता वह शक्ति है जो भारत को एक सूत्र में बांधती है।

बोध प्रश्न :

- भारत की सांस्कृतिक एकता को स्पष्ट कीजिए।
- भारत की भौगोलिक विविधता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

6.3.1 भारत की सांस्कृतिक एकता निबंध का प्रयोजन :

भारतवर्ष जिसने लगभग डेढ़ सौ साल अंग्रेजों की गुलामी सही। अनगिनत बलिदानों से जिसने आजादी का सूरज देखा है। यह आजादी किसी मुश्किल या विपत्तियों से घिर ना जाए इसलिए समूचे देश को एक सूत्र में पिरोकर रखना आवश्यक है। क्योंकि विविधता से परिपूर्ण भारत देश है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर ईशान्य भारत प्राकृतिक रूप से विविध पूर्ण है। ऐसे में प्रांतीयता या क्षेत्रीयता जोश मारने लगती है। यहां भौगोलिक संरचना

के कारण जो विरोधाभास दिखाई देते हैं उसे कारण हर प्रांत को लगता है कि वह दूसरे से अलग है और श्रेष्ठ है। यह भावना उभर कर प्रबल हो गई तो वह विद्रोह का रूप धारण कर सकती है। जो देश की अखंडता और एकता के लिए हानिकारक है। दोबारा देश पर कोई आपत्ति ना आए इसलिए भावनात्मक रूप से सभी भारतीयों को एक रहना आवश्यक है। इसी एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए दिनकर जी का इस वैचारिक निबंध के पीछे का प्रयोजन रहा है।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हमारे बीच धर्म, संप्रदाय, जाति, पंथ,वर्ण,प्रांत, भाषा के स्तर पर ही नहीं तो श्रद्धाएं, मान्यताएं, प्रथाएं, परंपराएं, रीति-रिवाज में भी विविधता दिखाई देती है। इसी से हमारा रहन-सहन, खान-पान, पहनावा-ओढावा, सभी चीजों में विभिन्नता दिखाई देती है। यह मूल कारण है विविधता का किंतु इस विशालकाय देश को जोड़े रखना आवश्यक है। इसलिए दिनकर जी ने इस निबंध के माध्यम से विविधता के दर्शन कराते हुए सांस्कृतिक एकता का परचम लहराया है। जो हमें हर हाल में एक सूत्र में बांधता है। अखंड भारत को बनाए रखने के लिए क्षेत्रीयता, सीमावाद, प्रांतवाद, भाषावाद को परे रख कर सांस्कृतिक विरासत को अपनाना आवश्यक है। इन भीतरी वाद-विवादों में ना पढ़ कर देश के विकास के लिए सभी जनता को एकजुट होकर कदम उठाना होगा।

दिनकर की प्राचीन काल की गौरव गाथा को उजागर करते हुए भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य की राह दिखाते हैं। वह कहते हैं, “भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है, जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अंत में जाकर एक ही साबित होते हैं।” फारसी लिपि को छोड़ दे तो भारत की अन्य सभी लिपियां की वर्णमाला एक ही है। मात्र अलग-अलग लिपियों में लिखी जाती है। उसी प्रकार धार्मिक आस्थाओं पर भी वह चर्चा करते हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक हमारे मंदिर भी एक है। एक ही संस्कृति में बंधे नजर आते हैं। आराधना की पद्धतियां, माथे पर चंदन का तिलक लगाना, तीर्थ-व्रत आदि सभी श्रद्धाओं में समानता दिखाई देती है।

मुस्लिम धर्म पर चर्चा करते हुए वह कहते हैं, भारत के किसी भी कोने में रहने वाले मुसलमान धर्म को लेकर एक ही तरह की आपसी एकता रखता है। “वहां पर संस्कृति की दृष्टि से हिंदुओं के भी बहुत करीब है, क्योंकि ज्यादा मुसलमान तो ऐसे ही है जिनके पूर्वज हिंदू थे जो इस्लाम धर्म में जाने के समय अपनी हिंदू आदतें अपने साथ ले गए। इसके सिवा अनेक सदियों तक हिंदू-मुसलमान साथ रहते आए है।” इस दीर्घ संगति के कारण उनके बीच संस्कृति और तहजीब की बहुत सी सामान बातें दिखाई देती है। जो आपस में नज़दीक लाती है और एक सूत्र में बांधती है। इस एकता के उदाहरण से हमें धार्मिक सौहार्द दिखाई देता है जो देश की एकता के लिए पोषक है।

बोध प्रश्न

- भारत के स्वर्णिम भविष्य की राह दिखाते हुए दिनकर ने क्या कहा ?

6.3.2 निबंध में व्यक्त वैचारिकता :

'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस निबंध में रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भारत की सांस्कृतिक एकता और अखंडता बनाए रखने पर जोर दिया है। बरसों की गुलामी की जंजीरों को तोड़ भारत मां को उसके वीर-जवानों ने आजाद किया है। इस आजादी की कीमत अनगिनत बलिदानों ने चुकाई है। अब भविष्य में इस आजादी पर कभी आंच ना आए इसलिए उन्होंने वैचारिक धरातल के माध्यम से एकता का संदेश देशवासियों को दिया है। भविष्य में किसी भी वजह से एकता में दरार ना पड़े यह इस निबंध का मूल उद्देश्य है।

भारत विविधता से परिपूर्ण देश है। उत्तरी छोर से लेकर दक्षिणी छोर तक प्राकृतिक, धार्मिक, सांप्रदायिक, विभिन्नता के साथ ही वर्ण,पंथ,प्रांत,भाषाई विभिन्नता दिखाई देती है। विशाल प्रदेश और भौगोलिकता के कारण कहीं हड्डियां तक जमाने वाली सर्दी है तो कहीं अधिक उच्च तापमान के कारण मरुस्थल दिखाई देते हैं। एकदम विपरीतता के दर्शन हमें इसी भूमि पर दिखाई देते हैं। ऐसे परस्पर विरोधी वातावरण के समुदायों को एक सूत्र में बांधे रखना कठिन होता है। किंतु इस कठिन कार्य को साधने का कार्य हमेशा से होता रहा है। आधुनिक युग में भी भारतवर्ष पर भविष्य में कोई विपत्ति ना आए इसलिए समूचे भारतवर्ष को 'एकता' का महत्व समझना आवश्यक है।

भाषाओं को लेकर भी कई विवाद उत्पन्न होते हैं किंतु सभी भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी भाषा कर रही है। जिस कारण हम एक दूसरे से भाषाई स्तर पर बंधे रहेंगे। दिनकर जी कहते हैं, "संसार के हर एक देश पर अगर हम अलग-अलग विचार करें तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक देश की एक ही निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है।" जो उसके रहन-सहन, चाल-ढाल, रीति-रिवाज उसे दिखाई देती है। जैसे की चीन से आने वाला आदमी विलायत से आने वालों के बीच नहीं छुप सकता। यद्यपि अफ्रीका के लोग भी काले ही है,मगर वह भारतवासियों के बीच नहीं खप सकते। वह तुरंत पहचान लिए जाते हैं। सांस्कृतिक विरासतें ही हमारी पहचान है। इसका एक उदाहरण दिनकर जी देते हैं, केवल हिंदू ही नहीं तो क्रिश्चियन, पारसी और मुसलमान भी भारत से बाहर जाने पर यह हिंदुस्तानी है बड़ी आसानी से पहचान लिए जाते हैं।

धर्म, पंथ, संप्रदाय, जाति और भाषा को लेकर कभी भी मन में ज्वार उमड़ने लगे तो यह सदैव याद रखना होगा कि इस सब से परे हमारी पहचान भारतीय है। हम चाहे किसी भी वर्ण, वंश, संप्रदाय या भाषा को बोलने वाले हो किंतु इन सब से ऊपर हमारी एक ही पहचान है और वह है 'भारतीयता'। यही हमारी असल पहचान है।

क्योंकि जब भी हम देश से बाहर जाते हैं तो हम किसी प्रांत या भाषा का प्रतिनिधित्व नहीं करते बल्कि हम अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहां हमारी पहचान हमारे नाम से नहीं हमारे देश से होती है और इसी सोच को लेखक अपने निबंध के माध्यम से आम

भारतवासियों तक पहुंचाना चाहते हैं। भविष्य में इन सारे मुद्दों को लेकर कभी कोई आपसी मनमुटाव ना हो यही निबंध की वैचारिकता है।

बोध प्रश्न

- भाषा विकास के बारे में दिनकर ने क्या कहा है ?

6.3.3 निबंध का भाषा सौष्ठव:

गद्य और पद्य साहित्य पर समान पकड़ रखने वाले दिनकर जी की भाषा जिवंत है। वह साहित्य प्रेमियों के मन में आशा और उत्साह का संचार कराती है। उनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। जिसमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है। उर्दू एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी उनकी भाषा में उपलब्ध हो जाते हैं। संस्कृतनिष्ठ भाषा के साथ-साथ व्यवहारिक भाषा उनकी गद्य रचना में दिखाई देती है।

'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस निबंध में दिनकर जी की भाषा खड़ी बोली है। पार्लियामेंट, क्रिस्तान जैसे दो एक अंग्रेजी शब्द भी दिखाई देते हैं। कुछ उर्दू शब्द भी दिखाई देते हैं जिसमें कायम, कामयाबी, खिलाफ, तकलीफ, तहजीब और लिबास आदि है। जो भाषा का सौंदर्य निखारते हैं।

दिनकर जी के निबंध की भाषा सादी, सरल और प्रवाहमान है। उन्होंने वैचारिक निबंध जैसे विषय में अपनी भाषा शैली के माध्यम से पाठक के मन में पढ़ने के प्रति लालसा उत्पन्न की है। अक्सर देखा जाता है कि जब वैचारिक गद्य की बात आती है तो बहुत बार ऐसा होता है की बड़े ही उत्साह से पढ़ना शुरू किया जाता है किंतु मध्य तक आते-आते वह निरस लगने लगता है। लेकिन दिनकर जी का निबंध पढ़ते समय पाठक के मन में लालसा जागृत होती है। वह अंत तक पढ़ने के लिए बेचैन होता है। एक बार पढ़ना शुरू कर दिया तो खत्म होने पर ही उसे चैन आता है। 'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस निबंध में उनके भाषा सौंदर्य का एक उदाहरण देखते हैं, "भाषा की दीवार के टूटते ही, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक दूसरे के बहुत करीब आते हैं। असल में भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही है। वह धर्म के अनुयाई और संस्कृति की एक विरासत के भागीदार है।" सभी ने मिलकर देश की आजादी की लड़ाई लढी है। उनका शासन एक है, संविधान एक है। इससे हमें पता चलता है कि दिनकर की भाषा सुस्पष्ट और खड़ी बोली ही है। उन्होंने बड़े ही सरल रूप में भाषा को प्रवाहमान कर पाठक के अंतर मन तक पहुंचाया है।

बोध प्रश्न

- दिनकर की भाषा कैसे है ?

6.3.4 निबंध की शैली :

राष्ट्रकवि की उपाधि पाने वाले दिनकर जी का समग्र साहित्य 'राष्ट्र प्रेम' और 'राष्ट्रीय एकता' से ओतप्रोत है। विपरीत तौर पर शांत दिखने वाले दिनकर जी जब बात राष्ट्र की आती है तब अपनी कविताओं के माध्यम से दहाड़ने लगते हैं। उनका गद्य साहित्य भी राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय एकता से भरा पड़ा है आजादी के मतवालों में दिनकर जी पहली पंक्ति में ही नजर आते हैं।

रामधारी सिंह दिनकर जी के लगभग सभी निबंध में 'देश प्रेम', 'राष्ट्रीय एकता' और 'अखंडता' का पाठ मिलता है। भारत की सांस्कृतिक एकता निबंध भी वैचारिक निबंध है। इस निबंध में उन्होंने विवेचनात्मक, समीक्षात्मक और भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। इन शैलियों के कारण लेखक अपने विचारों को बड़े ही सरल रीति से पाठक के मन में गहरी छाप छोड़ते है। लेखक का उद्देश्य उसके विचारों को आम लोगों तक पहुंचाना है। क्योंकि दिनकर जी एक दृष्टा साहित्यकार थे। उन्हें पता था प्राकृतिक विविधता से उत्पन्न विभिन्न प्रश्नों से जन-मानस को दूर रखना होगा। उनके मन में एकता और अखंडता का बीज बोना आवश्यक है। इसलिए उन्होंने भाषा, धर्म, पंथ, जाति, वर्ण, समुदाय, प्रांत, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम जैसे अनेक मुद्दों का विवेचन अपने निबंध में किया है।

भाषावाद, सीमावद के चलते देश में निर्माण हो रहे नए-नए राज्य और अपनी प्रांतीय भाषा का ज्वार, यह देश के लिए हानिकारक है। देश में सब कुशल-मंगल रहने के लिए भाषा, सीमा, धर्म, वर्ण से परे उठकर हमें सोचना होगा। वह सोंच एक सही दिशा में होनी चाहिए। युवा शक्ति और सकारात्मक सोंच ही हमेशा देशहित और राष्ट्रीय एकात्मता पर ही आकर रुकनी चाहिए। इस वैचारिक सत्यको उन्होंने बड़े ही सुंदर और सरलभाषा के माध्यम से जनमानस में पहुंचाया है। पाठक सरल,प्रवाहमान और ओजस्वी भाषा से अभिभूत हो तन-मन में 'देश प्रेम' और 'राष्ट्रीय एकता' की मशाल जलाएं रखना चाहिए।

6.4 : पाठ सार

हम सबको ज्ञात है कि अंग्रेजो के शासन से भारत मां को आजाद करने के लिए कितने ही वीर,जवानों ने खून की होली खेली है। यह आजादी हमारे लिए बहुत मायने रखती है। पूरब से लेकर पश्चिम और उत्तर से लेकर दक्षिण तक के जन-मानस में एकता का झंडा लहराया और एकता की शक्ति के बल पर ही विभिन्न प्रांत, भाषा, समुदाय, वर्ण, जाति,पंथ के लोगों ने एक ही नारा लगाया 'हम एक है' और यही भावना हमें हमेशा कायम रखनी है। प्राकृतिक संरचनाओं के कारण हमारे नाक-नक्श से लेकर रहन-सहन तक की विभिन्नता दिखाई देती है किंतु हमारी सांस्कृतिक विरासतें एक है।

दिनकर जी ने 'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस निबंध में 'राष्ट्रीय चेतना' को जागृत करने का कार्य किया है। भौगोलिक संरचना के कारण भारत के नक्शे पर नजर डालें तो वह तीन भागों में विभाजित सा दिखाई देता है। ऐसे विशाल भारतवर्ष को एक संघ और एक छत्र में बांधने का कार्य चंद्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य और अकबर जैसे सम्राटों ने किया है। किंतु दुर्बल शासक आते ही भाषा,वर्ण,पंथ, प्रांतीयता ने जोर पकड़ा और भारत में 'अराजकता' फैली। हमेशा इस आपसी मनमुटाव का फायदा बाहरी आक्रमणकारियों ने उठाया। भारत को गुलाम बनाया गया। इसी गुलामी से आजादी का सफर बहुत ही लंबा और कुर्बानियों से भरा है।

भविष्य में ऐसी दुर्घटनाएं ना घटे इसलिए भारतीय जन-मानस को भावना के धरातल पर बांधे रखना आवश्यक है। दिनकर जी ने अपनी कविता और गद्य साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की ज्योत अविरत जलाए रखी। 'विविधता में एकता' का नारा लगाकर हमारी सांस्कृतिक विश्वास को बनाए रखा है।

उत्तरी कश्मीर की छोर से दक्षिण के कुमारी अंतरिप तक एक ही भावना प्रधान रही है 'अखंडता' की। हमारी धार्मिक आस्थाएं, श्रृद्धाएं, मान्यताओं का मूल एक है। हमारा भारतीय साहित्य विविध भाषाओं में लिखा गया है किंतु रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्राय: सभी भाषाओं के बीच अद्भुत एकता मिलती है। इसके अलावा संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया है उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ों में काम कर रहा है।

इसके अलावा भारतीय मुसलमान, पारसी और क्रिश्चियन का भी यही है। सदियों से वह एक दूसरों के साथ रहने के कारण उनके बीच संस्कृति और तहजीब की बहुत-सी सामान बातें पैदा हो गई है। जो उन्हें आए दिन एक-दूसरे से और नजदीक ला रही है। दिनकर जी के इस वैचारिक निबंध के माध्यम से यही कह सकते हैं।

"हिंद देश के निवासी, सभी जन एक है।
रंग, रूप, वेश, भाषा चाहे अनेक है।
बेला, गुलाब, जूही, चंपा, चमेली,
प्यारे-प्यारे फूल खिले, माला में एक है।"

6.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1) विविधता में एकता ही हमारी पहचान है।
2) राष्ट्रीय एकता, अखंडता और राष्ट्रीय चेतना की ज्योत जलाए रखना है।
3) हमारी सांस्कृतिक विरासतें और मान्यताएं एक है।
4) प्राकृतिक अलगाव के बावजूद समूचे भारत को एक सूत्र में पिरोया गया है।
5) भारत की विभिन्नता वह हीरें-जवाहरात है जो एक जगह जुड़ कर भारत मां के मुकुट सजाते हैं।
6) राष्ट्रीय एकता ही मूल मंत्र है।

6.6 : शब्द संपदा

1) कुमारी अंतरीप - कन्याकुमारी
2) कायम - ठहराव, स्थापित करना, निर्धारित करना
3) कामयाबी - सफलता
4) खिलाफ - विरोध
5) मरुभूमि - रेगिस्तान,बंजर
6) पार्लियामेंट - संसद
7) तहजीब - संस्कार,सभ्यता
8) क्रिस्तान - क्रिश्चियन
9) लिबास - पोशाक

10) विलायत - इंग्लैंड

6.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) 'भारत की सांस्कृतिक एकता' इस निबंध के आधार पर दिनकर जी की दूरदृष्टीता को स्पष्ट कीजिए ।

2) 'भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है ।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1) निबंध में प्राकृतिक दृष्टी से देश के किन तीन भागों को दर्शाया है चर्चा कीजिए।

2) 'जलवायु के कारण बदलता जनजीवन' प्रस्तुत निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I) सही विकल्प चुनिए –

1) निम्न में से कौन-सी रचना दिनकर जी की नहीं है?

अ) रश्मिरथी ब) संस्कृति के चार अध्याय क) गोदान ड) कुरुक्षेत्र

2) दिनकर जी को किस उपाधि से नवाजा गया था ?

अ) हास्य कवि ब) राष्ट्र कवि क) व्यंग्य कवि ड) संत कवि

3) दिनकर जी की प्रथम काव्य रचना कौनसी थी ?

अ) उर्वशी ब) वीरबाला क) हुंकार ड) रेणुका

4)भारत सरकार ने दिनकर जी पर कब डाक टिकट जारी किया?

अ) सन 1974 ब) सन 1999 क) सन 1980 ड) 1992

II) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1) ------ ॠषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था।

2) भाषा-भेद की यह समस्या हमारी ------ की सबसे बड़ी बाधा है ।

3) विचारों की एकता -------की सबसे बड़ी एकता होती है।

4)भागलपुर विश्वविद्यालय दिनकर जी को ------- उपाधि से सम्मानित किया ।

III) सुमेल कीजिए –

1) ज्ञानपीठ पुरस्कार (अ) सन 1952

2)साहित्य अकादमी पुरस्कार (आ) सन 1908

3) पद्मविभूषण पुरस्कार (इ) उर्वशी

4) राज्यसभा सदस्य (ई) संस्कृति के चार अध्याय

5) दिनकरजी का जन्म (उ) सन 1959

6.8 : पठनीय पुस्तकें

1)गद्यशिल्पी –दिनकर ------ देवव्रत जोशी

2) दिनकर का गद्य साहित्य और राष्ट्रिय चेतना ---- डॉ. संदीप कुमार यादव

3) रामधारी सिंह दिनकर ----- डॉ. मन्मथनाथ गुप्त

5)अपने समय का सूर्य दिनकर ---- डॉ. मन्मथनाथ गुप्त

6) दिनकर सृष्टि और दृष्टी ---- डॉ. मन्मथनाथ गुप्त

इकाई 7 : हरिशंकर परसाई के निबंध 'पगडंडियों का जमाना' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ: हरिशंकर परसाई के निबंध 'पगडंडियों का जमाना' की विवेचना

7.3.1 विषय वस्तु

7.3.2 निबंध का प्रयोजन

7.3.3 वैचारिकता

7.3.4 भाषा सौष्ठव

7.3.5 शैली सौन्दर्य

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियां

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 : प्रस्तावना

आप इस प्रश्नपत्र की इकाइयों में हिन्दी के प्रसिद्ध निबंधकारों का परिचय और उनके प्रतिनिधि निबंधों की विवेचना का पाठ पढ़ रहे हैं। हर निबंधकार अपनी अलग पहचान रखता है। अक्सर किसी निबंध को पढ़ते ही हम उसके लेखक के नाम का अंदाजा लगा लेते हैं। हरेक का अंदाजे- बयां एक सा नहीं होता। कोई धीर गंभीर होता है तो कोई हास्य रस से भरपूर। हरिशंकर परसाई का परिचय आप पढ़ चुके हैं। आप जान चुके हैं कि कथा साहित्य में जो स्थान मुंशी प्रेमचंद का है, व्यंग्य साहित्य में वही स्थान परसाई जी का है। व्यंग्य को उन्होंने 'विधा' के रूप में विधिवत स्वीकार किया। आज व्यंग्य विधा की हैसियत और इस विधा का नाम परसाई जी की बदौलत भी है। उसके मूल में परसाई का बहु-विधा लेखन ही है। इस इकाई में आप लेखक की एक प्रतिनिधि रचना 'पगडंडियों का जमाना'(1966) की विवेचना करेंगे। आप इस समय इस विश्वविद्यालय के छात्र हैं। आपकी बहुत सी चिंताओं में एक यह भी है कि आपकी परीक्षा समय पर हो। कोई पेपर आउट न हो जाए। कई बार लोग शॉर्ट कट अपनाने की कोशिश करते हैं। शिक्षा क्षेत्र मे भृष्टाचार हमारे सामाजिक पतन का सूचक है। यह निबंध इस सच्चाई को सामने रखता है कि यह जमाना शॉर्टकट का हो गया है। हर कोई इसके चक्कर में है। परसाई जी ने इस व्यंग्य के द्वारा समाज और शिक्षा के क्षेत्र में फैली आपा-धापी के बारे में चुटकी ली है। यह

एक छोटी सी व्यंग्य रचना है। आपको इसे पहले खुद पढ़ना है। तभी आप इसकी विवेचना कर सकेंगे। इसकी विशेषताओं को बता सकेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के पाठ से आप

- निबंध की एक विधा के रूप में व्यंग्य की एक प्रतिनिधि रचना का पाठ कर सकेंगे।
- 'पगडंडियों का जमाना' व्यंग्य के पाठ से इसके लेखक के व्यक्तित्व और रचना शैली की समझ विकसित कर सकेंगे।
- 'पगडंडियों का जमाना' निबंध का प्रयोजन स्पष्ट कर सकेंगे।
- इस व्यंग्य रचना में व्यक्त वैचारिकता को समझ सकेंगे।
- इस व्यंग्य रचना की भाषा शैली की विशेषताओं को समझ सकते हैं।
- इस निबंध के मुख्य अंशों की व्याख्या करते हुए इसके शैली-सौन्दर्य का विवेचन कर सकेंगे।

7.3 : मूल पाठ : हरिशंकर परसाई के निबंध 'पगडंडियों का जमाना' की विवेचना

7.3.1 निबंध की विषय वस्तु

हिन्दी निबंध के अंतर्गत इस इकाई में अब आप एक महत्वपूर्ण विधा- व्यंग्य- को पढ़ने जा रहे हैं। हरि शंकर परसाई के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय भी आपको मिल चुका है। यह आप जान सकें हैं कि परसाई जी ने अपने लेखन से व्यंग्य विधा को स्थापित किया। 'ललित निबंध' से 'व्यंग्य रचना' खासी अलग होती है। परसाई ने इस छोटे से निबंध में अपने जमाने की सच्चाई को सामने रखा है। इस जमाने में पढ़ाई-लिखाई और शिक्षा व्यवस्था कैसे दुकानदारी बन गई है, यह सब जानते हैं। लड़के-लड़कियां मेहनत से जी चुराते हैं, और जैसे तैसे इम्तिहान में अच्छे नंबर लाना चाहते थे। आजकल सबको शॉर्ट कट चाहिए। ज्यादा क्या कहें। आप अब पहले इस छोटे से निबंध को खुद आराम से ध्यान लगाकर पढ़ लें। फिर इसकी खासियतों पर गौर करना आसान होगा।

हम यह मानकर आगे बढ़ रहे हैं कि हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य प्रधान निबंध 'पगडंडियों का जमाना' को आपने पढ़ लिया है। आपने इसे पढ़ते समय यह समझा होगा कि निबंधकार इसमें एक समस्या को लेकर चला है। निबंध की एक विषय-वस्तु है। लेखक इस जमाने की बात करता है और बताता है कि जमाना बड़ा खराब है। लोग खुली सड़क पर न चल कर पगडंडियों पर चलते हैं। निबंध में लेखक ने इस एक बात को बार बार कहा है। हर बार वह कहता है कि हर कोई जल्दबाजी में लगा है। हरेक को सफलता चाहिए। पर मेहनत कोई नहीं करना चाहता। सबको आसान रास्ता चाहिए। निबंध में लेखक ने जो कुछ कहा है वह छोटी छोटी घटनाओं की मार्फत कहा है। छोटे छोटे जीवन प्रसंग ही तो इस जिंदगी के बड़े बड़े अनुभव देते हैं । शुरू में लेखक एक छोटी सी घटना का जिक्र करता है। हुआ कुछ यूँ था कि एक आदमी लेखक के पास आता है और वह चाहता है कि लेखक उसकी मदद करे। वह चाहता है कि लेखक अपनी जान-पहचान के अध्यापक से कहकर उसके बेटे के नंबर बढ़वा दे। यह हमारे समाज का

आम चलन हो गया है। पर लेखक ऐसा करने से साफ मना कर देता है। लेखक सोचता है कि वह ईमानदारी दिखाकर अच्छा काम कर रहा है। इससे समाज में अच्छा संदेश जाएगा। इससे भगवान भी खुश होंगे। पर ऐसा कुछ नहीं होता। वह आदमी तो लेखक से नाराज हो ही जाता है, वह उन्हें सब लोगों में बदनाम भी करने लगता है। जो काम उसने नहीं किया उसी का इल्जाम उस पर लगा दिया जाता है। लेखक को बड़ा दुख होता है। वह अपनी आत्मा से पूछता है कि उसे क्या करना चाहिए। उसे ईमानदारी से जिंदगी बसर करनी चाहिए या वैसे ही करना चाहिए जैसे आजकल सब करते हैं। निबंधकार के इस निबंध से ही पढिए।

मैंने फिर ईमानदार बनने की कोशिश की और फिर नाकामयाब रहा। एक सज्जन ने मुझसे कहा कि एक परिचित अध्यापक से कहकर मैं उनके लड़के के नंबर बढ़वा दूँ। यों मैं उनका काम कर देता, पर बहुत अरसे बाद उसी दिन मुझे ईमान की याद आयी थी और मैंने पूरी तरह ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा कर ली थी। सज्जन की बात सुनकर मुझे पुरानी कथाएं याद आ गयीं और मैंने सोचा कि प्रतिज्ञा करते हुए मुझे देर नहीं हुई कि ये इन्द्र या विष्णु मेरी परीक्षा लेने आ पहुंचे। उन्हें विश्वास नहीं है कि कोई इस जमाने में लंबी तपस्या करेगा। चार कहानियाँ लिखकर लोग युग-प्रवर्तक की लिस्ट में नाम खोजने लगते हैं। इसलिए ये देवता अब तपस्या शुरू होते ही परीक्षा लेने आ पहुंचते हैं।

मैंने उन्हें मन-ही-मन प्रणाम किया और प्रकट कहा, 'मैं इसे अनुचित और अनैतिक मानता हूँ। मैं यह काम नहीं करूंगा।"

वह अपनी आत्मा से पूछता है।लेखक को पता है कि उसकी आत्मा कभी कभी बड़ी सुलझी हुई बात कह देती है। अच्छी आत्मा 'फोल्डिंग' कुर्सी की तरह होनी चाहिए। जरूरत पड़ी तब फैलाकर उस पर बैठ गए, नहीं तो मोड़कर कोने में टिका दिया।

लेखक इस निबंध में व्यंग्य का सहारा लेकर और भी कई वाकयों का जिक्र करता है। वह बताता है कि उसे बहुत से 'स्नेही' लोग मिलते हैं जो बड़ी मीठी बोली बोलकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। परीक्षा के पहले और उसके बाद बहुत से बच्चों के पिता आते हैं। वे या तो प्रश्नपत्र को जान लेना चाहते हैं, या अपने बच्चों के नंबर बढ़वाना चाहते हैं। सबके अपने अपने तर्क हैं। कुछ बड़ी चालाकी से , कुछ डरते डरते और कुछ निडर निर्लज्ज होकर पेपर आउट करवाने या नंबर बढ़वाने को कहते हैं। कुछ धमकाते भी हैं। प्रलोभन भी देते हैं। कई लोग अधिकार पूर्वक कहते हैं। लेखक को लगता है जैसे सारा जमाना आम रास्ता और खुली सड़क को छोड़ कर मुख्य मार्ग को छोड़कर पगडंडियों पर आ गया है। येन-केन-प्रकारेण उन्हें सफलता चाहिए। लेखक बहुत दुखी होता है यह देखकर कि अब तो नंबर बढ़वाने का धंधा खुले आम होने लगा है। लोग न समाज से डरते हैं और न सरकार से। निबंधकार कहता है कि सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बंद हो गया है। जिसे उसमें घुसना है, वह रूमाल नाक पर रखकर नाबदान में से घुस जाता है। सब पगडंडी पकड़ते हैं।अनुपयोग के कारण सड़कें दब गयीं हैं।

बोध प्रश्न-

- "बहुत अर्से बाद मुझे ईमान की याद आई" इस कथन में क्या व्यंग्य छिपा है?
- इस व्यंग्य में आत्मा को 'फॉल्डिंग कुर्सी' क्यों कहा गया है?
- लेखक 'मुख्य मार्ग' किसे कहता है?
- 'इन दिनों मुझे बहुत स्नेही मिलते हैं" इस कथन में 'स्नेही' का क्या अर्थ है?
- लोग सफलता पाने के लिए मुख्य द्वार का इस्तेमाल क्यों नहीं करते?

7.3.2 निबंध का प्रयोजन

हरि शंकर परसाई ने यह निबंध एक खास मकसद या प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए लिखा है। यह तो आप समझते ही हैं कि निबंध में यह जो 'मैं' नाम का पात्र है, वह निबंधकार है। यह 'मैं' जो करता और कहता है, वह इस बात को बताने के लिए करता कहता है कि आज का जमाना 'पगडंडियों का जमाना' है। पगडंडी (शॉर्ट कट) वह रास्ता होता है जिससे मंजिल पर जल्दी से और बिना किसी की नजर पड़े फटाफट पहुंचा जा सकता है। इसमें कुछ पैसा जरूर खर्च होता है, पर यह कीमत देने के लिए आज बहुत से लोग तैयार हैं। कुछ लोग जो इसके लिए राजी नहीं होते, वे दुखी रहते हैं। दौड़ में पीछे रह जाते हैं। लेखक से शब्द हैं, "जिन्हें बदबू ज्यादा आती है और जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं, वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहें हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है"।

प्रयोजन और मकसद यह बताना भी है कि हमारी शिक्षा-पद्यति में यह दोष अब तक कायम है कि लियाकत को नंबरों की दरकार होती है। एक नंबर से भी कोई फेल हो सकता है। उसकी डिवीजन मारी जा सकती है। अंकों, नंबर, मार्क्स की बदौलत उसे आगे की क्लास में दाखिला मिलता है ।नौकरी मिलती है। इसके लिए ही सारी मेहनत,पढ़ाई और जोड़ तोड़ किये जाते हैं। पेपर आउट हो जाए तो अच्छे नंबर आ जाते हैं। पेपर न मिले तो सीधे इम्तिहान की कॉपी जाँचने वालों के पीछे दौड़कर सिफारिश लगाई जाती है। पेपर आउट करवाने और नंबर बढ़वाने की कोशिश ही वह पगडंडी है जिससे यह सफर आसान होता है।

क्या यह जायज तरीका है? कोई भी इसे सही नहीं ठहराएगा। यह गैरकानूनी है और यह अनैतिक भी है। यह बहुत बुरा है क्योंकि इसमें पढ़ने वाले ही नहीं उनकी परवरिश करनेवाले भी मदद करते हैं। बहुत से टीचर भी मजबूर होते हैं या कर दिए जाते हैं। उन पर दबाव होता है और वे कई बार नंबर बढा देते हैं। कामयाबी के लिए गलत रास्ता चुनने वाले सब लोग अपराधी हैं। यह गलत रास्ता या शॉर्ट कट की वह पगडंडी है जिसकी तरफ लेखक इशारा करता है। लेखक दुखी भी है और लाचार भी।

यह बात आईने की तरह साफ है कि परीक्षा में पास होने के लिए कोई शॉर्ट कट अपनाना ठीक नहीं। यह आदत नहीं कुटेव है । बुराई है। समाज को इससे कोई लाभ नहीं होने वाला। जो विद्यार्थी मेहनत करते हैं, उन्हें ही अच्छे अंक लाकर आगे बढ़ने का हक है।

बोध प्रश्न

- निबंध में 'मैं' कौन है?
- दरवाजे पर सिर मारने वालें कौन हैं और वे ऐसा क्यों कर रहे हैं?

7.3.3 वैचारिकता

एक अंग्रेजी व्यंग्यकार जोनाथन स्विफ्ट व्यंग्य के विषय में कहते थे कि व्यंग्य एक ऐसा आईना है जिसमें देखने वाले को अपने अलावा सब का चेहरा दिखाई देता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी भी कुछ ऐसा ही कहते हैं कि व्यंग्य वह है जहां कहने वाला तो अधरोष्ठों में हँस रहा हो और पर सुनने वाला तिलमिला रहा हो। व्यंग्य विधा के लेखक के नाते परसाई जी के लेखन का मकसद समाज की विसंगतियों पर वार करना रहा है। परसाई जी को सच कहने का हौसला और नतीजों को स्वीकार करने का जज्बा रहा है।

निबंध 'पगडंडियों का जमाना' हमारे समाज को आईना दिखाने के लिए है। यह निबंध भारतीय समाज का सच्चा आईना है। समाज में जो कुछ हो रहा है उसका वास्तविक चित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है। यह निबंध केवल हँसने-हँसाने खिलखिलाने और खिल्ली उड़ाने के लिए नहीं। सोचने विचारने के लिए है। यह निबंध हमें सोचने विचारने के लिए मजबूर करता है। चूंकि यह बुरी आदत आम हो गई है। लोग नंबर बढ़वाने और पेपर आउट करवाने के लिए किसी हद तक भी जा रहे हैं। समाज में यह रोग आम हो गया है। अब तो लोग इसको छिपाते भी नहीं। दिल खोलकर सबको अपने काले कारनामे बताते हैं। आम लोग और आम विद्यार्थी भी आजकल इसे कोई बुराई नहीं मानते। जो लोग इस बात का विरोध करते हैं, लोग उनका मजाक उड़ाते हैं। उन पर फब्तियाँ कसते हैं। वे पढे लिखे विचार शील विद्वान कहते कहते थक गए कि यह आदत अब लत बन चुकी है और इसको छोड़ना जरूरी है पर शॉर्ट कट अपनाने वालों पर कोई असर होता दिखाई नहीं देता। इसलिए समझदार लोग लहूलुहान हैं और पगडंडियों पर दौड़ लगाने वाले मजे में दिखाई देते हैं। यह इस जमाने की कड़वी सच्चाई है। यह बात भी याद रखने की है कि परसाई जी के दूसरे निबंधों की तरह इस निबंध में भी आपको किसी खास व्याख्या और अर्थ को जानने के लिए सहयोग की जरूरत नहीं होती। यह निबंध भी सीधी और सरल भाषा में लिखा गया है।

आप भी कह सकते हैं कि परसाई जी की यह रचना उनकी वैचारिक दृष्टि को समग्र रूप से पेश करती है। यह निबंध उनकी गंभीर सोच, सूक्ष्म दृष्टि, वैचारिक फलक, उच्च जीवन मूल्य, गिरती इंसानियत, दरकते इंसानी रिश्ते, आदि को बड़ी खूबसूरती से पेश करने में कामयाब हुआ है ।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'पगडंडियों का जमाना' का आपने पाठ किया। पढ़ते वक्त आपको कुछ आप बीती बातें भी जरूर याद आई होंगी। जब निबंधकार ने यह निबंध लिखा होगा तब के माहौल में और अब के जमाने में कोई खास फ़र्क दिखाई नहीं देता। लेखक ने जो कहना चाहा है उसे बड़ी बेबाकी से कहा है। कहा ही नहीं है, बल्कि कई वाकयों से चुटकी भी ली है। कहीं पौराणिक प्रसंग और देवताओं का जिक्र है तो कहीं परेशान पिता की मजबूरी है। शिक्षा के क्षेत्र में जो हो रहा है, वह तो है ही,कुछ दुनिया की बात भी है जिसमें चरित्रवान की मजबूरी है और बेईमान मौज उड़ाते हैं। अब वक्त आ गया है कि आप अपने शब्दों में इस व्यंग्य का सार लिख लें।

बोध प्रश्न

- परसाई के निबंध लेखन का क्या उद्देश्य है?
- कौनसी बुरी आदत अब आम हो गई है?

7.3.4 भाषा सौष्ठव

परसाई जी के भाषा के बारे में इस निबंध को देखते हुए कहना बेहतर है। क्योंकि इनकी लिखी हुई छत्तीस किताबें तो हम अभी पढ़ नहीं सकते। अपनी पहली किताब 'हँसते हैं रोते हैं' (1953) में परसाई ने अपनी भाषा और शैली के बारे में लिखा है, " आदमी को मैंने जैसे हँसते और रोते देखा है, वैसा ही उतारा है...। शैली के मामले में मैं किसी की नकल करने से साफ बच गया हूँ ... भाषा जैसी बोलता हूँ, वैसी ही लिखी है।"

"जैसे बोलता हूँ, वैसे ही लिखता हूँ" कहकर निबंधकार ने अपना ढंग बता दिया है। यह देखना दिलचस्प है कि परसाई शब्दों, पदों, और वाक्यों के चुनाव में एक ही कसौटी को काम में लाते हैं। और वह कसौटी व्यंग्य की है। एक एक वाक्य और एक एक संवाद इसी बात को मद्दे-नजर रखते हुए वे लिखते रहे हैं। एक वाक्य देखें, " ऐसे परमुखापेक्षी विद्यार्थी का भविष्य संदिग्ध है।" इसे ही गागर में सागर भरना कहते हैं।

उन्हें शब्द-सचेत लेखक कहा जाता है क्योंकि वे शब्दों के प्रति बहुत अधिक सावधान थे। उनका यह 'सतर्क बोध' उनका कभी साथ नहीं छोड़ता। वे बहुत आसान भाषा में लिखते हैं जैसे बतिया रहे हों। इसी निबंध में वे बोलते हैं, " क्या गाली खाकर बदनामी करवाकर मैं ईमानदार बना रहूँ? "आप खुद नोट कर सकते हैं कि परसाई जी ने लिखने की जनशैली की खुद खोज कर ली थी। उनके बिंब, प्रतीक, सूत्र, और मुहावरे रचना के भीतर तक समोए हुए होते हैं।

परसाई जी के इस निबंध में भाषा और शब्द व्यंग्य को लेकर चलते हैं।" वत्स! तू परीक्षा में खरा उतरा। बोल , तुझे क्या चाहिए? हम वर देने के मूड में हैं।" इस एक वाक्य में ही संस्कृत का 'वत्स' है तो अंग्रेजी का 'मूड' भी है। ' खरा उतरना' मुहावरा भी है। निबंध का एक और वाक्य देखिए। " सच्चाई के लिए घूस देने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि झूठ के लिए घूस दूँ।" एक एक वाक्य में परसाई ने कूट-कूट कर गहरे अर्थ भरे हैं। " ईमान के पास बेईमानी की सिफारिशी चिट्ठी न हो, तो कोई उसे कौड़ी का न पूछे। "

इस तरह आप देख सकते हैं कि परसाई जी की भाषा सरल पर धारदार है। निबंधकार के शब्द-शब्द में व्यंग्य के तेवर हैं। इनकी भाषा में तत्सम शब्दों की भरमार नहीं है। उर्दू, फारसी, और अंग्रेजी शब्दों से इन्हें कोई परहेज नहीं है। उनका हर शब्द व्यंग्य का पुट लिए रहता है।
बोध प्रश्न

- कैसे परमुखापेक्षी विद्यार्थी का भविष्य संदिग्ध होता है ?
- परसाई जी 'शब्द सचेत' लेखक किन अर्थों में हैं?

7.3.5 शैली सौन्दर्य

सच्चे व्यंग्य को परसाई ने 'जीवन की समीक्षा' कहा है। सच्चा व्यंग्य आदमी को सोचने के लिए मजबूर करता है।खुद को आईना दिखाता है। दिल में हलचल पैदा करता है। और जिंदगी में

फैली बुराइयों को दूर करने की हिम्मत देता है। परसाई के निबंधों में भाषा प्रधान शैली का बहुत उपयोग हुआ है। इससे इनकी भाषा शैली कभी सरल, कभी मुहावरेदार, और कभी सूक्तिपरक हो जाती है। उक्ति प्रधान शैली का उदाहरण देखें- हर सत्य के हाथ में झूठ का सर्टिफिकेट है। इनकी शैली की एक विशेषता यह भी है कि लेखक ने अपने निबंधों में कहानियाँ न लिखकर केवल घटनाओं का इशारा भर किया है। वे निबंध के बीच कभी कभी कहानी का एक टुकड़ा डाल देते हैं। 'पगडंडियों का जमाना' निबंध के शुरू में ही लेखक को 'पुरानी कथाएं' याद आ जाती हैं। वे लिखते हैं कि देव और दानव में अब भी तो यही फर्क है –एक की आत्मा अपने पास ही रहती है और दूसरे की उससे दूर।

शैली लेखक के व्यक्तित्व का परिचायक होती है। यह बात हरिशंकर परसाई के लेखन से भी साबित होती है। परसाई अपने हर निबंध में विषय का सिलसिलेवार परिचय, विषय की व्याख्या या उसका लेखा-जोखा नहीं देते बल्कि व्यंग्य के टुकड़े और घटनाओं की झलक देते हुए अपने आप को ही पेश करते चले जाते हैं। आप खुद देख सकते हैं कि परसाई जी की अपनी लेखन-शैली है। उनके निबंध चुस्त, जीवंत, तल्खी भरे, व्यावहारिक और अनुभव की आंच से तपे हैं। इन निबंधों में एक प्रकार का खुरदुरापन है।

'पगडंडियों का जमाना' निबंध में भी यही है। यह निबंध निबंध की सरहद को पार कर दूर दूर की बातें करता है। लेखक समाज में फैली बहुत सी बुराइयों पर टिप्पणी करते हैं। इस निबंध में भी वे जीवन के कई क्षेत्रों में फैली हुई बुराइयों पर गिन-गिनकर जोरदार प्रहार करते हैं। उनका मन मौजी व्यक्तित्व इस निबंध में भी झलकता है। उनकी भाषा-शैली में खास किस्म का अपनापा है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सिर पर नहीं, सामने ही बैठा है।इस निबंध को पढ़कर आपके मनोविकारों का भी अच्छा-खासा व्यायाम हो गया होगा, ऐसा लगता है।

बोध प्रश्न

- परसाई जी की निबंध लेखन शैली से उनके व्यक्तित्व की किन दो विशेषताओं का पता चलता है?
- लेखक को पुरानी कथाएं क्या याद दिलाने की खातिर आ जाती हैं?

7.4 : पाठ सार

हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों में हरिशंकर परसाई का शुमार है। उन्होंने व्यंग्य लेखन में अपना नाम कमाया। इनके प्रतिनिधि निबंधों में से एक 'पगडंडियों का जमाना' है। इस निबंध में शिक्षा के क्षेत्र में फैले उस गलत चलन के बारे में बताया गया है जिसकी वजह से सबकी बहुत बदनामी होती है। अभिभावक अपनी संतान को परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होते देखना चाहते हैं। पर कई बार वे देखते हैं कि बच्चों ने ठीक तरह से पढ़ाई नहीं की और उनका पास होना मुश्किल है। तब कई बार इम्तिहान से पहले पेपर आउट करवाने और परीक्षा के बाद नंबर बढ़वाने के लिए अध्यापकों और परीक्षकों को किसी न किसी तरह मनाया जाता है। यह वैसे तो कानूनन अपराध है। पर यह हमारे समाज में फैली हुई एक ऐसी बुराई है जिस पर लेखक चुटकी

लेते हैं। वे देखते हैं कि लोग जीवन के कई क्षेत्रों में मेहनत मशक्कत करने के बजाय शॉर्ट कट अपनाने के चक्कर में पड़ जाते हैं।ईमानदार दुकानदार, नौकरी की उम्मीद रखने वाली जवान लड़की भी समाज में चले आ रहे भृष्टाचार के शिकार होते हैं। लेखक का उद्देश्य केवल भृष्ट आचरण की इस बढ़ती आदत को उजागर करना नहीं है, वे यह भी कहते हैं कि लोग इस तरह की आदतों को छोड़ दें। बच्चे पढ़ाई करें और तब अच्छे नंबर लाएं। जो विद्यार्थी खुद की मेहनत से कामयाब होते हैं, उनकी आत्मा कभी उनको बुरा-भला नहीं कहती। पर जो ऐसा नहीं करते, वे हमेशा मन ही मन पछताते रहते हैं। आखिर ईमानदारी से बढ़कर कोई रास्ता नहीं। यही तो यह 'मुख्य मार्ग' है जिससे चलकर कोई भी गर्व से सिर उठाकर आगे बढ़ सकता है।

7.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

1. हरिशंकर परसाई हिन्दी में व्यंग्य विधा के खास लेखक हैं और 'पगडंडियों का जमाना' उनका प्रतिनिधि निबंध है। यह निबन्ध आज के इस ज्वलन्त सत्य को उद्घाटित करता है कि सभी लोग किसी-न-किसी तरह 'शॉर्टकट' के चक्कर में हैं।
2. इस निबंध का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में फैले भृष्टाचार को उजागर करना है।
3. समाज में लोग अपने बच्चों के परीक्षा में नंबर बढ़वाने के लिए और उससे पहले पेपर आउट करवाने के लिए गलत रास्ते अख्तियार करते हैं।
4. परसाई जी कहते हैं कि यह जमाना पगडंडियों का है और लोग मुख्य मार्ग की बजाय पगडंडियों (शॉर्ट कट) से चल निकलते हैं। रिश्वत देकर कामयाबी खरीदते हैं।
5. लेखक ने इस निबंध में व्यंग्य का सहारा लेकर अपनी बात कही है। रोजमर्रा की जिंदगी से ऐसे उदाहरण दिए हैं जो आप-बीती कहानी से लगते हैं। अब तो लोग दुविधा में भी नहीं पड़ते, खुले-आम ईमान बेच देते हैं, खरीद लेते हैं।
6. इस बुराई को खोलकर पेश करते वक्त लेखक इस उम्मीद से अपने पाठकों को देखते हैं कि वे इस बुराई से निजात पाने की कोशिश करेंगे। ईमान न तो खुद का बिगाड़ें, और न दूसरे का।
7. स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाले इस भृष्टाचार के चश्मदीद गवाह हैं, वे जब इस निबंध को पढ़ते हैं तो उन पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा, वे जरूर जागरूक होंगे।
8. उनकी भाषा-शैली में खास किस्म का अपनापा है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सिर पर नहीं, सामने ही बैठा है।

7.6 : शब्द संपदा

1. अधरोष्ठ - अधर तथा ओष्ठ क्रमशः नीचे और ऊपर के होंठ
2. परमुखापेक्षी - प्रत्येक बात के लिए दूसरों का मुँह ताकने वाला; दूसरे से सहयोग के लिए लालायित।

3. संदिग्ध	-	शक, सुबहा, जिस पर कोई शक हो
4. दुविधा	-	असमंजस, पशोपेश
5. पगडंडी	-	वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो, इस निबंध में 'शॉर्ट-कट'
6. पुरातत्ववेत्ता	-	प्राचीन संस्कृति तथा सभ्यता से जुड़े हुए तत्वों की जानकारी रखने वाला व्यक्ति; (आर्कियोलॉजिस्ट)।
7. नाबदान	-	गंदे पानी की मोरी या नाली; पनाला; (गटर)

7.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'पगडंडियों का जमाना' निबंध में समाज में फैली किस बुराई की तरफ संकेत किया गया है? छात्रों के जीवन में इसका क्या महत्व है?
2. 'पगडंडियों का जमाना' निबंध की भाषा शैली की विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
3. 'पगडंडियों का जमाना' निबंध का निहितार्थ उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।
4. 'पगडंडियों का जमाना' निबंध की विषय वस्तु पर प्रकाश डालिए।
5.'पगडंडियों का जमाना' किन प्रवृत्तियों का सूचक है और क्यों?

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1. 'इन दिनों मुझे बहुत स्नेही मिलते हैं' इस कथन में 'स्नेही' का अर्थ 'शुभचिंतक' नहीं है तो क्या है और क्यों?
2. आत्मा को 'फोल्डिग कुर्सी' किन अर्थों में कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।
3. 'चार कहानियाँ लिखकर लोग युग-प्रवर्तक की लिस्ट में नाम खोजने लगते हैं'कहकर परसाई किन लोगों की किन आदतों की तरफ इशारा कर रहे हैं और क्यों?
4. "जिन्हें बदबू ज्यादा आती है और जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं, वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहें हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है।" इस कथन के निहितार्थ पर प्रकाश डालिए।

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

क) 'पगडंडियों का जमाना' में 'पगडंडी' का असली मतलब क्या है?

1) आम रास्ता 2) कच्चा रास्ता 3) शॉर्ट कट 4) खतरनाक रास्ता

ख) निबंध में ‘मुख्य द्वार’ से क्या तात्पर्य है?

1) खास रास्ता 2) सही रास्ता 3) मुश्किल भरा रास्ता 4) आसान रास्ता

ग) इस निबंध की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषता है?

1) काव्यात्मकता 2) व्यंग्यात्मकता 3) शुचिता 4) इनमें से कोई नहीं

घ) “रमेश चंद्र के भाई सुरेश की मोटर साइकिल , जिस पर अंग्रेजी में नंबर 2431 लिखा है, बिगड़ गई है। वह आपके मित्र सिन्हा के पास सुधरने गई है। आप उसे सुधरवा दें कि कम-से कम 40 प्रतिशत तो काम देने लगे।“ इसमें ‘2431’ क्या है?

1) मोटर साइकल का नंबर 2) टू फोर थ्री वन 3) सुरेश का रोल नंबर 4) रमेश चंद्र का रोल नंबर

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. अच्छी आत्मा ____________________ की तरह होनी चाहिए।
2. आज का जमाना ______________________________ है।
3. ___________________ लेखक के व्यक्तित्व का परिचायक होती है।
4. सच्चे व्यंग्य को परसाई ने __________________ कहा है।
5. हर सत्य के हाथ में झूठ का __________________ है।

III. सुमेल कीजिए।

अ) फोल्डिंग कुर्सी क) विद्यार्थी

आ) मुख्य मार्ग ख) अच्छी आत्मा

इ) परमुखापेक्षी ग) पगडंडी

ई) शॉर्ट कट घ) सदाचार

7.8 : पठनीय पुस्तकें

1. परसाई रचनावली

2. हरिशंकर परसाई : विश्वनाथ त्रिपाठी

3. तुम्हारा परसाई :कान्ति कुमार जैन

इकाई 8 : विद्यानिवास मिश्र के निबंध 'अस्ति की पुकार – हिमालय' की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

8. 1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ : विद्यानिवास मिश्र के निबंध 'अस्ति की पुकार – हिमालय' की विवेचना

8.3.1विवेच्य निबंध की विषय वस्तु

8.3.2विवेच्य निबंध का प्रयोजन

8.3.3विवेच्य निबंध में व्यक्त वैचारिकता

8.3.4विवेच्य निबंध का भाषा सौष्ठव

8.3.5विवेच्य निबंध का शैली सौंदर्य

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 : प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के ललित निबंधकारों में विद्यानिवास मिश्र का नाम सम्मान के साथ पहली पंक्ति में लिया जाता है। आप भारतीय परंपरा और संस्कृति के चितेरे लेखक हैं। विद्यानिवास जी ने भारतीय संस्कृति व सामाजिक परंपराओं और विसंगतियों को विस्तार से अपने निबंधों में अभिव्यक्त किया है। लेखक यह मानते हैं कि हिमालय भारतीय जीवन का स्रोत है, इसका मनुष्य के चिंतन से गहरा संबंध है। प्रस्तुत इकाई (अस्ति की पुकार - हिमालय) निबंध में लेखक ने भारतीय समाज की सम-सामयिक समस्याओं व मनुष्य की स्वार्थपरता व रूढ़ियों पर कहीं तीखा व्यंग्य, तो कहीं सहज सवालों के माध्यम से व्यक्त किया है। मनुष्य में असहजता, उसका सामाजिक रूढ़ियों के प्रति मोह और नये के प्रति निष्ठा व चिंतन का अभाव हैं। इस निबंध में पारिवारिक तनाव व टूटते हुए परिवारिक संगति की तरफ़ भी संकेत किया गया है।

8.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अन्तर्गत हम विद्यानिवास मिश्र के निबंध का अध्ययन करेंगे जिससे निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी।

- विद्यार्थी इस निबंध का सार अपने शब्दों में समझकर प्रस्तुत कर सकेंगे।
- निबंध के प्रमुख अंशो की व्याख्या प्रस्तुत कर सकेंगे।

- निबंध की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- निबंधकार के व्यक्तित्व व उसकी वैचारिकी को जान सकेंगे।
- निबंध की संरचना-शिल्प यानी भाषा और शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे।

8.3: मूल पाठ : विद्यानिवास मिश्र के निबंध 'अस्ति की पुकार – हिमालय' की विवेचना

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के आग्रही विद्यानिवास मिश्र ललित निबंधकारों के अप्रतिम निबंधकार हैं। सर्वश्रेष्ठ निबंधकार के रूप में विद्यानिवास जी की व्यापक प्रतिष्ठा है। विद्यानिवास जी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, समाज-संस्कृति एवं साहित्य कला की नवीनतम चेतना और तेजस्विता के पुरोधा लेखकों में से एक हैं। वे हिन्दी भाषा के साथ-साथ संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान हैं। साथ ही साहित्य अकादमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य और संस्कृत भाषा सलाहकार मंडल के संयोजक के पद भार का भी निर्वहन सफलतापूर्वक किया है। वे संस्कृत एवं लौकिक साहित्य के विधिवत ज्ञाता रहे। प्रस्तुत निबंध में इसी सांस्कृतिक एवं लोक जीवन की महत्ता को स्थापित कर भारतीय जीवन-शैली की बारीकियों से अवगत कराया है। प्राचीन पारंपरिक मूल्यों की नई प्रतिष्ठापना पर बल दिया है बल्कि रूढ़ियों से मुक्ति और परंपरा की नई चिंतन धारा से जोड़ने का सशक्त कार्य भी किया है।

विद्यानिवास मिश्र का निबंध 'अस्ति की पुकार हिमालय' एक ललित निबंध है। यहाँ हम निबंध पर विचार करने से पूर्व ललित निबंध के अर्थ पर एक नज़र डाल लेते हैं। 'ललित निबंध' निबंध-साहित्य की ही एक विशिष्ट विधा है, जिसमें रचनाकार अपने इंद्रियों द्वारा अनुभूत सभी तत्त्वों की सजीव व्याख्या गद्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। जब हम निबंध से पहले 'ललित' शब्द लगा देते हैं तब उसका तात्पर्य होता है कि ऐसा निबंध जिसमें ललित का गुण विद्यमान हो अथवा जिसमें लालित्य तत्त्व विद्यमान हो, उसे ही हम 'ललित निबंध' कहते हैं। शाब्दिक रूप से विचार करें तो स्पष्ट है कि ललित का अर्थ 'सुंदर' या 'रमणीय' होता है। लेकिन यहाँ प्रश्न यह है कि कौन-सी वस्तु या किस सौंदर्य को हम ललित कहेंगे। इस प्रश्न के उत्तर में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपनी पुस्तक 'लालित्य तत्त्व' में लिखते हैं कि "एक प्राकृतिक सौंदर्य है, दूसरा मानवीय इच्छा-शक्ति का विलास है। दूसरा सौंदर्य प्रथम द्वारा चालित होता है, पर है मनुष्य के अंतरतम की अपार इच्छा-शक्ति को रूप देने का प्रयास। एक केवल अनुभूति देकर विरत हो जाता है, दूसरा अनुभूति से उत्पन्न होकर अनुभूति-परंपरा का निर्माण करता है। भाषा में, मिथक में, धर्म में, काव्य में, मूर्ति में, चित्र में बहुधा अभिव्यक्त मानवीय इच्छा-शक्ति का अनुपम विलास ही वह सौंदर्य है, जिसकी मीमांसा का संकल्प लेकर हम चले हैं। प्रथम सौंदर्य रूप से व्यावृत्त करने के लिए इसे हम लालित्य कहेंगे। लालित्य, अर्थात् प्राकृतिक सौंदर्य से भिन्न किन्तु

उसके समानान्तर चलने वाला मानव रचित सौंदर्य।” कहने का आशय यह है कि हम ललित निबंध में उस सौंदर्य को देखते हैं जो प्रकृति द्वारा अनुप्राणित होकर भी मानव रचित हो।

बोध प्रश्न

- ललित निबंध की विशेषता लिखिए।

8.3.1 विवेच्य निबंध की विषय वस्तु

विद्यानिवास मिश्र जी का यह एक ललित निबंध है जो भावात्मक निबंधों की श्रेणी में आता है। इस निबंध में निबंधकार ने कालिदास रचित 'कुमारसंभव' की पहली पंक्ति "अस्ति उत्तस्यां दिशि देवात्मा हिमालयों नाम नगाधिकराजः" का उल्लेख कर प्रतिपादन किया है। समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक रूढ़ियों और समस्याओं का रेखांकन निबंधकार ने सफलतापूर्वक किया है।

निबंध के शीर्षक में ‘अस्ति’ शब्द (लाक्षणिक अर्थ में) पर बल देते हुए निबंध की रचना कर लेखक ने अपने वैचारिकी को स्पष्ट किया है। विद्यानिवास मिश्र संस्कृति और परंपरा के मध्य सामंजस्य व रूढ़ियों के प्रति अतिसंवेदनशील चिंतन के चितेरे लेखक हैं। जिनके साहित्य में सहज ही यह भाव दिखाई पड़ता है। इसी क्रम में ‘अस्ति की पुकार हिमालय’ निबंध भी कालिदास के ‘कुमारसंभव’ व ‘गीता’ के संदर्भों के माध्यम से भारतीय जीवन-शैली का विवेचन किया है। जिसमें व्यंग्य की स्फूर्त ध्वनि भी है।

संस्कृत भाषा में 'अस्ति' के बिना भी काव्य पूर्ण हो जाता है और उसमें हिन्दी या अंग्रेजी की तरह 'अस्ति' की समानार्थक क्रिया देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। प्रस्तुत निबंध में कालिदास जब अपने ग्रंथ का निर्माण करते हैं तब वे शब्दों को बिखेरते नहीं तथा अपने ग्रंथ का पहला श्लोक लिखने जा रहे हैं और बिना ज़रूरत पूर्ण होने का भाव सिर पर सवार हो गया। इसलिए या तो कालिदास या हिमालय में कुछ न कुछ गड़बड़ है इस दृष्टि से इसकी खोज करनी चाहिए।

कई वर्ष पहले लेखक को स्व. राहुल सांकृत्यायन के साथ रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। वे कहते हैं हिमालय मुझे बुला रहा है, अपना काम समेटिये, अब यहाँ काम नहीं हो सकता। ऐसे नास्तिक आदमी को हिमालय का बुलावा, विश्वास नहीं होता। आख़िर हिमालय देवताओं की आत्मा है तथा श्रीमद्भागवत गीता के अनुसार हिमालय साक्षात् भगवान वासुदेव का विग्रह है। राहुल जी किसी वस्तु के आस्तित्व बोध पर अधिक विश्वास रखते थे, क्योंकि वे हिमालय को भारतीय जीवन-प्रवाह का स्रोत मानते हैं, जिसमें भाषा, संस्कृति, समाज-चेतना ऐसा सभी कुछ शामिल है जिसका समष्टि चैतन्य से संबंध हो। राहुल जी के लिए जीवन भर हिमालय भूत या भविष्य ही नहीं बल्कि वह 'अस्ति' को भी स्वीकारते हैं।

निबंधकार ने कुमारसंभव और हिमालय की कथाएँ पढ़ी हैं और हेमाली राजा की कहानियों से भी अवगत है, किन्तु हिमालय की तरफ़ से कभी उनको बुलावा नहीं आया। शायद इसका कारण यह रहा हो कि शहरों की बढ़ती आबादी और वहाँ व्याप्त अनेक दूषित वातावरण के कारण वह आवाज़ सुनाई नहीं पड़ती। वास्तव में हिमालय की अस्ति की पुकार न तो निबंधकार को सुनाई पड़ती है और न ही उसके पड़ोसियों को। प्रस्तुत निबंध में व्यंग्य के रूप में लेखक आस्तिकता के साथ-साथ कुंडली दिखाने, रत्न धारण करने, मंगलवार को हनुमान जी के यहाँ लड्डू चढ़ाने जाते हैं, देवताओं का दरबार करते हैं, मनौती माँगते हैं, भारतीय संस्कृति की बात करते हैं। लेकिन ये सभी चीज़े केवल छल है। हम देवताओं को, अफ़सर या नेता को देवता मानते हैं। हम देवता को ही नहीं पूजते बल्कि उसके स्थान को भी पूजते हैं। जिस प्रकार नेता या अफ़सर की महिमा उसकी कुर्सी को पाकर है, उसी प्रकार देवता के स्थान की है। हमारी नज़रों में एकनिष्ठ श्रद्धा ही वास्तविक युग-श्रद्धा है। इसी पैमाने से हम देवता को भी नापते हैं। भारत वर्ष की राष्ट्रीय एकता की बात करनी होगी तो नागाधिराज हिमालय का नाम ज़रूर लेना होगा। अब तो हिमालय में भी रस नहीं रहा, क्योंकि उसने हमें धोखा दिया है। हम उसे संरक्षक या प्रहरी मानकर निश्चिंतता पूर्वक सोते रहे और चीनी सेना ने हमारे हरे-भरे भाग पर क़ब्ज़ा कर लिया। हमने हिमालय पर्वत को पड़ोसी मानकर ही यह सब कुछ किया। हमारी सुख की नींद टूट गई और लगा कि एक बहुत बड़ा तिलिस्म टूट गया है। यह तो चीनी सेना की मेहरबानी हुई कि यह आतंक जमाकर पुनः लौट गई। हमने इसे एक बुरा स्वप्न मानकर विस्मित कर दिया और इसके असर को कम करने के लिए कविताएँ भी लिखी। अब तो एक धुँधली-सी याद बाक़ी रह गई है तथा हार-जीत का अंतर भी समाप्त हो गया है। अब हिमालय के साथ विश्वासघात करने का दुःख नहीं रहा।

हम वस्तुतः सिद्धावस्था में पहुँच चुके हैं इसलिए हमें वर्तमान नहीं छू सकता, हमें केवल भूतकाल को पकड़ना है या भविष्य को खींचना है, वर्तमान हमें तनिक भी प्रभावित नहीं करता। इसीलिए हम 'अस्ति' की अटपटी भाषा नहीं समझ पाते। लेखक कहता है हम ख़ुद अपने आप में हिमालय है अर्थात् ऐसे बर्फ़ का घर जहाँ कभी बर्फ़ नहीं पिघलती, जिसमें चीज़ें ज्यों की त्यों पड़ी रह जाती हैं और जैविक व्यापार जहाँ आकर समाप्त हो जाता है। आज परिवारों में वंश के नाम पर असंख्य तनाव है— सास-बहू के बीच, पिता-पुत्र के बीच, भाई-भाई के बीच, देवरानी-जेठानी के बीच आदि आदि। धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष सभी बेमानी हो गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन ठहर-सा गया है, जिसमें कुछ चीज़े अटक गई हैं। लोग कहते हैं कि यह युग अर्थ प्रधान युग है, लेकिन जहाँ तक लेखक का विचार है कि वह युग को शब्द प्रधान की संज्ञा

देता हैं क्योंकि शब्द की महिमा के आगे किसी की महिमा नहीं हैं। क्योंकि यह शब्द की महिमा ही है जो हिंदुस्तान के संपादक हिमालय जैसे अर्थशून्य विषय पर लेख लिखने के लिए आग्रह क्यों करते? हिमालय एक शब्द है, हिंदुस्तान दूसरा शब्द है और हिंदुस्तान का हिमालय परस्त लेखक एक तीसरा, पाठक चौथा। चारों शब्द है, इसलिए एक-दूसरे से जुड़े हुए है। अगर ये अर्थ होते तो इनमें आपसी लगाव होता, टकराव होता, झगड़े होते, कोई टूटता, कोई तोड़ता। परंतु शब्द बड़े मासूम होते हैं, ये एकता में विश्वास करते हैं तथा इनमें कभी भी आपसी तनाव की संभावना नहीं होती।

यदि हिमालय एक विषय के रूप में भूगोल होता तो उसे आसानी से भुलाया जा सकता है, कमरे का मानचित्र हटा देने से इस समस्या का समाधान हो जाता। अगर यह इतिहास होता भी तो प्रगतिशील बनकर इससे मुक्ति मिल जाती और यदि यह चौकीदार होता तो भी निद्रा की गोली से इसके बल की पुकार से छुट्टी मिल जाती। परंतु यह न भूगोल है, न इतिहास है, न भूगोल या इतिहास का प्रहरी, यह तो केवल 'अस्ति' है। हिमालय के अस्ति का स्मरण कालिदास ने कुमारसंभव के बीज के रूप में किया है।

वर्तमान युग में हिमालय और उसकी अस्ति से इतनी तटस्थता आज इसलिए दिखा रही है कि इस अस्ति की पुकार हम तक नहीं पहुँच पा रही है। आज हमें अपने देश व किसी अन्य चीज़ का कोई दर्द नहीं है, क्योंकि आज मानव के मन मस्तिष्क में संवेदनहीनता आ गयी है।
प्रस्तुत पाठ में लेखक ने एक कहानी का हवाला दिया है जब शिव बारात लेकर जाते हैं तब वे खा-पीकर हिमालय की सम्पूर्ण संपदा को समाप्त कर देते हैं और दहेज में पार्वती को बावन हंडा दिया जाता है। यह सुहाग पतिव्रता स्त्रियों ने घमंड वश नहीं भोगा। बल्कि निम्न जाति की ही स्त्रियों ने इसे भोगा, पार्वती ने भी उन्हें मुक्त भाव से दिया। अतः हमारी निःस्व संस्कृति का सुहाग अहम् से परिपूर्ण धनी वर्ग में न होकर उसी अकिंचन वर्ग में सुरक्षित है, जहाँ देश की अस्ति है। हमने स्वयं को अधनंगे, अकिंचन लोगों से अलग मान रखा है, उसी का यह वैरूप्य है कि हिमालय स्याह पड़ा दिखता है। क्या इस विरूप 'अस्ति' की पुकार हमारे अस्तित्व-बोध से रहित व्यक्तित्व को अनावृत कर सकेगी? क्या व्याप्त जाति विषमता हमारी अचेतन अवस्था से पार पा सकेगी और उनकी अस्मिता उन्मुक्त भाव से स्वीकार सकेगी? इसी तरह के भाव-बोध को लेखक ने आधुनिक जीवन में व्याप्त विषमताओं के चित्र बड़ी तत्परता एवं तल्लीनता के साथ अंकित किया है। ये लेखक की उन्मुक्त उड़ान को केवल अवकाश ही प्रदान नहीं करती, अपितु लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सन्निहित मुक्ति को भी स्वर प्रदान करती हैं। इस निबंध के

माध्यम से लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि हिमालय का गहन संबंध भारतीय जीवन-प्रवाह तथा समष्टि चैतन्य से है।

बोध प्रश्न

- निबंध के विषय वस्तु की विवेचना कीजिए।

8.3.2 विवेच्य निबंध का प्रयोजन

विद्यानिवास मिश्र के द्वारा लिखा गया यह निबंध 'कुमारसंभव' के प्रथम श्लोक से शुरू होता है। लेखक ने 'अस्ति' शब्द पर बल देते हुए भारतीय गौरव बोध की गाथा का बखान किया है। 'अस्ति' अर्थात संस्कृत की एक क्रिया है। जिसे लेखक ने लक्षणार्थ रूप में प्रयोग करते हुए वर्तमान संदर्भ में अभिहित किया है। लेखक ने पूर्व भारतीय जीवन-शैली से वर्तमान जीवन-शैली की तुलना करते हुए पारिस्थिकी तंत्र को दिखाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। जैसा कि विद्यानिवास मिश्र भारतीय संस्कृति और मिथकीय संदर्भ के माध्यम से वर्तमान जीवन के प्रभाव को बताने में सबसे सफल लेखक साबित हुए हैं। उनके निबंध संग्रहों में भूत से होते हुए वर्तमान और भविष्य की चिंता की प्रतीति होती है।

बोध प्रश्न

- विद्यानिवास मिश्र का प्रयोजन क्या है ?

8.3. 3 विवेच्य निबंध में व्यक्त वैचारिकता

विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में भारतीय परंपरा, प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक बोध का समन्वय दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत निबंध में भी लेखक ने भारतीय परंपरा में जीवन-शैली पर गहन विचार अभिव्यक्त किया है। निबंध के अंतर्गत मानव की स्वार्थपरक आस्तिकता पर तीखा प्रहार किया है। आज के संदर्भ में सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर प्रहार करते हुए सभ्य मानव समाज की खंडित चातुर्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जैसे— कुण्डली दिखाना, ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए रत्न धारण करना और हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए मंगलवार को मंदिर में लड्डू चढ़ाने जैसे क्रिया-कलापों को निरर्थक माना है। इतना ही नहीं मनुष्य देवताओं का दरबार करता है, मनौती माँगता है, लेकिन यह सब उसका दिखावा व ढोंग मात्र है। यह सभी कार्य वह अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिए स्वार्थवश ही करता है। आधुनिक मानव की यह आस्था उसके लिए स्वार्थ का ही द्योतक है। आधुनिक मानव के इसी स्वार्थपरक व्यवहार को स्पष्ट करते हुए लेखक कहता है "हम देवताओं को अफसर या नेता और अफसर या नेता को देवता मानते हैं। हम थान पूजते हैं, माई का हो, बरम्ह का हो, तेलियामसान का हो, अगियाबीर का हो, लंगोटी वाले का हो, या नंगे का हो। हम देवता नहीं पूजते क्योंकि देवता की महिमा

उसके स्थान को पाकर है, जैसे नेता या अफसर की महिमा उसकी कुर्सी को पाकर है। हम जानते हैं कि अभी कल जिसके सात पुरखों को हमने एक सांस में तारा था, उसी की कुर्सी पर बैठते ही जब आरती उतार रहे हैं तो यह भी हमारे भक्तिभाव का मर्म जानता होगा। पर साथ ही हम दोनों भली-भाँति समझते हैं, यही जनतन्त्र है, ऐसे ही सब चलता है, हमारी नजरों में एकनिष्ठ श्रद्धा कोई मूल्य नहीं रखती, क्षण-क्षण नया-नया रूप धारण करने वाली श्रद्धा ही वास्तविक युगश्रद्धा है।"

विद्यानिवास जी ने सांस्कृतिक मूल्यों पर विचार करते हुए पाश्चात्य संस्कृति का देश में आगमन ने भारतीय संस्कृति की रूपरेखा में परिवर्तन का एक नकारात्मक पक्ष की ओर संकेत किया है। भारतीय मनीषि के युगकर्ता पाश्चात्य संस्कृति के समक्ष भारतीय संस्कृति के प्रति हीनताबोध ने अपनी संस्कृति को तिलांजलि दे देने का पैरोकार बना दिया है। सभी इस संस्कृति को बासी कह कर इससे नाता तोड़ रहे हैं। इसका नतीजा यह निकल रहा है कि मानव अपने मानवीय सरोकारों एवं मूल्यों को भूल रहा है और नैतिकता से परे अनैतिक कार्यों में लिप्त हो रहा है। वास्तव में हिमालय भारतीय जन-जीवन के प्रवाह का स्रोत है, हमारी संस्कृति का प्रतीक है, लेकिन वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में मानव को हिमालय की यह पुकार सुनाई नहीं पड़ रही है। इसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि हम अपनी संस्कृति को भुलाकर पाश्चात्य संस्कृति के समीकरण की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं।

शहरों में व्याप्त दूषित वातावरण पर चिंता व्यक्त करते हुए विद्यानिवास जी कहते हैं कि स्व० राहुल सांकृत्यायन जी को तो हिमालय की पुकार सुनाई देती है लेकिन मुझे और मुझे ही नहीं मेरे आस-पड़ोस के व्यक्तियों को भी यह आवाज़ सुनाई नहीं देती। इस प्रकार यह प्रसंग ध्वनि प्रदूषण के प्रश्न को जोड़ता है। इसलिए लेखक कहता है कि "मुझे यह बुलावा नहीं मिलता या शायद मिलता है, मुझे सुनाई नहीं पड़ती, सुनाई न पड़े इसके लिए शहरों में काफी सरंजाम है, पान की दुकानों पर अहर्निश बजते रेडियो, यान्त्रिक वाहनों की चिल्ल-पों, जुलूसों की अर्थहीन नारेबाजी, ध्वनि विस्तार यंत्रों के द्वारा प्रसारित हरिनाम संकीर्तन और संगीत का बुखार उतारने वाली फिल्मी धुनों का वृंदगान और बच्चों के स्कूल से उठती हुई मछली हट्टे का शोरगुल।" हिमालय की आवाज़ शहरों में व्याप्त ध्वनि प्रदूषण के कारण सुनाई नहीं पड़ती। विद्यानिवास जी ने प्रस्तुत निबंध के माध्यम से विकराल रूप धारण कर रहे 'ध्वनि प्रदूषण' की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

विद्यानिवास जी ने आज टूटते पारिवारिक सम्बन्धों व तनाव ग्रस्त सामाजिक वातावरण पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने विचारों को साझा किया है। वर्षों पहले भारतीय परिवारों में, जो परस्पर आत्मीयता, स्नेह, भाई-चारे का भाव था। वह अब बिल्कुल समाप्ति के कगार पर है।

वर्तमान समय में परिवार खंडित हो रहे है। एकल परिवार के ढाँचे को स्वीकार कर व्यक्ति अकेले ही जीवन व्यतीत करना चाहता है। यह समस्या आने वाले समय में और भी भयावह हो सकती है। सामाजिक वातावरण में वैमनष्य का भाव इतना अधिक चिंताजनक हो चुका है कि अब भाई-चारे का भाव नहीं रहा। यह समस्या देश में अनेकता में एकता की भावना को खण्डित कर रही है। लेखक ने इस चिंतन को प्रस्तुत निबंध के इस उद्धरण से समझा जा सकता है— "कहाँ का कुल, कहाँ का कर्ता? कुल के नाम पर अगणित तनाव है, सास-बहू के बीच देवरानी-जेठानी के बीच और हर तनाव के बाद एक टूटन है।" लेखक ने इस समस्या पर करारा व्यंग्य करते हुए इसका मूल कारण अर्थ (धन) को माना है। वह अर्थ के महत्व को नकारते हुए इसे विवाद का केन्द्र बिन्दु के रूप में स्वीकार करते हैं। लेखक ने मानवीय जीवन के यथार्थ को उद्‌घाटित कर दिया है और इस समस्या पर कटु-व्यंग्य भी किया है।

विद्यानिवास जी ने राष्ट्रीय एकता में हिमालय की भूमिका के महत्व को स्थापित करते हुए वर्तमान परिस्थितियों का रेखांकन किया है। जब-जब राष्ट्रीय एकता की बात उठेगी, तब-तब हिमालय का नाम ज़रूर आएगा। क्योंकि यह सीमा पर हमारी रक्षा भी कर रहा है। हमें हिमालय पर पूर्ण विश्वास था कि इसे शत्रु कभी भी नहीं लांघ सकता। लेकिन इसने भी हमारे साथ विश्वासघात किया। निबंधकार लिखता है “तो हिमालय में भी रस नहीं रहा। फिर उसने इतना धोखा दिया, हम उसके आसरे सोते रहे और लाल चींटियों का दल रेंगकर आया, हमारे सीमान्त का श्यामल प्रसार चट कर गया। आखिर उसे हमने पासबाँ मानकर ही तो इतना सम्मान दिया था, हमने उसे भाल कहा, अपनी क़िस्मत का लेखा-जोखा उसमें अंकित कराया और उसने कुछ नहीं किया, हमारी सुख नींद नष्ट हो गयी और लगा कि एक बड़ा तिलिस्म टूट गया।“ हिमालय को भारत का सजग प्रहरी माना था लेकिन 1962 के चीनी आक्रमण ने और वर्तमान में हिमालय के सीमावर्ती इलाक़ो में चीनियों की घुसपैठ भारतीयों का सारा भ्रम तोड़ रही है। हिमालय चीनी सेना से भारतीय क्षेत्र की रक्षा नहीं कर पाया। विद्यानिवास जी ने हिमालय से खिन्न होकर उसे विश्वासघाती कारक की संज्ञा दे दी।

बोध प्रश्न

- संस्कृति के संबंध में लेखक के क्या विचार है ?

8.3.4 विवेच्य निबंध का भाषा सौष्ठव

यह एक ललित निबंध है। इसलिए लेखक की अपनी भाषा अत्यंत सजग है। चूँकि यह निबंध लेखक ने आत्मपरक शैली में लिखा है और लेखक की आत्मीयता, संवेदनशीलता तथा जनमानस के प्रति गहरा लगाव व्यक्त किया है। इसलिए भाषा भी उसी के अनुकूल भावप्रवण, मर्मस्पर्शी और उदात्त है। जहाँ वैचारिक पक्ष अधिक उभरा है, वहाँ भी भाषा में सरसता बनी

रही है। लेखक के बात कहने का ढंग जहाँ निजता लिए हुए है, वहीं उसमें आत्मीयता का स्पर्श भी झलकता है, जो सीधे पाठक के हृदय को छूता है। लेखक के हृदय की पुकार और हिमालय के प्रति आस्था में शब्द सौंदर्य की महत्ता को इन पंक्तियों में देखा जा सकता है— “हिमालय में भी रस नहीं रहा। फिर उसने इतना धोखा दिया, हम उसके आसरे सोते रहे और लाल चींटियों का दल रेंगकर आया, हमारे सीमान्त का श्यामल प्रसार चट कर गया। आखिर उसे हमने पासबाँ मानकर ही तो इतना सम्मान दिया था, हमने उसे भाल कहा, अपनी क़िस्मत का लेखा-जोखा उसमें अंकित कराया।”

विद्यानिवास जी की निबंध की भाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि भाव और विचार दोनों ही स्तरों पर भाषा रागात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करती है। उनके व्यंग्य की भाषा इतनी सटीक और साधारण होते हुए पाठक के मस्तिष्क पर गहरा छाप छोड़ती है। इन पंक्तियों से द्रष्टव्य है— "हम देवताओं को अफसर या नेता और अफसर या नेता को देवता मानते हैं।... हम देवता नहीं पूजते क्योंकि देवता की महिमा उसके स्थान को पाकर है, जैसे नेता या अफसर की महिमा उसकी कुर्सी को पाकर है।“

विद्यानिवास जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी भाषा में लोक जीवन की आम बोलचाल की भाषा का भी रूप उनके निबंधों में देखने को मिलता है। जिसे इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है— “हम थान पूजते हैं, माई का हो बरम्ह का हो, तेलियामसान का हो, अगियाबीर का हो, लंगोटी वाले का हो, या नंगे का हो।“

इस निबंध की भाषा यद्यपि तत्सम प्रधान है, लेकिन आवश्यकतानुसार इसमें तद्भव, देशज और उर्दू-फ़ारसी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए निबंधकार ने हिन्दी और संस्कृत काव्य-ग्रंथों से उद्धरण भी देते हैं। वैसे तो उनकी भाषा सहज और सरस है, लेकिन कहीं-कहीं विचारों की जटिलता के कारण क्लिष्ट भी दिखाई पड़ती है। जैसे— निम्न वाक्यों में देखा जा सकता है: ‘आखिर हिमालय देवात्मा है।‘, ‘सुनाई न पड़े इसके लिए शहरों में काफी सरंजाम है।‘

बोध प्रश्न

- विद्यानिवास मिश्र के निबंधों की भाषा की क्या विशेषता है?

8.3.5. विवेच्य निबंध का शैली सौंदर्य

प्रस्तुत निबंध में विद्यानिवास जी ने एक तरफ़ भावात्मक शैली के माध्यम से जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा का भाव प्रकट किया है। तो वहीं दूसरी तरफ़ गवेषणात्मक शैली के अंतर्गत भारतीय जीवन-शैली के प्रति चिंता व मानवीय मूल्यों के प्रति अपार श्रद्धा, चिंतन व मनन को

अग्रसारित किया है। ललित निबंध की शैली का अपनापन और उसका सौंदर्य इस निबंध में भलीभाँति देखा जा सकता है। इनके निबंध में भावना की एकरूपता दिखाई देती है, साथ ही निबंध के दौरान विचार उठते हुए भी दिखाई देते हैं। वे अपनी बात को प्रभावशाली, आत्मीय और भावप्रवण रूप में प्रस्तुत करते हैं, यद्यपि निबंध पढ़ते हुए उनके विस्तृत अध्ययन और ज्ञान का बार-बार परिचय मिलता है। विशेष रूप से उनके निबधों में आने वाले उद्धरणों से इसका संकेत मिलता है लेकिन यह सब उनके यहाँ अत्यंत सहज रूप में दिखाई देता है। उनमें बनावट या विद्वता प्रदर्शित करने का भाव नहीं है। वस्तुतः उनके निबंध हमारे विचारों को उतना उद्वेलित नहीं करते जितना हमारे हृदय को। वे हमें एक ख़ास तरह के लालित्य में डूबो देते हैं। यही उनकी शैली की विशेषता है।

बोध प्रश्न

- इस निबंध में किस शैली का प्रयोग किया गया है ?

8.4 : पाठ सार

विद्यानिवास मिश्र जी ने निबंध में 'अस्ति' शब्द की व्याख्या की हैं। निबंध के प्रारंभ में लेखक ने 'अस्ति' शब्द पर गंभीर रूप से विचार करते हुए और उसे वर्तमान का द्योतक मानते हुए अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। उन्होंने राहुल जी और कालीदास के बहाने अनेक संदर्भों को भारतीय जीवन-शैली और सामाजिक चेतना को उद्घाटित किया है। निबंधकार ने कथाओं, लोक कथाओं व साहित्य के माध्यम से अनेक विषय पर अपना विचार व्यक्त किया है। जो हिमालय राहुल को बुला रहा है और जो कालीदास के कुमारसंभव में निहित है। उस हिमालय का हमारे वर्तमान से क्या संदर्भ है। लेखकानुसार इसकी सही व्याख्या ही अस्ति की पुकार हिमालय है। अपने मत की पुष्टि के लिए निबंध में लिखा है— "आखिर हिमालय देवात्मा है गीता के अनुसार साक्षात भगनान वासुदेव का विग्रह है। उस हिमालय को बुलावा भेजना ही था तो पहले राहुल जी को ही भेजना था पर नहीं। शायद हिमालय को अपने देवात्मा से अधिक अस्ति पर श्रद्धा रखने वाले का ख्याल है। राहुल जी इस अस्ति पर विश्वास रखते थे क्योंकि वो हिमालय को भारतीय जीवन प्रवाह का स्रोत मानते हैं।" लेखक में आज के भारतीय समाज की परिस्थितियों के प्रति विशेष आग्रह का पुट दिखाई पड़ता है। विद्यानिवास जी भारतीय संस्कृति व परंपरा के प्रति निष्ठा के लेखक होने के साथ-साथ उनके कवि व्यक्तित्व की भी छाया प्रतिबिंबित होती हुई दिखाई पड़ती है। विद्यानिवास जी प्रस्तुत निबंध 'अस्ति की पुकार हिमालय' में सामाजिक प्रहरी के द्योतक दिखाई पड़ते हैं। निबंध की कसौटी ही है लेखक के वैचारिक व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत निबंध का सार संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

8.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ के अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निष्कर्ष के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. प्रस्तुत निबंध में 'अस्ति' शब्द के लाक्षणिक प्रयोग के द्वारा आज के भारतीय समाज की परिस्थितियों का प्रत्यक्ष दर्शन।
2. वर्तमान जीवन-शैली का बोध।
3. सामाजिक रूढ़ियों के प्रति नकार व नवीन मानवीय मूल्य बोध की स्थापना पर बल।
4. लेखक के व्यक्तित्व और उसके विचार से परिचय।
5. ललित निबंध की भाषा-शैली का बोध।

8.6 : शब्द संपदा

1. अस्ति = वर्तमानता, विद्यमानता, भाव, सत्ता
2. विचित्र = अजीब, अनोखा
3. अपार्थ = बिना उद्देश्य, अर्थहीन, निरर्थक
4. साक्षात् = सामने
5. चैतन्य = जो सोचने-समझने की स्थिति में हो, होशियार
6. प्रतिकृति = तस्वीर, चित्र, प्रतिबिंब, छाया
7. एकनिष्ठ = जिसकी निष्ठा एक में हो, जो एक ही से सरोकार रखे
8. अच्छत = बिना टूटा हुआ चावल जो मंगल द्रव्यों में गिना जाता है और देवताओं को चढ़ाया जाता है
9. उद्धरण = लेख या वाक्य का उदधृत अंश
10. सीमान्त = वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो, सरहद
11. तिलिस्म = जादू, करामात, चमत्कार
12. सिद्धावस्था= अब कोई स्वप्न नहीं, छुटकारा
13. विन्ध्य = एक प्रसिद्ध पर्वत
14. सामंजस्य = वैषम्य या विरोध आदि का अभाव, मेल
15. असंपृक्त = जो किसी के संपर्क में हो, तटस्थ
16. दारुण = कठिन, विकट, दुःसह

17. उदात्त = श्रेष्ठ, बड़ा

18. सिसृक्षा = रचने या बनाने की इच्छा

19. अंतरतम = आत्मीय, निकटतम

8.7: परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए –

1. ललित निबंध किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए।
3. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध में 'अस्ति' शब्द पर प्रकाश डालिए।
4. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध पर अपना मंतव्य स्पष्ट कीजिए।

खंड - (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए –

1. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध का सार संक्षेप में लिखें।
2. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
3. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध के आधार पर वर्तमान बोध का आशय स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

(1) 'अस्ति की पुकार हिमालय' किस विधा की रचना है

(क) संस्मरण (ख) कहानी (ग) निबंध (घ) रेखाचित्र

(2) लेखक ने निबंध में किस साहित्यकार का उल्लेख किया है।

(क) अज्ञेय (ख) मुक्तिबोध (ग) जैनेंद्र कुमार (घ) राहुल सांकृत्यायन

(3) निबंध में कालिदास के किस रचना का उल्लेख है।

(क) अभिज्ञान शाकुंतलम (ख) कुमारसंभवम् (ग) मेघदूत (घ) रघुवंशम

(4) लेखक ने पाठ के आरंभ में किस भाषा के श्लोक का उद्धरण प्रस्तुत किया है

(क) पालि (ख) प्राकृत (ग) संस्कृत (घ) हिन्दी

(5) निबंध के आधार पर अस्ति शब्द का अर्थ है

(क) वर्तमान (ख) है (ग) प्रकृति (घ) आज

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. संस्कृत भाषा में वैसे अस्ति क्रिया के बिना .... पूरा हो जाता है।
2. कुमारसम्भव .... की रचना है।
3. लेखक को साहित्यकार ...... के साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ था।
4. लेखक ने .... राजा की कहानी का उल्लेख किया है।
5. कुमारसम्भव .... भाषा में लिखा गया है।

III. सुमेलित कीजिए-

(i) शैली	(क) निबंध
(ii) अस्ति की पुकार हिमालय	(ख) 1962
(iii) चीनी आक्रमण	(ग) कालिदास
(iv) विद्यानिवास मिश्र	(घ) गवेषणात्मक
(v) मेघदूत	(ङ) निबंधकार

8.8 : पठनीय पुस्तकें

1. निबंध निकष, डॉ. सिद्धार्थ श्रीवास्तव
2. हिन्दी निबंध लेखन, प्रो. विराज एम. ए.
3. साहित्यिक निबंध, डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. निबंध साहित्य, जनार्दन स्वरूप अग्रवाल
5. ललित निबंध : संवेदना और शिल्प, डॉ. शैलेन्द्र नाथ मिश्र

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A – HINDI(Hons)

I – SEMESTER EXAMINATION

TITLE & PAPER CODE : 'हिन्दी निबंध' (BNHN202DET)

TIME: 2 HOURS TOTAL MARKS: 35

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्न लिखित विकल्पों में सही विकल्प चुनिए। 5X1=5

i. इनमें से एक हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध संग्रह नहीं है।

(A) अशोक के फूल (B) कुटज (C) श्रद्धा-भक्ति (D) कल्पलता

ii. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी का निबंध कौनसा है ?

(A) अतीत स्मृति (B) उत्सव (C) श्रदांजलि के दो फूल (D) उपरोक्त सभी

iii. अशोक कल्प में कितने प्रकार के अशोक के फूल का वर्णन है?

(A) 3 (B) 2 (C) 5 (D) 4

iv. दिनकर जी की प्रथम काव्य रचना कौनसी थी ?

(A) उर्वशी (B) वीरबाला (C) हुंकार (D) रेणुका

v. निबंध के आधार पर अस्ति शब्द का अर्थ है

(A) वर्तमान (B) है (C) प्रकृति (D) आज

भाग – 2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर शब्दों में देना आनिवार्य है। 200 5X4 =20

2. रामचंद्र शुक्ल के निबंध कला पर प्रकाश डालिए।
3. भारतेंदु युग के निबंध पर प्रकाश डालिए।
4. 'अशोक के फूल' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'जलवायु के कारण बदलता जनजीवन' प्रस्तुत निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
6. आत्मा को 'फोल्डिग कुर्सी' किन अर्थों में कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

7. ‘अस्ति की पुकार हिमालय’ निबंध का सार संक्षेप में लिखें।

भाग- 3

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है । **1X10=10**

8. कविता के संबंध में शुक्ल जी के विचार क्या हैं? चिंतामणि के 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर इसका संक्षेप में विवेचन कीजिए?

9. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध ‘अशोक के फूल’ का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।